घाघ और भड्डरी

सम्पादक
रामनरेश त्रिपाठी

उत्तम खेती मध्यम बान ।
निखिद चाकरी भीख निदान ॥
—घाघ

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू. पी.
इलाहाबाद
१९४९

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यु० प्रा०,
इलाहाबाद

दूसरा संस्करण
~~मूल्य [illegible]~~

मुद्रक
जाब प्रिन्टर्स
इलाहाबाद

सूची

भूमिका

भारतवर्ष की मुख्य जीविका खेती है। वैदिक काल से इस देश में खेती होने के प्रमाण मिलते हैं। इस देश में इतना अन्न और दूध होता था कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन प्रातःकाल अग्नि और घी से अग्निहोत्र करके भी अन्न और घी को चुका नहीं पाता था। लोग खूब खाते थे और अतिथियों को खिलाते थे। न कोई भीख माँगता था, और न कोई चोरी करता था। पशुओं के लिये लम्बे-चौड़े जंगल छूटे हुए थे। मनुष्यों की प्रवृत्ति सात्विक थी। इससे प्रकृति के सब अंग अनुकुल थे। ठीक समय पर वृष्टि होती थी; वृक्षों में फल आते थे और पृथ्वी अन्न से हरी-भरी रहती थी। अब सभी बातें अस्त-व्यस्त हो गई हैं। धन-धान्य की कमी ही से मनुष्यों में चोरी, जारी, छल-प्रपञ्च आदि दुर्गुण बढ़ गये हैं। ठीक समय पर न वृष्टि होती है; न अन्न उपजते हैं और न फल आते हैं। पृथ्वी की उर्वरा-शक्ति भी क्षीण हो गई है। अतएव इस सामूहिक पतन को रोकने के लिये खेती की क्रिया में फिर सुधार करना आवश्यक हो गया है।

पराशर कहते हैं;—

अवस्त्रत्वं निरन्नत्वं कृषितोनैव जायते।
अनातिथ्यश्चदुःखित्वं दुर्मनो न कदाचन॥

'खेती करने वाले को वस्त्र और अन्न का कष्ट नहीं होता। अतिथि सेवा में असमर्थता तथा अन्य दुःखों से उसके मन को कभी खेद नहीं पहुँचता।'

सुवर्णरौप्यमाणिक्यवसनैरपिपूरिताः।
तथापि प्रार्थयन्त्येव कृषकान् भक्ततृष्णया॥

'सोना, चाँदी, माणिक्य और वस्त्र आदि से सम्पन्न पुरुषों को भी भोज्य पदार्थ की इच्छा से किसान से प्रार्थना करनी ही पड़ती है।

अन्नं प्राणो बलञ्चान्नमन्नंसर्वार्थसाधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे चान्नोपजीविनः॥

'अन्न ही प्राण और बल है, और अन्न ही सब कामों का सिद्ध करने वाला है। देवता, असुर और मनुष्य, सभी अन्न से जीते हैं।'

अन्नं तु धान्यसंभूतं धान्यं कृष्या विना न च।
तस्मात्सर्वम्परित्यज्य कृषिं यत्नेन कारयेत्॥

'भोजन अन्न से बनता है; अन्न खेती बिना उत्पन्न नहीं होता; अतएव अन्य काम छोड़कर पहले यत्न से खेती करनी चाहिये।'

इस प्रकार पराशर मुनि ने खेती की महिमा कही है। आज भी संसार के सब धंधे अन्न ही के लिये हैं। एक जाति दूसरी जाति पर शासन कर रही है; रेल दौड़ रही हैं; मोटर चल रही है; हवाई जहाज उड़ रहे हैं; खानें खादी जा रही हैं; सभायें हो रही हैं; नाटक और सिनेमा दिखलाये जा रहे हैं; विद्यार्थी पढ़ रहे हैं; समाचार-पत्र निकल रहे हैं; सेना से क़वायद कराई जा रही है; डाकखानों से चिट्ठियाँ बँट रही हैं; चोर चोरी कर रहा है; राजा दंड दे रहा है; इत्यादि ये सब काम देखने में भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं; पर गौर से देखने पर इन सब के मूल में अन्न ही दिखाई पड़ेगा। पेट नाम का ऐसा अद्भुत यंत्र मनुष्य के शरीर में लगा हुआ है, जो मनुष्य को तरह-तरह के स्वांग रचने को विवश करता है। या यों कहना चाहिये कि पेट ही की प्रेरणा से मनुष्य का मस्तिष्क इतना विकसित हुआ है। आजकल तो मनुष्य का दिमाग़ पेट ही को सिर पर लिये हुए दुनिया में दौड़ लगा रहा है। अतएव आदमी को सब से पहले पेट का प्रबन्ध करना चाहिये। इसी के लिये संसार की सारी चहल-पहल है। भोजन-वस्त्र की प्राप्ति खेती के बिना असंभव है। यह इतनी स्पष्ट बात है कि इसके लिये ऋषि-मुनियों की साक्षी की जरूरत नहीं है।

हिन्दुओं में खेती का सिलसिला आदिमकाल से है। इससे खेती सम्बन्धी उनके अनुभव भी बहुत पुराने हैं। अपने अनुभवों को उन्होंने छोटे-छोटे छंदों में बंद करके कंठ-कंठ में रख छोड़ा है। यह धन किसानों को हजारों वर्षों से, पीढ़ी दर पीढ़ी, विरासत की तरह मिलता चला आ रहा है। इन छंदों की संख्या भारत की सब भाषाओं को मिलाकर लाखों होंगी; पर इनका पुस्तकाकार संग्रह कहीं उपलब्ध नहीं है। पूर्व काल में किसी ने संग्रह किया था, या नहीं, यह भी अभी तक लापता है।

मैंने सन् १९२६ से १९२९ तक भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भ्रमण करके ग्रामगीतों का संग्रह किया था। उस समय मुझे खेती सम्बंधी बहुत सी कहावतें भी मिली थीं। यद्यपि काश्मीर, पंजाब, राजपूताना, काठियावाड़, गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बिहार, मध्यप्रदेश और अन्य प्रान्त की कहावतें उनकी भिन्न-भिन्न भाषाओं या बोलियों में अलग-अलग हैं; पर उनमें अनुभव प्रायः एक ही प्रकार का मिलता है। कितने बड़े खेत में कितना अन्न बोना चाहिये? यह तौल भी प्रायः समान है और खेती के औजार किस आकार के होने चाहिये? यह माप भी प्रायः एक है। इससे मालूम होता है कि ज्ञान का मूल सब का एक है; केवल भाषा या बोली का जामा अलग-अलग है।

मुझे वाचस्पति कोष में पराशर के कुछ श्लोक मिले हैं। उनमें से कुछ मैं यहाँ उद्धृत करता हूँ:—

ईषा युगोहलस्थाणुर्निर्योलस्तस्यपाशिका।
अडडचल्लश्चशैलश्च पद्यनीचहलाष्टकम्॥ १॥
पञ्चहस्ताभवेदीषास्थाणुःपञ्चवितस्तिकः।
सार्द्ध हस्तस्तुनिर्योलोयुगःकर्णसमानकः॥ २॥
निर्योलपाशिका चैव अडडचल्लस्तथैव च।
द्वादशांगुलमानो हि शैलोरत्निप्रमाणकः॥ ३॥

साद्धं द्वादश मुष्टिर्वा कार्य्या व नवमुष्टिका ।
दृढ़ा पद्यनिका ज्ञेया लौहाग्रावंशसंभवा ॥ ४ ॥
आवन्धो मण्डलाकारस्स्मृतपञ्चदशांगुलः ।
प्रोक्तं हस्त चतुष्कं च रज्जुः पञ्चकरान्विता ॥ ५ ॥
पञ्चांगुलाधिकोहस्तो वा फालकास्मृता ।
अर्कस्यपत्रसदृशी पाशिका च नवांगुला ॥ ६ ॥

ईषा (हरीस), जुवा, हल-स्थाणु (कुढ़), निर्योल (फार), पाशिका (दावी), अड्डचल्ल (पाचर), शइल और पच्चनी ये आठ हल के अंग हैं ॥ १ ॥ पाँच हाथ की हरीस, ढ़ाई हाथ का कुढ़, डेढ़ हाथ का फार और बैल के कान बराबर जुवा होना चाहिये ॥ २ ॥ फार, दावी, पाचर ये तीनों बारह-बारह अंगुल के हों और शइल हाथ भर का होना चाहिये ॥ ३ ॥ साढ़े बारह मूठो का या नौ मूठी का आगे लोहा लगा हुआ पुष्ट बाँस का पाचर होना चाहिये ॥ ४ ॥ जुवा के बीच में गोलाकार पंद्रह अंगुल का आबन्ध होता है। चार हाथ का जुवा और पाँच हाथ का नाधा होता है ॥ ५ ॥ एक हाथ पाँच अंगुल का वा एक हाथ का फार होता है। और मदार के पत्ते के समान नौ अंगुल की दाबी होती है ॥ ६ ॥

एकविंशति शल्यस्तुविद्धकःपरिकीर्त्तितः ।
नवहस्ता तु मदिका प्रशस्ता कृषिकर्मणि ॥ ७ ॥
इयं हि हल सामग्री पराशरमुनेर्मता ।
सुदृढ़ाकर्षकैः कार्या शुभदा कृषिकर्मणि ॥ ८ ॥
चत्वारिंशतथाचाष्टावंगुलानिहलस्मृतः ।
अथायामोंगुलेर्भाव्योहलीशावेधतश्चयः ॥ ९ ॥
षोड़शैवतुतस्याधः षड्विंशतिरथोपरि ।
वेधस्तथा च कर्तव्यः प्रमाणेन षडंगुलः ॥ १० ॥

इक्कीस काँटों से युक्त बिद्धक होता है (यह जोते हुए खेतों का तृण निकालने के लिये पूर्व देश में प्रचलित है)। नौ हाथ का हेंगा

(सिरावन) खेती के काम में अच्छा होता है ॥ ७ ॥ पराशर मुनि के मत से यही हल की सामग्री है। जिस किसान के पास यह सामग्री रहती है, उसका कल्याण होता है ॥ ८ ॥ अड़तालीस अंगुल का हल (कुढ़) होता है। उस अड़तालीस में हरीस के छेद के नीचे सोलह अंगुल और छेद के ऊपर छब्बीस अंगुल रहे, और छः अंगुल का छेद हो, जिसमें हरीस रहती है ॥ ६, १० ॥

प्राञ्जला सप्तहस्ता तु हलीशाविदुषांमता।
तस्यावेधस्सवर्णायाः कार्यो नववितस्तिभिः ॥ ११ ॥

सात हाथ की हरीस विद्वानो की सम्मति है। और उसका छेद नौ बीते पर कराना चाहिये ॥ ११ ॥

चतुर्हस्त युगं कार्यं स्कन्धस्थानेऽर्द्ध चन्द्रवत्।
मेष शृङ्ग कदंबस्य सालधवद्रुमस्य च ॥ १२ ॥

जुआ चार हाथ का होना चाहिये। कन्धे के ऊपर अर्द्ध चन्द्राकार बनवाना चाहिये। वह भेंड़े के सींग का, कदम्ब, साल या धव की लकड़ी का होना चाहिये ॥ १२ ॥

प्रतोदोविषमग्रंथिर्वैणवश्च चतुःकरः।
तदग्रे तु प्रकर्त्तव्या जवाकारा तु लोहवत् ॥ १३ ॥

विषम (ताक) गाँठों का, चार हाथ लम्बा, बाँस का, पैना होना चाहिये। उसके सिरे पर लोहे के समान जवाकार बना दे ॥ १३ ॥

गाँवों में जाकर हल की सामग्री देखिये तो पराशर मुनि के मत से ठीक मिलती-जुलती हुई मिलेगी। इससे मालूम होता है कि खेती की परम्परा में पराशर ही की आज्ञा आज भी चल रही है। पराशर कहते हैं:—

मृत्सुवर्णसमा माघे पौषे रजतसन्निभा।
चैत्रे ताम्र समाख्याताधान्यतुल्या च माधवे ॥

'माघ में जोतने से भूमि सोने के बराबर; पौष में जोतने से चाँदी

के बराबर, चैत्र में ताँबा, और बैसाख में अन्न के बराबर फलप्रद है।'

इससे मालूम होता है कि पराशर के समय में माघ में फसल कट जाती थी। अर्थात् आजकल का चैत्र का मौसम पराशर के समय में माघ में आ जाता था। ज्योतिषियों का कथन है कि पृथ्वी की गति के कारण ऋतु-काल आगे सरकता जा रहा है। कोई समय ऐसा भी था जब अगहन में बसन्त आ जाता था। जैसे गीता में भगवान् ने अपने लिये कहा है:—

मासानां मार्गशीर्षोहं ऋतूना कुसुमाकारः।

'महीनों में मैं अगहन हूँ, और ऋतुओं में बसन्त'।

यदि अगहन में बसन्त न पड़े तो यह कथन सत्य ही नहीं हो सकता। इससे स्पष्ट है कि भगवान् श्रीकृष्ण के समय में अगहन में बसन्त आ जाता था। पराशर के उपर्युक्त श्लोक से भी उसका समर्थन होता है। अगहन-पौष में, आजकल की तरह उन दिनों के बसन्त में, फसल कट जाती रही होगी। तभी तो पराशर माघ में खेत जोतने की सम्मति देते हैं।

पराशर का एक श्लोक और भी है:—

वैशाखे वपनं श्रेष्ठं ज्येष्ठे तु मध्यमं स्मृतम्।

बैशाख में बीज बोना श्रेष्ठ है और जेठ में मध्यम है।'

इससे भी यही प्रमाणित होता है कि पराशर का बैशाख आजकल के आषाढ़ में पड़ता है।

वर्षा के सम्बन्ध में किसानों का अनुभव बड़े ही काम का है। उनका प्रकृति-निरीक्षण अद्भुत है। गिरगिट, बनमुर्गी, साँप, गौरैया मेढक, चींटी, बकरी आदि जीवों की गति-विधि तथा हवा का रुख और आकाश का रंग देखकर वे वर्षा का अनुमान करते हैं और वह सत्य होता है। सबसे विलक्षण बात उनके इस सिद्धान्त में है, जो वे पौष और माघ का वातावरण देखकर सावन और भादों की वृष्टि का अनुमान करते हैं। उनके मत से पौष और माघ वर्षा के गर्भाधान का

समय है। इन दो महीनों में हवा का रुख और बादल और बिजली देखकर वे बता सकते हैं कि सावन और भादों में कब और कितनी वर्षा होगी। जेठ वर्षा के गर्भस्राव का समय है। वह महीना यदि बिना बरसे बीत गया तो सावन भादों में अच्छी वर्षा की आशा की जाती है। किसानों के मत से वर्षा का गर्भ १९६ दिन में पकता है। क्या ही अच्छा होता कि किसानों के इस वर्षा-ज्ञान की जाँच बड़ी तत्परता से की जाती और भारत-सरकार इसके लिये अलग एक विभाग खोलती और मुख्य कर पौष और माघ महीनों के वातावरण का लेखा लिख रखा जाता। दो चार वर्षों के लगातार तजरबे से एक सत्य या झूठ प्रमाणित होकर रहता।

नक्षत्रों, राशियों और दिनों के सम्बन्ध में भी किसानों में बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं। इनमें से कितनी ही सच ठहरती हैं। जैसे—

सूकरवारी बादरी, रहे सनीचर छाय।
डंक कहै सुनु भड्डरी, बिन बरसे ना जाय॥

मैंने कभी इसे मिथ्या होते नहीं पाया।

मंगलवारी होय दिवारी। हँसैं किसान रोवैं बैपारी॥

सं १९८७ में मङ्गल को दिवाली पड़ी थी। इस साल अन्न बहुत सस्ता है। किसान खाने-पीने से खुशहाल हैं। व्यापारियों को घाटा लग रहा है। वे सच-मुच रो रहे हैं। हजारों वर्षों में न जाने कितने बार मङ्गल को दिवाली पड़ी होगी और किसान हँसे होंगे और व्यापारी रोये होंगे; अनुभव पर अनुभव हुए होंगे; तब यह कहावत बनी होगी।

पृथ्वी के वायुमण्डल पर सूर्य-चन्द्रमा की तरह नक्षत्रों और राशियों का भी प्रभाव पड़ता है। इस बात की जानकारी किसानों को भी है। उनकी कहावतों में इसका उल्लेख स्पष्ट मिलता है। पौष और माघ में जो वृष्टि का गर्भाधान होता है, उसके लक्षण कहावतों के अनुसार ये हैं:—वायु, वृष्टि, बिजली, गर्जन, और बादल। गर्भाधान के दिन ये लक्षण दिखाई पड़ें, तो वृष्टि विस्तार के साथ होगी

लोगों का विश्वास है कि उजाले पक्ष में गर्भाधान होने से सन्तान अर्थात् वृष्टि निर्बल होती है।

राशियाँ बारह और नक्षत्र सत्ताईस होते हैं। सूर्य को एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक पहुँचने में लगभग चौदह दिन लगते हैं।

यहाँ दो सारिणियाँ दी जाती हैं। जिनसे राशियों और नक्षत्रों के समय का पता चल जायगा। ये सारिणियाँ संवत् १९८७ के अनुसार हैं—

राशियाँ	इसमें सूर्य बहुधा कब आया है ?	इस दिन चन्द्रमा किस नक्षत्र में था ?
मेष	१३ अप्रैल, १९३०	चित्रा
वृष	१४ मई ”	अनुराधा-ज्येष्ठा
मिथुन	१४ जून ”	उत्तराषाढ़
कर्क	१६ जुलाई ”	पूर्वभाद्र
सिंह	१६-१७ अगस्त ”	भरणी
कन्या	१६-१७ सितम्बर ”	आर्द्रा
तुला	१७ अक्टोबर ”	अश्लेषा
वृश्चिक	१६ नवम्बर ”	उत्तराफाल्गुनी
धनु	१५ दिसम्बर ”	चित्रा, स्वाती
मकर	१४ जनवरी १९३१	अनुराधा
कुम्भ	१२ फरवरी ”	मूल नक्षत्र
मीन	१४ मार्च ”	उत्तराषाढ़

नक्षत्र	इसमें सूर्य कब आता है ?
अश्विनी	१३ अप्रैल
भरणी	२७ अप्रैल
कृत्तिका	११ मई
रोहिणी	२५ मई
मृगशिरा	५ जून

नक्षत्र	इसमें सूर्य कब आता है ?
आर्द्रा	२१ जून
पुनर्वसु	५ जुलाई
पुष्य	२० जुलाई
अश्लेषा	३ अगस्त
मघा	१६ अगस्त
पूर्वाफाल्गुनी	३० अगस्त
उत्तराफाल्गुनी	१३ सितम्बर
हस्त	२७ सितम्बर
चित्रा	१० अक्टोबर
स्वाती	२४ अक्टोबर
विशाखा	६ नवम्बर
अनुराधा	१९ नवम्बर
ज्येष्ठा	२ दिसम्बर
मूल	१५ दिसम्बर
पूर्वाषाढ़	२० दिसम्बर
उत्तराषाढ़	१० जनवरी
श्रवण	२३ जनवरी
धनिष्ठा	५ फरवरी
शतभिषा	१९ फरवरी
पूर्वभाद्रपद	३ मार्च
उत्तरभाद्रपद	१६ मार्च
रेवती	३० मार्च

घाघ की कहावतें, जो इस पुस्तक में दी हुई हैं, वे सभी घाघ की बनाई हुई हैं, इस बात का कोई प्रमाण नहीं है। घाघ ने कोई पुस्तक

लिखी थी, या वे ज़बानी कहावतें कहा करते थे, इसका भी कुछ पता नहीं है। सम्भव है, कुछ कहावतें घाघ ने कही हों, और कुछ उनके बाद के लोगों ने बनाकर उनके नाम से प्रचलित कर दी हों। मुझे संग्रह करते समय घाघ के नाम से जो कहावतें बताई गईं, या लिखकर दी गईं, मैंने उन्हें घाघ की मान लिया है और इस पुस्तक में उन्हें स्थान दे दिया है।

घाघ की कुछ कहावतें नीति की हैं, जो पुस्तक के प्रारम्भ में अलग दे दी गई हैं। बाकी कहावतें खेती से सम्बन्ध रखने वाली हैं। बिहार में भड्डरी की कहावतें भी घाघ के नाम से प्रसिद्ध हैं। मैंने बिहार से आई हुई कहावतों में से वर्षा-विषयक कहावतें भड्डरी के हिस्से में कर दी हैं। घाघ की खेती की कहावतें तो अत्यन्त उपयोगी हुई हैं; उनकी नीति की कहावतें भी बड़ी मज़ेदार हैं। छोटे-छोटे मन्त्रों में बड़े-बड़े अनुभवों के गूढ़ तत्त्व भर दिये गये हैं। उनमें किसानों के जीवन के अनेक सुखों और दुःखों के जीते-जागते चित्र हैं।

भड्डरी की कहावतें प्रायः सब वर्षा-विषयक हैं। मेघमाला नामक संस्कृत-ग्रंथ में भड्डरी की कहावतों के कुछ मूल श्लोक मिलते हैं, पर बहुत सी कहावतें ऐसी हैं, जो बिल्कुल स्वतन्त्र जान पड़ती हैं। घाघ की तरह भड्डरी की कहावतों के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है कि 'क्या सभी कहावतें भड्डरी की बनाई हुई हैं?' इसका भी उत्तर वही है जो घाघ की कहावतों के लिये है।

भड्डरी की कहावतें बिहार, मध्यप्रदेश और युक्तप्रांत से लेकर सारे राजपूताना और पञ्जाब तक फैली हुई हैं। इससे इस बात का पता लगाना कठिन हो जाता है कि भड्डरी वास्तव में कहाँ के रहने वाले थे? या कहाँ की बोली में उन्होंने अपनी कहावतें कही थीं? मारवाड़ में प्रचलित भड्डरी की कहावतों का एक बड़ा हस्तलिखित संग्रह मेरे पास है। उसमें से कुछ कहावतें मैंने पुस्तक के अंत में दे दी हैं। पञ्जाब में प्रचलित भड्डरी की कहावतें मैंने नहीं दीं। क्योंकि थोड़े-से शब्दों की

भिन्नता के सिवा उनमें और अन्य प्रान्तों की कहावतों के भावों में कोई अन्तर नहीं है।

भड्डरी ने वर्षा के सिवा शकुन, छिपकली, दिशाशूल आदि पर भी कहावतें कही हैं। अन्त में मैंने उनमें से भी कुछ कहावतें दे दी हैं। इनसे इस बात का पता चलेगा कि देहात में किस-किस प्रकार के विश्वास किसानों में घर किये हुए हैं।

देहात में कहावतों का बड़ा प्रचार है। ऐसा मालूम होता है कि किसानों के जीवन का महल कहावतों ही की ईंटों पर बना हुआ है। घाघ और भड्डरी ही की नहीं, बीसों अन्य ग्रामीण अनुभवियों की कहावतें गाँव-गाँव में प्रचलित हैं। सब का संग्रह करना एक व्यक्ति का काम नहीं; पर संग्रह होना अत्यन्त आवश्यक है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि वर्तमान हिन्दू-जाति का सच्चा रूप देखना हो तो गाँवों में प्रचलित कहावतें पढ़नी चाहिए। ऐसा मालूम होता है कि ग्रामीण जनता ने अपना जीवन ही कहावतों के सुपुर्द कर रक्खा है। गावों में अब मनु, याज्ञवल्क्य या पराशर का भारतवर्ष नहीं है। अब तो वहाँ कहावतों का भारतवर्ष मिलेगा। अतएव जो देश की दशा जानना चाहें और देशवासियों के मनोभावों का ठीक-ठीक अध्ययन करना चाहें, उन्हें कहावतों का अध्ययन सबसे पहिले करना चाहिए।

घाघ और भड्डरी की कहावतों के संग्रह में मुझे एक वर्ष से अधिक लग गए। कुछ संग्रह तो मेरे पास पहले ही से था; कुछ मैंने स्वयं भ्रमण करके संग्रह किया और कुछ पत्र-द्वारा प्राप्त किया। मैं कुछ दिनों तक कलकत्ते की इम्पीरियल लाइब्रेरी में भी प्रतिदिन लगातार पाँच घंटे बैठकर कहावतों की खोज करता रहा। पर घाघ और भड्डरी की दो ही चार कहावतें मुझे वहाँ नई मिलीं। इससे परिश्रम और धन का व्यय तो अधिक हुआ; पर यथेच्छ लाभ नहीं हुआ। हाँ, यह संतोष अवश्य हुआ कि, इम्पीरियल लाइब्रेरी में कुछ अधिक कहावतें मिलने मेरा सन्देह निकल गया।

इस पुस्तक के संकलन में मुझे जिन छपी हुई पुस्तकों से सहायता मिली, उनके और उनके लेखकों के नाम धन्यवाद-सहित मैं यहाँ प्रकट करता हूँ।

(१) मुफ़ीदुल्मज़ारईन—मासिक पत्र।

(२) युक्तप्रांत की कृषि सम्बन्धी कहावतें—ले० श्रीयुक्त वी० एन० मेहता आई० सी० एस०।

(३) कृषि-रत्नावली—ले० बाबू मुकुन्दलाल गुप्त, रायबहादुर, अजमतगढ़ कोठी, आजमगढ़।

कहावतों में पाठान्तर बहुत मिलते हैं। और जब एक ही कहावत कई प्रान्तों में प्रचलित मिलती है, तब पाठान्तर का मिलना स्वाभाविक भी है। मैंने इस पुस्तक में वही पाठ दिया है, जो मेरी समझ में ठीक था। अतएव कोई सज्जन यह न समझें कि मैंने किसी कहावत में अपनी ओर से कुछ बढ़ाया या घटाया है। मैंने सब में से एक पाठ चुन लेने के सिवा और कोई हस्तक्षेप नहीं किया है।

कहावतों का अर्थ, जहाँ तक हो सका, मैंने बहुत सरल भाषा में दिया है। आशा है, उनसे पूरा लाभ उठाया जायगा।

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग
जुलाई, १९३१

रामनरेश त्रिपाठी

घाघ की जीवनी

घाघ के सम्बन्ध में शिवसिंह ने अपने 'सरोज' में लिखा है :—

'घाघ कान्यकुब्ज अंतर्वेद वाले सं० १७५३ में उ० ॥'

'इनके दोहा, छप्पय, लोकोक्ति तथा नीति सम्बन्धी सामैक ग्रमीण बोलचाल में विख्यात हैं।'

मिश्रबन्धु अपने 'विनोद' में लिखते हैं :—

'ये महाशय १७५३ में उत्पन्न हुए और १७८० में इन्होंने कविता की। मोटिया नीति आपने बड़ी ज़ोरदार ग्रामीण भाषा में कही है।'

हिन्दी-शब्द सागर के सम्पादकों का कथन है :—

'घाघ गोंडे के रहनेवाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति का नाम, जिसकी कही हुई बहुत सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं। खेती-बारी, ऋतु-काल, तथा लग्न-मुहूर्त आदि के सम्बन्ध में इनकी विलक्षण युक्तियाँ किसान तथा साधारण लोग बहुत कहा करते हैं।'

भारतीय चरिताम्बुधि में लिखा है :—

'ये कन्नौज के रहने वाले थे। सन् १६९६ में पैदा हुए थे।'

श्रीयुक्त पीर मुहम्मद मूनिस का मत है :—

'घाघ के पद्यों की शब्दावली को देखते हुए अनुमान करना पड़ता है कि घाघ चम्पारन और मुजफ़्फ़रपुर जिले की उत्तरीय सरहद पर, औरैयामठ या बैरगनिया और कुड़वा चैनपुर के समीप किसी गाँव के थे।'

'अथवा चम्पारन के तथा दूहो-सूहो के निकटवर्ती किसी गाँव में उत्पन्न हुए होंगे; अथवा उन्होंने यहां आकर कुछ दिनों तक निवास किया होगा।'

पण्डित कपिलेश्वर झा लिखते हैं :—

'पूर्व काल में पं० वराहमिहिर ज्योतिषाचार्य अपना ग्राम सौं राजाक ओहि ठाम जाइत रहथि, मार्ग में साँझ भय गेलासे एक ग्वारक ओतय रहला। ओ गोआर बड़े आदर से भोजन कराय हिनक सेवार्थ अपन कन्याक नियुक्त कयलक। प्रारब्धवश रात्रि में ओहि गोपकन्या से भोग कयलन्हि। प्रातःकाल चलबाक समय में गोप-कन्या के उदास देखि कहलथिह्न जे यहि गर्भ से अहाँके उत्तम विद्वान् बालक उत्पन्न होएत ओ कतोक वर्षक उत्तर एक बेरि एत पुनः हम आएब, इत्यादि धैर्य दय ओहि ठाम से बिदा भेलाह।'*

यह कथा भड्डरी के सम्बन्ध में प्रचलित है।

श्रीयुक्त वी० एन० मेहता, आई० सी० एस०, अपनी 'युक्तप्रान्त की कृषि सम्बन्धी कहावतें' में लिखते हैं :—

'घाघ नामक एक अहीर की उपहासात्मक कहावतें भी स्त्रियों पर आक्षेप के रूप में हैं।'

रायबहादुर बाबू मुकुन्दलाल गुप्त 'विशारद' अपनी 'कृषिरत्नावली' में लिखते हैं :—

'कानपुर जिलान्तर्गत किसी गाँव में संवत् १७५३ में इनका जन्म हुआ था। ये जाति के ग्वाला थे। १७८० में इन्होंने कविता की मोटिया नीति बड़ी जोरदार भाषा में कही।'

राजा साहब पँड़रौना (जि० गोरखपुर) ने स्वागत-समिति के सभापति की हैसियत से अपने भाषण में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के गोरखपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर कहा था कि घाघ उनके राज के निवासी थे। गाँव का नाम भी उन्होंने शायद रामपुर बताया था। मैंने जाँच कराई, तो मालूम हुआ कि इसमें कुछ भी तथ्य नहीं है।

मैंने 'शिवसिंहसरोज' के आधार पर कविता-कौमुदी (प्रथम भाग) में लिखा था—

* विशाल-भारत, फरवरी १९२८

'घाघ कन्नौज-निवासी थे। इनका जन्म सं० १७५३ में कहा जाता है। ये कब तक जीवित रहे, न तो इसका ठीक-ठीक पता है, और न इनका या इनके कुटुम्ब ही का कुछ हाल मालूम है।'

इन उद्धरणों से घाघ को कन्नौज, गोंडा, चम्पारन, गोरखपुर और कानपुर, इनमें किसी एक ज़िले का निवासी मानना पड़ेगा; कुछ लोग इन्हें फ़तहपुर ज़िले के किसी गाँव का निवासी बतलाते हैं; कुछ लोग रायबरेली का; और कुछ लोग कहते हैं कि ये छपरे के रहने वाले थे, वहां से अपनी पतोहू से रूठ कर कन्नौज चले गये थे।

मैंने प्रायः सब स्थानों की खोज की। कहीं-कहीं मैं स्वयं गया; कहीं अपने आदमी भेजे और कहीं पत्र भेजकर पता लगाया। मैंने अवध के प्रायः सभी राजाओं और ताल्लुकेदारों को पत्र लिखकर पूछा कि 'घाघ' क्या उनके राज के निवासी थे? कुछ राजाओं और ताल्लुकेदारों ने उत्तर दिया कि 'नहीं'। खोज के लिये कन्नौज रह गया था। मैं उसकी चिन्ता ही में था कि तिर्वां के राजा साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी, ठाकुर केदारनाथ सिंह, बी० ए० का पत्र मिला कि कन्नौज में घाघ के वंशधर मौजूद हैं। उनका पत्र पाकर मैंने कन्नौज में घाघ की खोज की, तो यह पता चला कि घाघ कन्नौज के एक पुरवे में, जिसका नाम चौधरी सराय है, रहते थे। अब भी वहां उनके वंशज रहते हैं। वे लोग दूबे कहलाते हैं। घाघ पहले-पहल हुमायूँ के राज-काल में गंगापार के रहने वाले थे। वे हुमायूँ के दरबार में गये। फिर अकबर के साथ रहने लगे। अकबर उन पर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा कि अपने नाम का कोई गाँव बसाओ। घाघ ने वर्तमान 'चौधरी सराय' नामक गाँव बसाया और उसका नाम रक्खा 'अकबराबाद सराय घाघ'। अब भी सरकारी कागज़ात में उस गाँव का नाम 'सराय घाघ' ही लिखा जाता है।

सराय घाघ कन्नौज शहर से एक मील दक्खिन और कन्नौज स्टेशन से ३ फ़र्लाङ्ग पश्चिम है। बस्ती देखने से बड़ी पुरानी जान

पड़ती है। थोड़ा-सा खोदने पर ज़मीन के अन्दर से पुरानी ईंटें निकलती हैं। अकबर के दरबार में घाघ की बड़ी प्रतिष्ठा थी। अकबर ने इनको कई गाँव दिये थे, और इनको चौधरी की उपाधि भी दी थी। इसी से घाघ के कुटुम्बी अभी तक चौधरी कहे जाते हैं। सराय घाघ का दूसरा नाम चौधरी सराय भी है।

ऊपर कहा जा चुका है कि घाघ दूबे थे। इनका जन्मस्थान कहीं गङ्गापार में कहा जाता है। अब उस गाँव का नाम और पता इनके वंशजों में कोई नहीं जानता। घाघ देवकली के दूबे थे और सराय घाघ बसा कर अपने उसी गाँव में रहने लगे थे। उनके दो पुत्र हुये—मार्कंडेय दूबे और धीरधर दूबे। इन दोनों पुत्रों के खान्दान में दूबे लोगों के बीस-पचीस घर अब उस बस्ती में हैं। मार्कंडेय दूबे के खान्दान में बच्चूलाल दूबे और विष्णुस्वरूप दूबे तथा धीरधर दूबे के खान्दान में रामचरण दूबे और श्रीकृष्ण दूबे वर्तमान हैं। ये लोग घाघ की सातवीं या आठवीं पीढ़ी में अपने को बतलाते हैं। ये लोग कभी दान नहीं लेते। इनका कथन है कि घाघ अपने धार्मिक विश्वासों के बड़े कट्टर थे, और इसी कारण उनको अन्त में मुग़ल-दरबार से हटना पड़ा था; तथा उनकी ज़मींदारी का अधिकांश ज़ब्त हो गया था।

इस विवरण से घाघ के वंश और जीवन-काल के विषय में संदेह नहीं रह जाता। मेरी राय में अब घाघ-विषयक सब कल्पनाओं की इतिश्री समझनी चाहिये। घाघ को ग्वाल समझने वालों अथवा बराहमिहर की सन्तान मानने वालों को भी अपनी भूल सुधार लेनी चाहिये।

घाघ की कहावतों का जितना प्रचार अवध में और कन्नौज के आस-पास है, उतना युक्तप्रान्त के या बिहार के किसी ज़िले में नहीं है। इससे भी घाघ इधर ही के प्रमाणित होते हैं। घाघ की कहावतें न कहीं लिखी मिलती हैं, न अब तक कहीं छपी ही थीं। वह आम तौर पर किसानों की ज़बान पर मिलती हैं। और प्रत्येक ज़िले के किसान

उसे अपनी ही बोली के साँचे में ढाले हुये हैं। इससे घाघ की कहावतों की भाषा से उनके जन्मस्थान का पता नहीं लग सकता। बैसवाड़े के लोग घाघ की कहावतें अपनी बोली में कहते हैं। वे 'पेट' को 'प्याट' और 'सोवैं' को 'स्वावैं' बोलते हैं। पर बिहार वाले 'पेट' और 'सोवैं' बोलते हैं। इससे घाघ की भाषा को उनके जन्मस्थान का प्रमाण मानना ठीक नहीं।

घाघ के विषय में एक यह कहावत प्रचलित है कि वे छपरे के रहने वाले थे। वे जो कहावतें बनाते, उनकी पतोहू उनके विरुद्ध दूसरी कहावतें बना देती थी। बीच के कनरसिये लोग ससुर-पतोहू के उत्तर-प्रत्युत्तर को एक दूसरे के पास पहुँचाकर .खूब रस लेते थे। जैसे—

घाघ ने कहा—

मुये चाम से चाम कटावै भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइँ औ रोवै॥

उनकी पतोहू ने इसका प्रतिवाद इस प्रकार किया—

दाम देइ के चाम कटावै नींद लागि जब सोवै।
काम के मारे उढ़रि गईं जब समुझि आइ तब रोवै॥

घाघ ने कहा—

पोला पहिरे हर जोतै औ सुथना पहिरि निरावै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा बोझ लिहे जो गावै॥

पतोहू ने कहा—

अहिर होइ तो कस ना जोतै तुरकिन होइ निरावै।
छैला होय तो कस ना गावै हलुक बोझ जो पावै॥

घाघ ने कहा—

तरुन तिया होइ अँगने सोवै। रन में चढ़ि के छत्री रोवै॥
साँझे सतुवा करै बियारी। घाघ मरै उनकर महतारी॥

पतोहू ने कहा—

पतिव्रता होइ अँगने सोवै । बिना अस्त्र के छत्री रोवे ॥
भूख लागि जब करै बियारी । मरै घाघ हो के महतारी ॥

घाघ ने कहा—

बिन गौने ससुरारी जाय । बिना माघ घिउ खींचरि खाय ॥
बिन वर्षा के पहनै पौआ । घाघ कहैं ये तीनों कौआ ॥

पतोहू ने कहा—

काम परे ससुरारी जाय । मन चाहे घिउ खींचरि खाय ॥
करै जोग तो पहिरै पौआ । कहै पतोहू घाघै कौआ ॥

पतोहू का शरीर जरा भारी था । पर घाघ के पुत्र का शरीर पतला था । एक दिन खिसिया कर घाघ ने कहा—

पातर दुलहा मोटलि जोय, घाघ कहैं रस कहाँ से होय ।

लोगों ने यह मजाक पतोहू तक पहुँचाया । पतोहू कब चूकने वाली थी ? उसने कुढ़कर कहा—

घाघ दहिजरा अस कस कहै, पाती ऊख बहुत रस रहै ॥ * ॥

इस तरह अपना मजाक उड़ते हुए देखकर घाघ का मन छपरे से उचट गया और वे कन्नौज चले गये । कन्नौज में घाघ की ससुराल थी । कोई-कोई कहते हैं कि कन्नौज में पतोहू का नैहर था । पर इस पर विश्वास नहीं होता कि घाघ ऐसे अनुभवी आदमी पतोहू के थोड़े से छन्दों की मार से भाग खड़े हुए होंगे । पर घाघ की कहावतों के साथ उनकी पतोहू की कहावतें भी प्रचलित हैं । यह युक्तप्रान्त और बिहार दोनों में देखने को मिलती हैं । इससे इतना अनुमान तो किया ही जा सकता है कि ससुर-पतोहू में काफ़ी नोक-झोंक चलती थी ।

इसके सिवा घाघ और लालबुझक्कड़ के भिड़न्त की कहानी भी लोगों में प्रचलित है । कहा जाता है कि घाघ का गाँव गङ्गाजी के जिस किनारे पर था उसके ठीक सामने दूसरे किनारे पर लालबुझक्कड़ का गाँव था । लाल उसका असली नाम था; बुझक्कड़ की पदवी बाद में

* स्व० मालवीय जी महाराज से प्राप्त ।

मिली होगी। घाघ बुद्धिमान, अनुभवी और प्रत्युत्पन्नमति थे। उनके गाँववाले उनका बड़ा आदर करते थे। घाघ की प्रतिष्ठा और यश देखकर लालबुझक्कड़ से न रहा गया। वह भी अपने ज्ञान की धाक जमाने का उद्योग करने लगा। संयोग से उसके गाँववाले भी बड़े भोंदू थे। उन्हें कोई भी नई बात देखकर आश्चर्य होता था और वे लालबुझक्कड़ के पास, यह बूझने के दौड़े जाते थे कि, यह क्या है? लालबुझक्कड़ को अपनी प्रतिष्ठा बना रखने के लिये कुछ न कुछ बूझना ही पड़ता था।

एक बार लालबुझक्कड़ के एक गाँववाले को राह में हाथी के पैरों के चिह्न मिले। वह चकराया कि यह क्या है? वह लालबुझक्कड़ के पास पहुँचा। लालबुझक्कड़ ने सर्वज्ञ की तरह तत्काल उत्तर दिया—

लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझे कोय।
पैर में चक्की बाँध के हरिना कूदा होय॥

एक दिन एक गाँववाले ने कहीं राह में पुराना कोल्हू पड़ा हुआ देखा। वह लालबुझक्कड़ के पास पहुँचा। लालबुझक्कड़ ने मुसकुराते हुये कहा—

लालबुझक्कड़ बूझते वे तो हैं गुरु ज्ञानी।
पुरानी होकर गिर पड़ी खुदा की सुरमादानी॥

इसी प्रकार एक बार लालबुझक्कड़ के गाँव वाले ने कहीं हाथी देखा। वह लालबुझक्कड़ के पास पहुँचा और बोला, यह क्या है?

लालबुझक्कड़ एक बार दिल्ली गया था। वहाँ उसने पहले-पहल हाथी देखा। पर वह यह नहीं जानता था कि वह कौन-सा जानवर था? और उसका नाम क्या था। पर उसको बूझना तो था ही। उसने कहा—

लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझै कोय।
रैनि इकट्ठी हो गई कै दिल्लीवारो होय॥

इसी प्रकार लालबुझक्कड़ ने अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाकर घाघ की-सी प्रतिष्ठा पाने का प्रयत्न किया था। पर आज हम घाघ को किसानों में एक हितैषी मित्र की भाँति उनको अच्छी सलाहें देते हुये और लालबुझक्कड़ को अपनी बे-सिर-पैर की बातों से हँसा-हँसा कर उनकी थकावट मिटाते, जी बहलाते और खाना हज़म कराते हुये पाते हैं। घाघ का मुक़ाबला करके लालबुझक्कड़ भी अमर हो गये।

अकबर का समय सन् १५४२ से १६०५ तक है। यही घाघ का भी समय मानना चाहिये। यदि घाघ के वंशजों के कथनानुसार वे हुमायूँ के साथ भी रह चुके होंगे तो अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के समय उनकी अवस्था पचास वर्ष से अधिक ही रही होगी। घाघ के वंशधर कहते हैं कि उनकी मृत्यु कन्नौज ही में हुई थी।

घाघ की मृत्यु के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उन्होंने ज्योतिष से गणना करके यह पता लगा लिया था कि उनकी मृत्यु तालाब में नहाते समय जाठ में चोटी चिपक जाने से होगी। इससे घाघ कभी तालाब में नहाते ही नहीं थे और न मोटी चोटी ही रखते थे। संयोग की बात; एक दिन उनके कुछ घनिष्ठ मित्र तालाब में नहा रहे थे। उन्होंने घाघ को भी आग्रह करके पानी में खींच लिया। नहाते समय सचमुच उनकी चोटी जाठ में चिपक गई और बहुत प्रयत्न करने पर भी नहीं छुटी। उसी दशा में उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय घाघ ने यह कहा था—

ई नहिं जान घाघ निर्बुद्धि। आवै काल विनासै बुद्धि॥

भड्डरी की जीवनी

गाँवों में यह कहानी आमतौर से प्रचलित है कि काशी में एक ज्योतिषी रहते थे। उन्होंने गणना करके देखा तो एक ऐसी अच्छी साइत आने वाली थी, जिसमें यदि गर्भाधान हो तो उससे बड़ा ही विद्वान और यशस्वी पुत्र पैदा हो। ज्योतिषीजी एक गुणी पुत्र की लालसा से काशी छोड़ घर की ओर चले। घर काशी से दूर था। ठीक समय पर वे घर नहीं पहुँच सके। रास्ते में शाम हो गई। एक अहीर के दरवाज़े पर उन्होंने डेरा डाला। अहीर की युवती कन्या या स्त्री उनके लिये भोजन बनवाने बैठी। ज्योतिषीजी बहुत उदास थे। अहीरनी ने उदासी का कारण पूछा तो कुछ इधर-उधर करने के बाद ज्योतिषीजी ने असली कारण बता दिया। अहीरनी ने स्वयं उस साइत से लाभ उठाना चाहा। और उसी की इच्छा का परिणाम यह हुआ कि समय पाकर भड्डरी का जन्म हुआ। बड़े होने पर भड्डरी बड़े भारी ज्योतिषी हुए।

श्रीयुक्त वी० एन० मेहता, आई० सी० एस०, ने इस कहानी को इस प्रकार लिखा :—

'भड्डर के विषय में ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर की एक बड़ी ही मनोहर कहानी कही जाती है। एक समय, जब कि वे तीर्थ-यात्रा में थे, उनको मालूम हुआ कि अमुक अगले दिन का उत्पन्न हुआ बच्चा बहुत बड़ा गणित और फलित ज्योतिष का पण्डित होगा। उन्हें स्वयं ही ऐसे पुत्र के पिता होने की उत्सुकता हुई और उन्होंने अपने घर उज्जैन के लिये प्रस्थान किया। परन्तु उज्जैन इतनी दूर था कि वे उस शुभ-दिन तक वहाँ न पहुँच सके। अतएव रास्ते के एक गाँव में एक गड़रिये की कन्या से विवाह कर लिया। उस स्त्री से उनको एक पुत्र

हुआ, जो ब्राह्मणों की भाँति शिक्षा न पाने पर भी स्वभावतः बहुत बड़ा ज्योतिषी हुआ। आज दिन सभी नक्षत्र-सम्बन्धी कहावतों के वक्ता भड्डरी या भड्डली कहे जाते हैं।'

इस कहानी से मालूम होता है कि भड्डली गड़रिन के गर्भ से पैदा हुये थे। पर अहीरनी के गर्भ से उत्पन्न होने की बात पण्डित कपिलेश्वर झा के उद्धरण में भी मिलती है, जो घाघ की जीवनी में दिया गया है। बिहार में घाघ ही के लिये प्रसिद्ध है कि ये बराहमिहिर के पुत्र थे, और घाघ के अन्य कई नाम भी बिहारवालों में प्रचलित हैं। जैसे— डाक, खोना, भाड आदि। यह भाड ही शायद भड्डरी हो। मारवाड़ में "डंक कहै सुनु भड्डली" का प्रचार है। सम्भवतः मारवाड़ का 'डंक' ही बिहार का 'डाक' है।

भाषा देखते हुये घाघ या भड्डरी कोई भी बराहमिहिर के पुत्र नहीं हो सकते। बराहमिहिर का समय 'पञ्चसिद्धान्तिका' के अनुसार शक ४२७ या सन् ५०५ ई० के लगभग पड़ता है। उस समय की यह भाषा नहीं हो सकती, जो भड्डली या घाघ की कहावतों में व्यवहृत है।

मारवाड़ में भड्डली की कुछ और ही कथा है। वहाँ भड्डली पुरुष नहीं, स्त्री है। वह भङ्गिन थी और शकुन, विद्या जानती थी। डंक नाम का एक ब्राह्मण ज्योतिष विद्या जानता था। दोनों परस्पर विचार-विनिमय किया करते थे। अन्त में दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे और उनसे जो सन्तान हुई वह 'डाकोत' नाम से अब भी प्रसिद्ध है। किन्तु 'डाकोत' लोग कहते हैं कि भड्डली धन्वन्तरि वैद्य की कन्या थी।

मारवाड़ में एक कथा और भी है। राजा परीक्षित के समय में डंक नाम के एक बड़े ऋषि थे। वे ज्योतिष-विद्या के बड़े ज्ञाता थे। उन्होंने धन्वन्तरि वैद्य की कन्या सावित्री उर्फ़ भड्डली से विवाह किया था। उनसे जो सन्तान पैदा हुई, वह डाकोत कहलाई।

भड्डरी की भाषा देखते हुए ऊपर की दोनों कहानियाँ बिल्कुल मनगढ़न्त हैं। न परीक्षित के समय में और न बराहमिहिर ही के

समय में वह भाषा प्रचलित थी, जो भड्डरी की कहावतों में है। सम्भवतः डाकोतों ने ऐसी कहानियां जोड़कर अपनी प्राचीनता सिद्ध की होगी। भड्डली या भड्डरी काशी के आसपास के थे या मारवाड़ के यह विचारणीय प्रश्न है। भड्डरी की भाषा में मारवाड़ी शब्दों के प्रयोग बहुत मिलते हैं; तथा युक्तप्रान्त और बिहार की ठेठ बोली के भी शब्द मिलते हैं। इससे अनुमान होता है कि या दो भड्डरी या भड्डली हुए होंगे, या एक ही भड्डरी युक्तप्रान्त से मारवाड़ में जा बसे होंगे और उन्होंने यहाँ और वहां दोनों प्रान्तों की बोलियों में अपने छन्द रचे होंगे।

मैंने जोधपुर के पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ से भड्डली के विषय में पत्र लिखकर पूछा तो उन्होंने लिखा कि :—

'नहीं कह सकता कि ये मारवाड़ ही के थे, पर थे राजपूताने के अवश्य।'

राजपूताने में डाकोतों की संख्या अधिक है। उनका भी कथन है कि डंक और भड्डली राजपूताने ही के थे। एक उलझन यह भी है कि राजपूताना और युक्तप्रान्त के भड्डरी में स्त्री-पुरुष का अन्तर है। ऐसी दशा में यह कहना दुःसाहस की बात होगी कि दोनों प्रान्तों के भड्डली एक ही व्यक्ति हैं।

भड्डरी और भड्डली के विषय में पूछताछ से जो कुछ मालूम हो सका है, वह इतना ही है।

भड्डरी की एक छोटा-सी पुस्तिका छपी हुई मिलती है। उसका नाम शकुन-विचार है। पर वह इतनी अशुद्ध है कि कितने ही स्थानों पर उसका समझना कठिन है। राजपूताने में भड्डली की एक पुस्तक 'भड्डली-पुराण' के नाम से प्रसिद्ध है। उसका कुछ ही अंश मुझे मिल सका है, जो इस पुस्तक के अन्त में दे दिया गया है।

घाघ की कहावतें

बनिय क सखरच ठकुर क हीन। बइद क पूत ब्याधि नहीं चीन॥
पंडित चुपचुप बेसवा मइल। कहैं घाघ पाँचों घर गइल॥१॥

बनिये का लड़का शाहखर्च (अपव्ययी) हो; ठाकुर का लड़का तेजहीन हो; वैद्य का लड़का रोग न पहचानता हो; पंडित चुप-चुप (अल्पभाषी) हो; और वेश्या मैली हो; घाघ कहते हैं कि इन पाँचों का घर नष्ट हुआ समझो।

शब्दार्थ—सखरच = शाहखर्च। वेश्या।

नसकट खटिया दुलकन घोर। कहैं घाघ यह बिपति क ओर॥२॥

नस काटनेवाली छोटी खाट, जिस पर लेटने में एँड़ी के ऊपर की नस पाटी पर पड़ती हो; तथा दुलक कर चलने वाला घोड़ा, घाघ कहते हैं कि ये दोनों सब से बड़ी विपत्तियाँ हैं।

बाछा बैल बहुरिया जोय। ना घर रहे न खेती होय॥३॥

जिस गृहस्थ का बैल बछड़ा हो और स्त्री बहुरिया (नई आई हुई, गृहस्थी के अनुभव से रहित बहू) हो, न उसकी गृहस्थी चल सकती है, न खेती ही हो सकती है।

नोट—कहीं-कहीं बहुरिया के बदले पतुरिया पाठ प्रचलित है, जिसका अर्थ 'वेश्या' है। पर 'बहुरिया' अधिक युक्तिसंगत है।

भुइयां खेड़े हर है चार। घर होय गिहथिन गऊ दुधार॥
अरहर की दाल जड़हन का भात। गागल निबुआ औ घिउ तात॥
खाँड दही जो घर में होय। बाँके नैन परोसै जोय॥
कहैं घाघ तब सबही झूठा। उहाँ छोड़ि इहँवै बैकूँठा॥४॥

खेत गाँव के पास हो; चार हल की खेती होती हो; घर में गृहस्थी के धंधे में

निपुण स्त्री हो; दूध देने वाली गाय हो; अरहर की दाल और जड़हन (जाड़े में पैदा होनेवाला चावल) का भात, ख़ूब रसदार नीबू और गरम गरम घी खाने को मिले; घर ही में शक्कर और दही मिल जाया करे; सुन्दर कटाक्ष करती हुई स्त्री भोजन परोसे; तब घाघ कहते हैं कि बैकुण्ठ पृथिवी ही पर है, और सब झूठा है।

शब्दार्थ—भुइयाँ खेड़े = गाँव में ही खेत। गिहथिन = गृह-कार्य में दक्ष स्त्री। तात = गरम। जोय = स्त्री। पाठान्तर—खेड़े = खैंड़े = गाँव के निकट।

नसकट पनही बतकट जोय। जो पहिलौंठी बिटिया होय॥
पातरि कृषी बौरहा भाय। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥५॥

घाघ कहते हैं—नस काटने वाली जूती, बात काटने वाली स्त्री, पहली सन्तान कन्या, कमज़ोर खेती और बावला भाई, इनका दुख कहाँ समा सकता है?

शब्दार्थ—पनही = जूता। पातरि = हलकी, कमज़ोर। बौरहा = बावला।

मुये चाम से चाम कटावै, भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा, उढ़रि गये पर रोवै॥६॥

जो मरे हुए चमड़े कटाता है अर्थात् सँकरा जूता पहनता है; जो ज़मीन पर भी सँकरी जगह में सोता है और जो किसी के साथ विषयासक्त होकर घर छोड़कर भाग जाता है और फिर रोता है, घाघ कहते हैं, ये तीनों मूर्ख हैं।

शब्दार्थ—उढ़रना = उद्धरण; पर पुरुष के साथ जो स्त्री भाग जाती है, उसे उढ़री कहते हैं।

सुथना पहिरे हर जोतै औ पौला पहिरि निरावै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा सिर बोझा औ गावै॥७॥

जो सुथना (पाजामा) पहनकर हल जोतता है; जो पौला पनहकर निराता (खेत में से घास निकालता) है; और जो सिर पर बोझा लिये हुए भी गाता चलता है, घाघ कहते हैं, ये तीनों मूर्ख हैं।

शब्दार्थ—पौला=एक प्रकार का खड़ाऊँ, जिसमें खूँटी के बदले रस्सी लगाई जाती है। किसान लोग प्रायः पौला ही पहनते हैं। भकुवा=भोला-भाला; मूर्ख।

उधार काढ़ि ब्यौहार चलावै छप्पर डारै तारो।
सारे के सँग बहिनी पठवै तीनिउ का मुँह कारो ॥८॥

जो उधार लेकर क़र्ज़ देता है; जो छप्पर के घर में ताला लगाता है, और जो साले के साथ बहन को भेजता है, घाघ कहते हैं, इन तीनों का मुँह काला होता है।

शब्दार्थ—ब्यौहार=ब्यौहर, सूद पर रुपया उधार देना। तारो=ताला।

आलस नींद किसानै नासै चोरै नासै खाँसी।
अँखिया लीबर बेसवै नासै बाबै नासै दासी ॥९॥

आलस्य और नींद किसान का, खाँसी चोर का, कीचड़वाली आँखें वेश्या का और दासी साधू का नाश करती है।

शब्दार्थ—लीबर=कीचड़। बेसवा=वेश्या। बाबा=साधू।

फूटे से बहि जातु हैं ढोल गँवार अँगार।
फूटे से बनि जातु हैं फूट कपास अनार ॥१०॥

ढोल, गँवार और अँगारा, ये तीनों फूटने से नष्ट हो जाते हैं। पर फूट (ककड़ी) कपास और अनार फूटने से बन जाते हैं। अर्थात् मूल्यवान् हो हो जाते हैं।

भूरी हथिनी चँदुली जोय। पूस महावट बिरले होय ॥११॥

भूरे रंग की हथिनी, गंजे सिर वाली स्त्री और पौष महीने की वर्षा बहुत शुभ है। ये किसी किसी को नसीब होते हैं।

कोदौ मडुवा अन नहीं जोलहा धुनिया जन नहीं ॥१२॥

कोदौ और मडुवा की गिनती अन्नों में नहीं है। ऐसे ही जुलाहा और धुनिया भी आदमियों में नहीं गिने जाते।

बाध, बिया, बेकहल, बनिक, बारी, बेटा, बैल।
ब्योहर, बढ़ई, बन, बबुर बात, सुनो यह छैल॥
जो बकार बाहर बसैं सो पूरन गिरहस्त।
औरन को सुख दै सदा आप रहै अलमस्त॥१३॥

बाध (जिससे खाट बुनी जाती है), बीज, बेकहल (ढाँक की जड़ की छाल), बनिया, बारी (फुलवाड़ी), बेटा, बैल, ब्यौहर (सूद पर उधार देना), बढ़ई, बन या कपास, बबूल और बात, ये बारह बकार जिसके पास हों, वही पूरा गृहस्थ है। वह दूसरों को सदा सुख देगा और स्वयं भी निश्चिन्त रहेगा।

शब्दार्थ—बाध = मूँज को कूटकर उसके रेशे से जो रस्सी बनाई जाती है, उसे बाध कहते हैं।

गया पेड़ जब बकुला बैठा। गया गेह जब मुड़िया पैठा॥
गया राज जहँ राजा लोभी। गया खेत जहँ जामी गोभी॥१४॥

बगले के बैठने से पेड़ का नाश हो जाता है। मुड़िया (सन्यासी) जिस घर में आता-जाता है, वह घर नष्ट हो जाता है। राजा लोभी हो तो उसका राज नष्ट हो जाता है और गोभी (एक प्रकार की घास) जमने से खेत नष्ट हो जाता है।

शब्दार्थ—मुड़िया = वह साधु जो सिर मुड़ाये रखता है। राजपूताने में जैन साधु मुड़िया कहलाते हैं।

नोट—बगले की बीट पेड़ के लिये हानिकारक बताई जाती है और गोभी के जमने से खेत की पैदावार बहुत कम हो जाती है।

घर घोड़ा पैदल चलै तीर चलावै बीन।
थाती धरै दमाद घर जग में भकुआ तीन॥१५॥

संसार में तीन मूर्ख हैं—एक तो वह, जो घर में घोड़ा होते हुए भी पैदल चलता है; दूसरा वह जो बीन-बीनकर तीर चलाता है; और तीसरा वह जो दामाद के घर में थाती (धरोहर) रखता है।

शब्दार्थ—बीन = उठाकर।

नोट—बीन-बीन कर तीर चलानेवाला दिन भर दौड़ता ही तो रहेगा।

खेती पाती बीनती औ घोड़े की तङ्ग।
अपने हाथ सँवारिये लाख लोग हों सङ्ग ॥१६॥

खेती करना, चिट्ठी लिखना, बिनती करना और घोड़े की तंग कसना अपने ही हाथ से चाहिये। यदि लाख आदमी भी साथ हों, तब भी स्वयं करना चाहिये।

बगड़ बिराने जो रहे मानै त्रिया की सीख।
तीनों यों हीं जायँगे पाही बोवै ईख ॥ १७॥

जो दूसरे के घर में रहता है, जो स्त्री के कहने पर चलता है और जो दूसरे गाँव में ईख बोता है, ये तीनों नष्ट हो जायँगे।

सावन साये ससुर घर भादों खाये पूवा।
चैत में छैला पूँछत डोलैं तोहरे केतिक हुआ॥ १८॥

जो बनठन कर सावन में तो ससुराल में रहे और भादों में पूवा खाते रहे, अब चैत में दूसरों से पूछते फिरते हैं कि तुम्हारे कितनी पैदावार हुई?

बैल बगौधा निरघिन जोय। वा घर ओरहन कबहुँ न होय॥ १६ ॥

बगौधे की नसल वाला बैल और फूहड़ स्त्री जिस घर में हों, उस घर में उलहना कभी नहीं आता।

नोट—बगौधे की नसल वाले बैल बड़े सीधे होते हैं।

चैते गुड़ बैसाखे तेल। जेठ क पथ असाढ़ क बेल॥
सावन साग न भादों दही। क्वार करेला कातिक मही॥
अगहन जीरा पूसे धना। माघे मिश्री फागुन चना॥ २०॥

चैत में गुड़, बैसाख में तेल, जेठ में राह, असाढ़ में बेल, सावन में साग, भादों में दही, क्वार में करेला, कातिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पौष में धनिया, माघ में मिश्री और फागुन में चना हानिकारक है।

इसी के जोड़ का एक दूसरा छंद है, जिसमें प्रत्येक महीने में लाभ पहुँचाने वाली चीज़ों के नाम हैं। जैसे :—

सावन हर्रे भादों चीत। क्वार मास गुड़ खायउ मीत॥
कातिक मूली अगहन तेल। पूस में करै दूध से मेल॥
माघ मास घिउ खींचरि खाय। फागुन उठि के प्रात नहाय॥
चैत मास में नीम बेसहनी। बैसाखे में खाय जड़हनी॥
जेठ मास जो दिन में सोवै। ओकर जर असाढ़ में रोवै॥

बूढ़ा बैल बेसाहै झीना कपड़ा लेय।
आपुन करै नसौनी दैवै दूषन देय॥ २१॥

जो गृहस्थ बुड्ढा बैल खरीदता है, बारीक कपड़ा लेता है, वह तो अपना नाश आप ही करता है, वह दैव को व्यर्थ ही दोष लगाता है।

शब्दार्थ—झीना = बारीक। नसौनी = नाश होने का काम।

बैल चौंकना जोत में औ चमकीली नार।
ये बैरी हैं जान के कुसल करैं करतार॥ २२॥

हल में जोतते वक्त चौंकने वाला बैल और चटकीली-मटकीली स्त्री, ये दोनों गृहस्थ के प्राण के शत्रु हैं। इनसे ईश्वर ही कुशल करे।

जोइगर बंसगर बुझगर भाय। तिरिया सतवँति नीक सुभाय॥
धन पुत हो मन होइ बिचार। कहैं घाघ ई सुक्ख अपार॥ २३॥

स्त्री वाला, वंश वाला, समझदार भाईवाला, अच्छे स्वभाव वाली सतवंती स्त्री वाला तथा धन और पुत्र से युक्त और विचारयुक्त मन वाला होना, घाघ कहते हैं, ये अपार सुख हैं।

शब्दार्थ—जोइ = स्त्री।

निहपछ राजा मन हो हाथ। साधु परोसी नीमन साथ॥
हुक्मी पूत धिया सतवार। तिरिया भाई रखे विचार॥
कहैं घाघ हम करत बिचार। बड़े भाग से दे करतार॥ २४॥

राजा निष्पक्ष हो, मन वश में हो, पड़ोसी सज्जन हो, सच्चे और विश्वासी आदमियों का साथ हो, पुत्र आज्ञाकारी हो, कन्या सतवाली हो, स्त्री और भाई विचारवान् हों, घाघ कहते हैं कि हम विचार करते हैं कि बड़े भाग्य से भगवान् इन्हें देते हैं।

शब्दार्थ—निहपछ=निष्पक्ष= । नीमन=पुष्ट, विश्वस्त । सतवार= सच्चरित्रा । धिया=कन्या । तिरिया=स्त्री ।

ढीठ पतोहु धिया गरियार । खसम बेपीर न करै बिचार ॥
घरे जलावन अन्न न होइ । घाघ कहैं सो अभागी जोइ ॥ २५ ॥

जिसकी पुत्रवधू ढीठ हो, कन्या घमंडी हो, पति निर्दय हो और विचार न करता हो, जिसके घर में जलाने के लिये (?) अन्न न हो, घाघ कहते हैं, वह स्त्री अभागिनी है ।

शब्दार्थ—गरियार=घमंडी ।

कोपे दई मेंघ ना होइ । खेती सूखति नैहर जोइ ॥
पूत बिदेस खाट पर कन्त । कहैं घाघ ई बिपति क अन्त ॥२६॥

दैव ने कोप किया है, बरसात नहीं हो रही है, खेती सूख रही है, स्त्री पिता के घर है, पुत्र परदेश में है, पति खाट पर बीमार पड़ा है । घाघ कहते हैं, ये विपत्ति की सीमायें हैं ।

आपन आपन सब कोउ होई । दुख माँ नाहिं सँघाती कोई ॥
अन बहतर खातिर झगड़न्त । कहैं घाघ ई बिपति क अन्त ॥२७॥

अपने के लिये सब कोई हैं, पर दुःख में कोई किसी का साथी नहीं होता । सब अन्न-वस्त्र के लिये झगड़ रहे हैं । घाघ कहते हैं, यह विपत्ति की हद है ।

शब्दार्थ—सँघाती=साथी । अन=अन्न । बहतर=वस्त्र ।

झिलँगा खटिया बातलि देह । तिरिया लम्पट हाटे गेह ॥
बेगा बिगरि कै मुदई मिलन्त । कहैं घाघ ई बिपति क अन्त ॥२८॥

झिलँगा (ढीली-ढीली) खाट, वात-रोग से व्यथित देह, कुलटा स्त्री, बाजार में घर और भाई का बिगड़ करके शत्रु से मिल जाना, घाघ कहते हैं, यह विपत्ति की हद है !

शब्दार्थ—झिलँगा = ढीली-ढीली खाट।

पूत न मानै आपन डाँट। भाई लड़ै चहै नित बाँट ॥
तिरिया कलही करकस होइ। नियरा बसल दुहुट सब कोई ॥
मालिक नाहिन करै विचार। घाघ कहैं ई बिपति अपार ॥२६॥

पुत्र अपनी डाट-डपट नहीं मानता, भाई नित्य झगड़ता रहता है और बँटवारा चाहता है, स्त्री झगड़ालू और कर्कशा है, पास-पड़ोस में सब दुष्ट सेब हुए हैं, मालिक न्याय-अन्याय का विचार नहीं करता; घाघ कहते हैं कि ये अपार विपत्तियाँ हैं।

चाकर चोर राज बेपीर। कहैं घाघ का धारी धीर ॥३०॥

नौकर चोर है और राजा निर्दयी। घाघ कहते हैं कि धैर्य क्या रक्खें ?

बैल मरकना चमकुल जोय। वा घर ओरहन नित उठि होउ ॥३१॥

मारने वाला बैल और चटकीली-मटकीली स्त्री जिस घर में हों, उसमें सदा उलहना आता रहेगा।

परहथ बनिज सँदेसे खेती। बिन बर देखे ब्याहै बेटी ॥
द्वार पराये गाड़ै थाती। ये चारो मिलि पीटैं छाती ॥३२॥

दूसरे के भरोसे व्यापार करने वाला, संदेशा-द्वारा खेती करने वाला और जो बिना वर देखे बेटी का व्याह करता है तथा जो दूसरे के द्वार पर धरोहर गाड़ता है, ये चारों छाती पीट कर पछताते हैं।

बिना माघ घिउ खीचरि खाय। बिन गौने ससुरारी जाय ॥
बिन वर्षा के पहिरै पउवा। घाघ कहैं ई तीनौ कउवा ॥३३॥

जो आदमी माघ मास बिना हो घी और खिचड़ी खाता है; गौन न हुआ हो फिर भी जो ससुराल जाता है, और जो बिना वर्षा के पौला (पैर में पहनने का काठ का खड़ाऊँ) पहनता है। घाघ कहते हैं ये तीनों कौवा हैं।

घाघ बात अपने मन गुनहीं। ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं ॥३४॥

घाघ अपने मन में यह बात सोचते हैं कि ठाकुर लोग भक्त नहीं हो सकते। जैसे मूसल का धनुष नहीं हो सकता।

अगसर खेती अगसर मार। कहैं घाघ ते कबहुँ न हार ॥३५॥

घाघ कहते हैं कि जो सबसे पहले खेत बोते हैं और जो सब से पहले मारते हैं, वे कभी नहीं हारते।

सधुवै दासी चोरवै खाँसी प्रेम बिनासै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिनासै खायँ जो रोटी बासी ॥३६॥

साधु को दासी, चोर को खाँसी और प्रेम को हँसी नष्ट कर देती है। घाघ कहते हैं कि इसी प्रकार जो लोग बासी रोटी खाते हैं, उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

नीचन से ब्योहार बिसाहा हँसि के माँगत दम्मा।
आलस नींद निगोड़ी घेरे घग्घा तीनि निकम्मा ॥३७॥

जो नीच आदमियों से लेन-देन करता है, जो दी हुई चीज़ का दाम हँस कर माँगता है और जिसे आलस्य और निगोड़ी नींद घेरे रहती है, घाघ कहते हैं ये तीनों निकम्मे हैं।

ओछे बैठक ओछे काम। ओछी बातें आठों जाम ॥
घाघ बताये तीनि निकाम। भूलि न लीजौ इनको नाम ॥३८॥

जो ओछे आदमियों के साथ बैठता है, जो ओछे काम करता है, और जो रातदिन ओछी बातें करता रहता है। घाघ कहते हैं ये तीन निकम्मे आदमी हैं। इनका नाम कभी भूल कर भी न लेना।

साँझै से परि रहती खाट। पड़ी भड़ेहरि बारह बाट ॥
घर आँगन सब घिन घिन होइ। घग्घा गहिरे देव डबोइ ॥३९॥

जो स्त्री शाम ही से खाट पर पड़ रहती है; जिसके घर के बरतन-भाँड़े बारह बाट (तितर-बितर) हुये रहते हैं और जिसका घर और आँगन घिनाता रहता है। घाघ कहते हैं उस स्त्री को गहरे पानी में डुबो देना चाहिये।

नारि करकसा कट्टर घोर। हाकिम होइके खाइ अँकोर ॥
कपटी मित्र पुत्र है चोर। घग्घा इनको गहिरे बोर ॥४०॥

कर्कशा स्त्री, काटनेवाला घोड़ा, रिश्वतखोर हाकिम, कपटी मित्र और चोर पुत्र, घाघ कहते हैं इनको गहरे पानी में डुबो देना चाहिये।

एक तो बसो सड़क पर गाँव। दूजे बड़े बड़ेन में नाँव ॥
तीजे परे दरबि से हीन। घग्घा हमको विपता तीन ॥४१॥

एक तो हमारा गाँव सड़क पर बसा है, दूसरे बड़े बड़ों में अपना नाम है, (इससे सब वहीं आकर टिकते हैं।) तीसरे हम द्रव्य से रहित हो गये हैं। घाघ कहते हैं, हमको ये तीन विपदायें हैं।

हँसुआ ठाकुर खँसुआ चोर। इन्हैं ससुरवन गहिरे बोर ॥४२॥

हँस कर बात करनेवाले ठाकुर को और खाँसीवाले चोर को—इन ससुरों को गहरे पानी में डुबो देना चाहिये।

कुतवा मूतनि मरकनी सरबलील कुच काट।
घग्घा चारौ परिहरौ तब तुम पौढ़ौ खाट ॥४३॥

कुत्ते जिस पर मूतते हों, जो मरमराती हो, जो ऐसी ढीली-ढाली हो कि समूचा आदमी उसमें समा जाय और जो इतनी छोटी हो कि पैर की नस काटती हो, घाघ कहते हैं कि इन चार अवगुणों वाली खाट को छोड़कर तब खाट पर सोओ।

ओछो मंत्री राजै नासै ताल बिनासै काई ॥
सान साहिबी फूट बिनासै घग्घा पैर बिवाई ॥४४॥

घाघ कहते हैं कि नीच प्रकृति का मंत्री राजा का, काई तालाब का, फूट टाट बाट का और बिवाई पैर का नाश करती है।

आठ कठौती माठा पीवै सोरह मकुनी खाइ।
उसके मरे न रोइये घर क दलिद्दर जाइ ॥४५॥

जो आठ कठौत (काठ की परात) भर कर मट्ठा पीता हो और सोलह मकुनी (एक प्रकार की मोटी रोटी) खाता हो, उसके मरने पर रोने की ज़रूरत नहीं। वह तो मानो घर का दरिद्र निकल गया।

आठ गाँव का चौधरी बारह गाँव का राव ॥
अपने काम न आय तो अपनी ऐसी-तैसी में जाव ॥४६॥

आठ गाँव का चौधरी हो या बारह गाँव का राव; पर जो अपने काम न आवे तो वह अपनी ऐसी-तैसी में जाय ।

अम्बा नींबू बानियाँ गर दाबे रस देयँ ।
कायथ कौवा करहटा मुर्दाहू सों लेयँ ॥४७॥

आम, नीबू और बनिया ये गला दबाने ही से रस देते हैं और कायस्थ, कौवा और किलहटा (एक पक्षी) ये मुर्दे से भी रस लेते हैं ।

कलिजुग में दो भगत हैं बैरागी औ ऊँट ।
वै तुलसी बन काटहीं ये किये पपल ठूँट ॥४८॥

कलियुग में दो भक्त हैं एक बैरागी, दूसरा ऊँट । बैरागी तुलसी का बन काटता रहता है और ऊँट पीपल को ठूँठा करता है ।

चोर जुवारी गँठकटा जार औ नार छिनार ।
सौ सौगंधें खायँ जो घाघ न करु इतबार ॥४९॥

घाघ कहते हैं कि चोर, जुवारी, गंठकटा, जार और छिनार स्त्री, ये सौ सौगंधें खाँय, तब भी इनका विश्वास न करना चाहिये ।

छज्जे की बैठक बुरी परछाईं की छाँह ।
धोरे का रसिया बुरा नित उठि पकरै बाँह ॥५०॥

छज्जे की बैठक बुरी होती है, परछांई की छाया बुरी होती है । इसी प्रकार निकट का रहने वाला प्रेमी बुरा होता है जो नित्य उठकर बाँह पकड़ता है ।

अहीर मिताई बादर छाईं । हावै होवै नाहीं नाईं ॥५१॥

अहीर की मित्रता और बादल की छाया का कुछ भरोसा नहीं करना चाहिये ।

नित्तै खेती दुसरे गाय । नाहीं देखै तेकर जाय ॥
घर बैठल जो बनवै बात । देह में बस्त्र न पेट में भात ॥५२॥

जो किसान रोज़ उठकर खेती को और दूसरे दिन गाय की सँभाल नहीं

करता, उसकी ये दोनों चीज़ें बरबाद हो जाती हैं। जो घर में बैठे-बैठे बातें बनाया करता है, उसकी देह पर न वस्त्र होता है, न पेट में भात। अर्थात् वह ग़रीब हो जाता है।

चना क खेती चिक्क धन बिटिअन कै बढ़वारि।
यतनेहु पर धन ना घटै तो करै बड़े से रारि ॥५३॥

चने की खेती, कसाई की जीविका और कन्याओं की बढ़ती, इनसे धन न घटे, तो अपने से ज़बरदस्त से झगड़ा करना चाहिये।

पाठान्तर—(१) विप्र टहलुवा चीक धन। (२) पाहो खेती चिक्क धन।

अँतरे खोंतरे डंडे करै। तालु नहाय ओस मा परै॥
दैव न मारै अपुवइ मरै ॥५४॥

जो आदमी दूसरे-चौथे डंड करता है। ताल में नहाता और ओस में सोता है, उसे दैव नहीं मारता। वह आप ही मरता है।

जहाँ चारि काछ्रो। उहाँ बात आछो॥
जहाँ चारि कोरी। उहाँ बात बोरी॥
जहाँ चारि भुजुआ। उहाँ बात उरुझी ॥५५॥

जहाँ चार काछी रहते हैं, वहाँ अच्छी बातें होती हैं; जहाँ चार कोरी रहते हैं, वहाँ सब बातें डूब जाती हैं। पर जहाँ चार भुजवे होते हैं, वहाँ सारी बातें उलझी हो रहती हैं।

जिसकी छाती एक न बार। उससे सब रहियौ हुशियार ॥५६॥

जिस आदमी को छाती पर एक भी बाल न हो, उससे सब को सावधान रहना चाहिये।

माते पूत पिता ते घोड़ा। बहुत न होय तो थोड़म थोड़ा ॥५७॥

माँ का गुण पुत्र में आता है और पिता का गुण घोड़े में आता है। यदि बहुत न हुआ, तो थोड़ा तो होता ही है।

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा। खेती उपजै अपने कर्मा ॥५८॥

पुत्र पिता के धर्म से बढ़ता है। पर खेती अपने ही कर्म से होती है।

राँड़ मेहरिया अनाथ भैंसा। जब बिचलै तब होवै कैसा ॥५९॥

राँड़ स्त्री और बिना नाथ का भैंसा यदि बहक जाय, तो क्या हो ?,

घर में नारी आँगन सोवै। रन में चढ़ि के छत्री रोवै ॥
रात को सतुआ करै बिआरी। घाघ मरै तेहि कर महतारी ॥६०॥

घाघ कहते हैं कि जिसकी स्त्री घर में हो पर वह आँगन में सोता है। और जो क्षत्रिय रण में चढ़ कर रोता है और जो आदमी रात में सतुवा का आहार करता है, इन तीनों की माता को मर जाना चाहिये। ये व्यर्थ ही जन्मे हैं।

जेकर ऊँचा बैठना जेकर खेत निचान।
ओकर बैरी का करै जेकर मीत दिवान ॥६१॥

जिस किसान का उठना-बैठना ऊँचे दरजे के आदमियों में होता है, या जिसकी बैठक ऊँची है; और खेत आस-पास की ज़मीन से नीचा है तथा राजा का दिवान जिसका मित्र है, उसका शत्रु क्या कर सकता है ?

घर की खुनुस औ जर की भूख। छोट दमाद बराहे ऊख ॥
पातर खेती भकुवा भाइ। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय ॥६२॥

घर में रात-दिन की लड़ाई, ज्वर के बाद की भूख, कन्या से छोटा दामाद, सूखती हुई ईख, कमज़ोर खेती और निबु॔द्धि भाई, ये ऐसे दुःख हैं कि घाघ कहते हैं कि कहाँ समायँगे ?

काँटा बुरा करील का औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून की औ साझे का काम ॥६३॥

करील का काँटा, बदली के बाद होनेवाली धूप, सौत चाहे आटे ही की हो, साझे का काम, ये चारो बुरे हैं।

माघ मास की बादरी औ कुवार का घाम।
यह दोनों जो कोउ सहै करै परावा काम ॥३४॥

माघ की बदली और कुवार का घाम, ये दोनों बड़े कष्टदायक होते हैं। इन्हें जो सह सके, वही पराया काम कर सकता है।

परमुख देखि अपन मुख गोवै। चूरी कंकन बेसरि टोवै ॥
आँचर टारि के पेट दिखावै। अब का छिनारि डंका बजावै ॥६५॥

जो स्त्री दूसरे का मुँह देखकर अपना मुँह ढक लेती है ; चूड़ी, कंगन और बेसर (नथ) टोने लगती है; फिर आँचल हटाकर पेट दिखलाती है; वह क्या अब डंका बजाकर कहेगी कि मैं छिनाल (व्यभिचारिणी) हूँ ?

खेत न जोतै राढ़ी । न भैंस बेसाहै पाड़ी ।
न मेहरि मर्द क छाड़ी ॥६६॥

उसरहा खेत न जोतना चाहिये; न पाड़ो (भैंस का बच्चा) खरीदना चाहिये और न दूसरे मर्द की छोड़ी हुई स्त्री से ब्याह करना चाहिये ।

सावन घोड़ी भादौं गाय । माघ मास जो भैंस बिआय ॥
कहै घाघ यह साँची बात । आप मरै कि मलिकै खात ॥६७॥

यदि सावन में घोड़ी, भादों में गाय और माघ के महीने में भैंस ब्याये, तो घाघ यह सच्ची बात कहते हैं कि या तो वह स्वयं मर जायगी या मालिक ही को खा जायगी ।

धौले भले हैं कापड़े धौले भले न बार ।
आछी काली कामरी काली भली न नार ॥६८॥

सफेद कपड़े अच्छे लगते हैं, पर सफेद बाल अच्छे नहीं लगते । काली कमली अच्छी लगती है, पर काली स्त्री अच्छी नहीं लगती ।

हरहट नारि बास एकबाह । परुवा बरद सुहुत हरवाह ॥
रोगी होइ होइ इकलन्त । कहैं घाघ ई बिपति का अन्त ॥६९॥

कर्कशा स्त्री, अकेले बसना, पराया बैल, सुस्त हलवाहा, रोगी होकर अकेले पड़े रहना, घाघ कहते हैं कि इनसे बढ़कर विपत्ति नहीं ।

ताका भैंसा गादर बैल । नारि कुलच्छनि बालक छैल ॥
इनसे बाँचें चातुर लोग । राज छाड़ि के साधै जोग ॥७०॥

ताका (जिसकी आँखें दो तरह की हों) भैंसा, गादर (हल में चलते-चलते बैठ जानेवाला) बैल, बुरे लक्षणों वाली स्त्री, और शौकीन बेटे से चतुर लोग बचते रहें । इनकी संगति में यदि राज-सुख हो, तब भी उसे छोड़कर फकीरी अच्छी है ।

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान । ममिला बिगरै साँझ बिहान ॥ ७१॥

यदि ठाकुर (राजा, ज़मींदार) बालक हो और उसका दिवान बुड्ढा हो, तो उन दोनों में मेल नहीं रह सकता। उनमें सुबह-शाम, किसी वक्त झगड़ा हो ही जायगा।

ना अति बरखा ना अति धूप। ना अति बकता ना अति चूप ॥७२॥

न बहुत बर्षा ही अच्छी न बहुत धूप ही अच्छी। इसी प्रकार न बहुत बोलना अच्छा है, न बहुत चुप रहना ही।

ऊँच अटारी मधुर बतास। कहैं घाघ घरहीं कैलास ॥ ७३ ॥

ऊँची अटारी हो और मंद-मंद हवा बह रही हो, तो घाघ कहते हैं कि घर ही में स्वर्ग है।

पाठान्तर—ऊँच चौतरा=ऊँच चबूतरा।

तीन बैल दो मेहरी। काल बैठ बा डेहरी ॥ ७४ ॥

जिस किसान के तीन बैल और दो स्त्रियाँ हों, समझो कि उसके दरवाज़े पर मृत्यु बैठी है।

बिन बैलन खेती करै। बिन भैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करै चौदह साख लबार ॥ ७५ ॥

जो गृहस्थ यह कहता है कि मैं बिना बैलों के खेती करता हूँ; बिना भाइयों की सहायता के दूसरों से झगड़ा करता हूँ और बिना स्त्री के गृहस्थी चलाता हूँ, वह चौदह पुश्तों का झूठा है।

ढिलढिल बेंट कुदारी। हँसि के बोलै नारी॥
हँसि के माँगै दामा। तीनों काम निकामा॥ ७६ ॥

कुदाल का बेंट ढीला होना, स्त्री का हँसकर बात करना और हँसकर दाम माँगना ये तीनों काम अच्छे नहीं हैं।

उत्तम खेती मध्यम बान। निषिद चाकरी भीख निदान ॥ ७७ ॥

खेती का पेशा सबसे अच्छा है। वाणिज्य (व्यापार) मध्यम और नौकरी निषिद्ध है। और भीख माँगना तो सबसे बुरा है।

खेती करै बनिज को धावे। ऐसा डूबै थाह न पावै ॥ ७८ ॥

जो आदमी खेती भी करता है और व्यापार के लिये भी दौड़ता फिरता

है, वह ऐसा डूबता है कि उसे थाह भी नहीं मिलती। अर्थात् उसे किसी में भी सफलता नहीं मिलती।

सब के कर। हर के तर॥ ७९॥

भगवान् के हाथ के नीचे सभी के हाथ हैं। अथवा सारे काम-धंधे हल पर निर्भर हैं।

जाको मारा चाहिये बिन मारे बिन घाव।
वाको यही बताइये घुइयाँ पूरी खाव॥ ८०॥

बिना चोट पहुँचाये हुये किसी को मारना चाहो, तो उसे यह सलाह दो कि वह अरवी का तरकारी और पूरी खाया करे।

कीड़ी संचै तीतर खाय। पापी को धन पर ले जाय॥ ८१॥

कीड़ी (चींटी) अन्न जमा करती है, तीतर उसे खा जाता है। इसी प्रकार पापी का धन दूसरे लोग उड़ा लेते हैं।

भइँसि सुखी जो डबहा भरै। राँड़ सुखी जा सबका मरै॥ ८२॥

बरसात के पानी से गड्ढे भर जायँ तो भैंस बड़ी ही ख़ुश होती है। इसी प्रकार राँड़ तब ख़ुश होती है, जब सभी स्त्रियाँ राँड़ हो जायँ।

भेदिहा सेवक सुन्दरि नारि। जीरन पट कुराज दुख चारि॥ ८३॥

भेद जाननेवाला नौकर, सुन्दरी स्त्री, पुराना वस्त्र और दुष्ट राजा, ये चार दुःख हैं। क्योंकि बड़ी सावधानी से इनकी सँभाल करनी पड़ती है।

मारि के टरि रहु। खाइ के परि रहु॥ ८४॥

मारकर टल जाओ और खाकर लेट जाओ।

खाइ के मूतै सूतै बाउँ। काहे क बैद बसावै गाउँ॥ ८५॥

खाकर पेशाब करे और फिर बाईं करवट लेट जाय, तो बैद्य को गाँव में बसाने की क्या ज़रूरत है?

पाठान्तर—बसावै = बुलावै।

रहै निरोगी जो कम खाय। बिगरै काम न जो गम खाय॥ ८६॥

भूख से कम खानेवाला नीरोग रहता है। इसी प्रकार जो ग़ुस्से को पचा जाया करे, तो काम न बिगड़े।

प्रातकाल खटिया ते उठि कै पिअइ तुरंतै पानी।
कबहूँ घर में बैद न अइहैं बात घाघ कै जानी॥ ८७॥

प्रातःकाल खाट पर से उठते ही तुरन्त पानी पी लिया करे तो कभी बीमार न हो। यह बात घाघ की अजमाई हुई है।

सावन भैंसा माघ सियार। अगहन दरजी चैत चामार॥ ८८॥

सावन में भैंसा, माघ में सियार, अगहन में दरजी और चैत में चमार मोटे हो जाते हैं।

मारा चोर उपासा पाहुन॥ ८६॥

जो चोर मारापीटा गया हो और जो मेहमान उपवास करके गया हो, ये फिर लौटकर नहीं आते।

खेती की कहावतें

उत्तम खेती जो हर गहा। मध्यम खेती जो सँग रहा॥
जो पूछेसि हरवाहा कहाँ। बीज बूड़िगे तिनके तहाँ॥ १॥

जो स्वयं अपने हाथ से हल चलाता है, उसकी खेती उत्तम; जो हलवाहे के साथ रहता है, उसकी मध्यम; और जिसने पूछा कि हलवाहा कहाँ है? उसका तो बीज बोना ही व्यर्थ है।

उत्तम खेती आप सेती। मध्यम खेती भाई सेती॥
निकृष्ट खेती नौकर सेती। बिगड़ गई तो बलाय सेती॥ २॥

जो स्वयं करे, वह खेती उत्तम; जो भाई से करावे, वह मध्यम; और जो नौकर से करावे, वह निष्कृष्ट है। यदि बिगड़ गई, तो नौकर की बला से।

जो हल जोतै खेती वाकी। और नहीं तो जाकी ताकी॥ ३॥

जो अपने हाथ से हल जोते, उसी की खेती खेती है। नहीं तो जिस-तिसकी है।

कहा होय बहु बाहें। जोता न जाय थाहें॥ ४॥

यदि गहरा जोता न जाय, तो बहुत बार जोतने से क्या होगा?

खेत बेपनिया जोतो तब। ऊपर कुँआ खोदाओ जब॥ ५॥

जिस खेत में पानी न पहुँचता हो, उसे तब जोतो, जब उसके ऊपर कुवाँ खोदाओ।

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै। बरखा होइ भूइँ जल बुड़ै॥ ६॥

यदि गिरगिट पेड़ पर उलटा होकर अर्थात् पूँछ ऊपर की ओर करके चढ़े, तो समझना चाहिये कि इतनी वर्षा होगी कि पृथ्वी पानी से डूब जायगी।

पछियाँवँ क बादर। लबार क आदर॥ ७॥

जो बादल पश्चिम से या पश्चिम की हवा से उठता है, वह नहीं बरसता। जैसे लाबर आदमी का किया हुआ आदर निष्फल होता है।

एक मास ऋतु आगे धावै। आधा जेठ असाढ़ कहावै॥ ८॥

मौसम एक महीना आगे चलता है। आधे जेठ ही से आषाढ़ समझना चाहिए और खेती की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

दिन को बादर रात को तारे। चलो कंत जहँ जीवैं बारे॥ ९॥

दिन में बादल हों और रात में तारे दिखाई पड़ें, तो सूखा पड़ेगा। हे नाथ! वहाँ चलो, जहाँ बच्चे जीवित रह सकें।

ढेले ऊपर चील जो बोलै। गली गली में पानी डोलै॥ १०॥

यदि चील ढेले पर बैठ कर बोले, तो समझना चाहिये कि इतना पानी बरसेगा कि गली-कूचे पानी से भर जायँगे।

अम्झाझोर चलै पुरवाई। तब जानो बरखा ऋतु आई॥ ११॥

यदि पुर्वा हवा ऐसे ज़ोर से बहे कि आम झड़ पड़ें, तो समझना चाहिये कि वर्षा-ऋतु आ गई।

माघ क ऊखम जेठ का जाड़। पहिलै बरखा भरिगा ताल॥
कहैं घाघ हम होब बियोगी। कुँआ के पानी धोइहैं धोबी॥ १२॥

यदि माघ में गरमी पड़े और जेठ में जाड़ा हो और पहली ही वर्षा से तालाब भर जाय, तो घाघ कहते हैं कि ऐसा सूखा पड़ेगा कि हमें परदेश जाना पड़ेगा और धोबी लोग कुएँ के पानी से कपड़ा धोयेंगे।

रात करे घापघूप दिन करे छाया। कहैं घाघ वर्षा गया॥ १३॥

यदि रात में खूब घटा घिर आये और दिन में बादल तितर-बितर हो जायँ और उनकी छाया पृथ्वी पर दौड़ने लगे, तो घाघ कहते हैं कि वर्षा को गई हुई समझना चाहिये।

बहुत करे सो और को। थोड़ी करै सो आप को॥ १४॥

खेती ज्यादा करने से दूसरों को लाभ पहुँचता है, थोड़ी करने से अपने को।

खेती तो थोड़ी करे । मिहनत करे सिवाय ।
राम चहैं वही मनुष को । टोटा कभी न आय ॥ १५ ॥

जो खेती थोड़ी और मेहनत अधिक करेगा, ईश्वर चाहेंगे, तो उस किसान को कभी किसी चीज़ की कमी न रहेगी ।

खेती तो उनको । जो करे अन्हान अन्हान ॥
और उनकी क्या खेती । जो देखे साँझ बिहान ॥ १६ ॥

खेती तो उनकी है, जो स्वयं अपने हाथ से हल जोतते हैं । और जो सबेरे-शाम देखने जाते हैं; उनकी क्या खेती है ?

खेती वह जो खड़ा रखावै । सूनी खेती हरिना खावै ॥

खेती उसकी है जो प्रतिदिन उसकी मेड़ पर खड़े होकर रखवाली करे । खाली खेत को तो हिरन आदि पशु चर जाते हैं ।

बोघा बायर होय बाँध जो होय बँधाये ॥
भरा भुसौला होय बबुर जो होय बुवाये ॥
बढ़ई बसे समीप बसूला बाढ़ धराये ॥
पुरखिन होय सुजान बिया बोउनिहा बनाये ॥
बरद बगौधा होय बरदिया चतुर सुहाये ॥
बेटवा होय सपूत कहे बिन करे कराये ॥ १८ ॥

खेती करने वाले के पास इतनी चीज़ें हों, तो वह अच्छा किसान कहा जायगा—सब खेत एक चक हो । खेत के चारोंओर सिंचाई के लिये बाँध बँधे हों । भुसौला (भूसा घर) भरा हुआ हो । बबूल के पेड़ हों । बढ़ई पास बसा हो, जिसका बसूला तेज़ हो । घर की मलकिन गृहस्थी के धंधे में होशियार हो और बीज को बोने के योग्य तैयार कर रक्खे बैल बगौधे की नस्ल के हों । हलवाहा होशियार और नेक हो । बेटा सपूत हो, जो बाप के बिना कहे काम-काज करे और करा सके ।

उलटा बादर जो चढ़े । विधवा खड़ी नहाय ॥
घाघ कहैं सुन भड्डरी वह बरसे वह जाय ॥ १९ ॥

जब पूर्वा हवा में पश्चिम से बादल चढ़ें और विधवा खड़ी होकर स्नान करे, तब घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! सुन—बादल बरसेंगे और विधवा किसी पुरुष के साथ भाग जायगी।

खेती । खसम सेती ॥
आधो केकी ? जो देखै तेकी ॥
बिगड़ै केकी ? घर बैठे पूछै तेकी ॥ २० ॥

खेती उसी की पूरी है, जो अपने हाथ से करे। आधी उसकी, जो स्वयं निगरानी करे। और जो घर-बैठे पूछ लेता है कि खेती का क्या हाल है ? उसकी खेती बिल्कुल बेकार है।

पहिलै पानि नदी उफनायँ। तौ जानियौ की बरखा नायँ ॥ २१ ॥

पहली ही बार की वर्षा से यदि नदी उफन कर बहे, तो समझना चाहिये कि बरसात अच्छी न होगी।

जौ हर होंगे बरसनहार । काह करेगी दखिन बयार ॥ २२ ॥

दक्खिन की हवा से पानी नहीं बरसता। किन्तु यदि भगवान बरसना चाहेंगे, तो दक्खिन की हवा क्या करेगी ?

माघ में गरमी जेठ में जाड़ । कहैं घाघ हम होब उजाड़ ॥ २३ ॥

माघ में गरमी और जेठ में सरदी पड़े, घाघ कहते हैं कि हम उजड़ जायँगे। अर्थात् पानी न बरसेगा।

ईख तिस्सा । गोहूँ बिस्सा ॥ २४ ॥

ईख की पैदावर तीस गुनी होती है और गेहूँ की बीस गुनी।

असाड़ मास जो गँवहीं कीन। ताकी खेती होवै हीन ॥ २५ ॥

आषाढ़ में जो किसान मेहमानी खाता फिरता है, उसकी खेती कमज़ोर होती है।

अहिर बरदिया बाह्मन हारी। गई सावनी और असाढ़ी ॥ २६ ॥

अहीर और ब्राह्मण यदि हलवाहे हों तो रबी और खरीफ़ दोनों फ़सलें मारी जायँगी।

साँझे धनुक सकारे मोरा। यह दोनों पानी के बौरा॥ २७॥

यदि शाम को इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े और सबेरे मोर बोलें, तो वर्षा बहुत होग.

पाठान्तर—इन्हें देखि हरवाहा दौरा।

अर्थात् पानी बरसेगा और खेत जोतना पड़ेगा, इससे हलवाहे दौड़ पड़े।

पूनो परवा गाज। तो दिना बहत्तर नाजे॥ २८॥

यदि आषाढ़ की पूर्णमासी और प्रतिपदा को बिजली चमके, तो बहत्तर दिन तक वृष्टि होगी।

बयार चले ईसान। ऊँची खेती करो किसाना॥ २९॥

यदि आषाढ़ में ईसान-कोन से हवा चले, तब फ़सल अच्छी होगी।

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावै। ऊँच न बाँधै आड़॥
ऊँचे पर खेती करै। पैदा होवै भाड़॥ ३०॥

थोड़ा जोते, बहुत हेंगावे (सिरावन दे), मेंड़ भी ऊँचा न बाँधे और ऊँची जगह पर खेती करे, तो भड़भड़ा पैदा होगा।

शब्दार्थ—भाड़=भड़भड़ा; एक काँटेदार, चितकबरी पत्तीवाला पौधा, जिसके फूल पीले और कटोरे के आकर के होते हैं। चमार लोग उसके बीज का तेल निकालते हैं।

गेहूँ बाहा धान गाहा। ऊख गोड़ाई से है आहा॥ ३१॥

गेहूँ कई बाँह करने से, धान बिदाहने (धान के पौधे उग आवें तब जोतने) से और ईख गोड़ने से अधिक पैदा होती है।

रड़है गेहूँ कुसहै धान। गड़रा की जड़ जड़हन जान॥
फुल्ही घास रो देयँ किसान। वहिमें होय आन का तान॥३२॥

राड़ घास काटकर खेत बनाया जाय तो गेहूँ की, कुस काटकर बनाया जाय तो धान की और गड़रा काटकर बनाया जाय तो जड़हन की पैदावार अच्छी होती है। लेकिन जिस खेत में फुलही घास होती है, उसमें कुछ नहीं पैदा होता और किसान रो देता है।

जब सैल खटाखट बाजै। तब चना खूब ही गाजै॥ ३३॥

खेत में इतने ढेले हों कि हल चलते वक्त बैलों के जुए की सैलें खट-खट बजती रहें, उस खेत में चने की फ़सल अच्छी होगी।

जब बरसै तब बाँधो क्यारी। बड़ा किसान जा हाथ कुदारी ॥ ३४ ॥

जब बरसे, तब क्यारी बाँधनी चाहिये। बड़ा किसान वह है, जिसके हाथ में कुदाल रहती है।

हर लगा पताल। तो टूट गया काल ॥३५॥

यदि हल खूब गहरा चला गया अर्थात् जोत गहरी हुई, तो समझो कि अकाल का भय जाता रहा।

छोटी नसी। धरती हँसी ॥ ३६ ॥

हल का फल छोटा देखकर पृथ्वी हँस देती है। अर्थात् पैदावर अच्छी न होगी।

खेते पाँसा जो न किसाना। उसके घरे दरिद्र समाना ॥ ३७ ॥

जो किसान खेत में खाद नहीं डालता, उसके घर में दरिद्र घुसा रहता है।

मैदे गेहूँ ढेले चना ॥ ३८ ॥

गेहूँ के खेत की मिट्टी मैदे की तरह बारीक हो और चने के खेत में ढेले हों, तब पैदावार अच्छी होती है।

माघ मँघारै जेठ में जारै ॥
भादों सारै—तेकर मेहरी डेहरी पारै ॥३९ ॥

गेहूँ का खेत माघ में जोतना चाहिये; फिर जेठ में; जिससे घास जल जाय। फिर भादों में जोत कर सड़ावे। जो किसान ऐसा करेगा, उसी की स्त्री अन्न भरने के लिये डेहरी (कोठला) बनायेगी।

जोतै खेत घास न टूटे। तेकर भाग साँझ ही फूटै ॥४० ॥

जोतने पर भी यदि खेत की घास न टूटे, तो उसका भाग्य साँझ ही को फूट गया समझना चाहिये।

गहिर न जोतै बोवै धान। सो घर कोठिला भरै किसान ॥ ४१ ॥

धान के खेत को गहरा न जोतकर धान बोवे, इतना धान पैदा हो कि किसान का घर कोठिलों से भर जायगा।

दुइ हर खेती यक हर बारी। एक बैल से भली कुदारी॥ ४२॥

दो हल से खेती और एक से शाक-तरकारी की बाड़ी होती है। और जिस किसान के पास एक ही बैल है, उससे तो कुदाल ही अच्छी है।

कातिक मास रात हर जोतौ। टाँग पसारे घर मत सूतौ॥ ४३॥

कातिक महीने में रात में हल जोतो। टाँग फैलाकर घर में मत सोओ।

आगे गेहूँ पीछे धान। वाको कहिये बड़ा किसान॥ ४४॥

जो धान बोने से पहले गेहूँ के खेत की जोताई कर चुकता है, उसे बड़ा किसान कहना चाहिये।

दस बाहों का माड़ा। बीस बाहों का गाँड़ा॥ ४५॥

गेहूँ के खेत को दस बार जोतना चाहिये और ईख के खेत को बीस बार।

गेहूँ भवा काहें। असाढ़ के दो बाहें॥ ४६॥

गेहूँ क्यों हुआ? आषाढ़ महीने में दो बार जोत देने से।

तेरह कातिक तीन असाढ़। जो चूका सो गया बजार॥ ४७॥

तेरह बार कातिक में और तीन बार आषाढ़ में जोतने से जो चूका, वह बाजार से ख़रीद कर खायगा। अथवा कातिक में तेरह दिन में और आषाढ़ में तीन दिन में बो लेना चाहिये। जो नहीं बोयेगा, उसे अन्न नहीं मिलेगा।

जेतना गहिरा जोतै खेत। बीज परे फल अच्छा देत॥४८॥

खेत को जितना ही गहरा जोते, बीज पड़ने पर वह उतना ही अच्छा फल देता है।

बाली छोटो भई काहें। बिना असाढ़ की दो बाहें॥ ४९॥

गेहूँ-जौ की बालें छोटी क्यों हुईं? आषाढ़ में दो बार जोता नहीं था, इसलिये।

जोंधरी जोतै तोड़ मड़ोर। तब वह डारै कोठिला फोर॥ ५०॥

मक्के के खेत को खूब उलट-पलट कर जोतना चाहिये। तब वह इतनी पैदा होगी कि कोठिले में न समायगी।

बाहे क्यों न असाढ़ यक बार। अब क्यों बाहै बारम्बार ॥५१॥

अरे किसान! तू ने आषाढ़ में एक बार खेत क्यों न जोता? अब तू बारबार क्यों जोतता है?

तीन कियारी तेरह गोड़। तब देखौ ऊखो के पोर ॥५२॥

तीन बार सींचो और तेरह बार गोड़ो, तब ऊख अच्छी उगेगी।

गेहूँ भवा काहें। सोलह बाहें—नौ गाहें ॥५३॥

गेहूँ की पैदावार अच्छी क्यों हुई? सोलह बार जोतने और नौ बार हेंगाने से।

मेंड़ बाँध दस जोतन दे। दस मन बिगह मोसे ले ॥५४॥

मेंड़ बाँधकर दस बार जोतने दो, तो फी बीघा दस मन की पैदावार मुझसे लो।

असाढ़ जोतै लड़के बारे। सावन भादों में हरवाहे॥
कुआर जोतै घर का बेटा। तब ऊँचे हो होनहारे ॥५५॥

आषाढ़ में छोटे लड़के भी जोतें तो कोई हर्ज नहीं; सावन में हलवाहा जोते और कुआर में गृहस्थ का बेटा खेत जोते, तब भाग्य ऊँचा हो।

थोर जोताई बहुत हेंगाई ऊँचे बाँधै आरी।
उपजै तो उपजै नाहीं घाघै देवै गारी ॥५६॥

थोड़ा जोतने से, बहुत बार सिरावन देने से और ऊँचा मेंड़ बाँधने से यदि अन्न उपजा तो उपजा, नहीं तो घाघ को गाली देना! अर्थात् अन्न शायद ही उपजे!

नौ नसी—न एक कसी ॥५७॥

नौ बार हल से जोतने से एक बार फावड़े से खोदकर मिट्टी को उलट देना अच्छा है।

सरसे अरसी—निरसे चना ॥५८॥

खेत में तरी हो तो अलसी और खुश्की हो तो चना बोना चाहिये।

गेहूँ भवा काहें---सोलह दायँ बाहें ॥५९॥

गेहूँ क्यों हुआ ? सोलह बार के जोतने से !

जेहि घर साले सारथी तिरिया को हो सीख।
सावन में बिन हल लवै तीनों माँगैं भीख ॥६०॥

जिस घर में साला गृहस्थी की गाड़ी चलाता हो, अर्थात् साला ही प्रधान हो; जिस घर में स्त्री ही की सलाह चलती हो और सावन में जो किसान बिना हल का हो, वे तीनों भीख माँगेंगे !

एक हर हत्या दो हर काज। तीन हर खेती चार हर राज ॥६१॥

एक हल की खेती हत्या है; दो हल की खेती काम-चलाऊ है; तीन हल की खेती खेती है और चार हल की खेती तो राज ही है।

जोत न मानै अरसी चना। कहा न मानै हरामी जना ॥६२॥

अलसी और चना अधिक जोताई नहीं चाहते। जैसे हरामी आदमी कहा नहीं मानता।

गेहूँ भवा काहें—कातिक के चौबाहें ॥६३॥

गेहूँ क्यों हुआ ? कातिक में चार बार जोतने से।

खाद परै तो खेत। नहीं तो कूड़ा रेत ॥६४॥

खाद पड़ने ही से खेती हो सकती है। नहीं तो कूड़ा-करकट और रेत के सिवा कुछ नहीं होगा।

गोबर मैला नीम की खली। यासे खेती दूनी फली ॥६५॥

गोबर, पाखाना और नीम की खली डालने से खेती में दूना पैदा होता है।

गोबर मैला पानी सड़ै। तब खेती में दाना पड़ै ॥६६॥

खेत में गोबर, पाखाना और पत्ती सड़ने से दाना अधिक होता है।

खेती करै खाद से भरै। सौ मन कोठिला में लै धरै ॥६७॥

खेती करे, तो खेत को खाद से पाट दे। तब सौ मन अन्न कोठिला में लाकर रक्खे।

गोबर, चोकर, चकवर, रूसा। इनको छोड़े होय न भूसा ॥६८॥

गोबर, चोकर, चकवन और अडूसे की पत्तियाँ खेत में छोड़ने से भूसा नहीं होता है। अर्थात् अन्न ज्यादा उपजता है।

जेकरे खेत पड़ा नहिँ गोबर। वहि किसान को जान्यो दूबर ॥६६॥

जिस किसान के खेत में गोबर नहीं पड़ा, उसे कमज़ोर समझना चाहिये।

कोठिला बैठी बोली जई। आधे अगहन काहे न बई ॥

या

खिचड़ी खाकर क्यों नहिँ बई ॥

जो कहुँ बोते बिगहा चार। तो मैं डरतिउँ कोठिला फारि ॥७०॥

कोठिले में बैठी हुई जई ने कहा—मुझे आधे अगहन में क्यों नहीं बोया? या खिचड़ी खाकर क्यों नहीं बोया? यदि तुम चार बीघा भी बोते तो मैं इतनी पैदा होती कि कोठिले में न समाती।

शब्दार्थ—खिचड़ी = मकर की संक्रान्ति का एक त्योहार।

अगहन बवा। कहूँ मन कहूँ सवा ॥७१॥

अगहन में यदि जौ-गेहूँ बोया जायगा, तो बीघा-पीछे कहीं मन भर होगा, कहीं सवा मन। अर्थात् उपज कम होगी।

पुक्ख पुनर्वस बोवै धान। असलेखा जोन्हरी परमान ॥७२॥

पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान बोना चाहिये और अश्लेषा में मक्का (जोन्हरी)।

आधे हथिया मूरि मुराई। आधे हथिया सरसों राई ॥७३॥

हस्त नक्षत्र के प्रारम्भ में मूली आदि और अंत में सरसों और राई आदि बोना चाहिये।

अगहन जो कोउ बोवै जौवा। होइ तो होइ नहिँ खावै कौवा ॥७४॥

अगहन में यदि कोई जौ बोवेगा, तो, पहले तो होगा ही नहीं। यदि होगा भी, तो कौवे खायँगे। क्योंकि फ़सल सबसे पीछे तैयार होगी और कौवे उसे खाने के लिये फ़ुरसत में रहेंगे।

गेहूँ बाहें। धान बिदाहें ॥७५॥

गेहूँ का खेत कई बार जोतने से और धान का खेत बिदाहने (धान के उग आने पर फिर जोतवा देने से) पैदावार अच्छी होती है ।

साँवन साँवाँ अगहन जवा । जितना बोवै उतना लवा ॥७६॥

सावन में साँवाँ और अगहन में जितना जौ बोया जायगा, उतना ही काटा जायगा । अर्थात् उपज कम होगी ।

चित्रा गोहूँ अद्रा धान । न उनके गेरुई न इनके घाम ॥७७॥

चित्रा में गेहूँ और आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से गेहूँ को गेरुई नहीं लगती और धान को धूप नहीं सताती ।

अद्रा धान पुनर्बसु पैया । गया किसान जो बोवै चिरैया ॥७८॥

आर्द्रा में धान बोना चाहिये । पुनर्वसु में बोने से केवल पैया (बिना चावल का धान) हाथ आयेगा । और पुष्य में बोने से कुछ न होगा ।

कच्चा खेत न जोतै कोई । नाहीं बीज न अँकुरै कोई ॥७९॥

गीला खेत न जोतना चाहिये; नहीं तो उसमें बीज नहीं जमेगा ।

सब कार हर तर । जो खसम सीर पर ॥८०॥

अगर मालिक स्वयं सीर का सब काम करे, तो खेती कुल पेशों से उत्तम है ।

जब बर्र बरौठे आई । तब रबी की होय बोआई ॥८१॥

जब बर्र घर में उड़ती हुई आवे, तब रबी की बुआई होनी चाहिये ।

हस्त न बजरी चित्र न चना । स्वाति न गोहूँ बिसाख न धना ॥८२॥

हस्त में बाजरी, चित्रा में चना, स्वाती में गेहूँ और विशाखा में धान न बोना चाहिये ।

ऊगो हरनी फूली कास । अब का बोये निगोड़े मास ॥८३॥

हरिणी तारा उदय हो गया और कास में फूल आ गया । ऐ मूर्ख ! अब तू ने उड़द क्यों बोया ?

मारूँ हरनी तोड़ूँ कास । बोऊँ उर्द हथिया की आस ॥८४॥

हरिणी तारा को मार डालूँगा, अर्थात् उसकी कुछ परवा नहीं; कास को तोड़ डालूँगा; मैं तो हथिया नक्षत्र की आशा से उड़द बो रहा हूँ !

अगाई । सो सवाई ॥८५॥

आगे बोनेवाला औरों से सवाया अन्न पाता है ।

कातिक बोवै अगहन भरै । ताको हाकिम फिर का करै ॥८६॥

जो कातिक में बोता है और अगहन में सींचता है । उसका हाकिम क्या कर सकता है ? अर्थात् वह लगान आसानी से दे सकता है।

बोवै बजरा आये पुक्ख । फिर मन कैसे पावै सुक्ख ॥८७॥

पुष्य नक्षत्र आने पर बाजरा बोओगे, तो मन कैसे सुख पायेगा ?

पुरबा में जिन रोपो भइया । एक धान में सोलह पइया ॥८८॥

हे भाई ! पूर्वा नक्षत्र में धान न रोपना; नहीं तो एक धान में सोलह पैया होंगी ।

अद्रा रेंड पुनरबस पाती । लाग चिरैया दिया न बाती ॥८९॥

धान आर्द्रा में बोया जायगा तो डंठल कड़े होंगे, पुनर्वसु में पत्तियाँ अधिक होंगी । चिरैया लगने पर बोया जायगा तो घर में अँधेरा ही रहेगा ।

बुद्ध बृहस्पति दो भले सुक्र न भले बखान ।
रवि मंगल बौनी करै, द्वार न आवै धान ॥९०॥

बोने के लिये बुध-बृहस्पति दो दिन अच्छे हैं । शुक्र अच्छा नहीं है । रविवार और मंगलवार को बोने से अन्न लौट कर घर नहीं आता ।

नरसी गेहूँ सरसी जवा । अति के बरसे चना बवा ॥९१॥

गेहूँ को ज़रा ख़ुश्क खेत में और जौ को तर खेत में बोना चाहिये । और यदि बहुत पानी बरसे, तो चना बोना चाहिये ।

हरिन फलाँगन काकरी, पैगे पैग कपास ।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखार ॥९२॥

हरिन को छलाँग-छलाँग पर ककड़ी, और एक-एक कदम पर कपास बोना चाहिये । किसान से जाकर कहो कि ऊख को घनी बोवे ।

पाठान्तर—अस करि बोउ सनैया, सँचरै नाहिं बतास ।

अर्थात्, सन को इतना घना बोना चाहिये कि इसमें हवा प्रवेश न कर सके ।

मक्का जोन्हरी औ बजरी । इनको बोवे कुछ बिड़री ॥९३॥

मक्का, ज्वार और बाजरे को कुछ बिड़र (छीदा) बोना चाहिये।

घनी घनी जब सनई बोवै। तब सुतरी की आसा होवै ॥९४॥

सनई को घनी बोने से सुतली की आशा होगी।

कदम कदम पर बाजरा, मेढक कुदौनी ज्वार।
ऐसे बोवै जौ कोई, घर घर भरै कोठार ॥९५॥

एक-एक कदम पर बाजरा और मेढक की कुदान पर ज्वार जो कोई बोवे, तो घर- घर का कोठिला भर जाय।

छीछो भली जौ चना, छीछो भली कपास।
जिनकी छीछी ऊखड़ी, उनकी छोड़ो आस ॥९६॥

जौ और चना छीदे-छीदे अच्छे। कपास भी छीदी अच्छी। पर जिनकी छीदी है, उनकी आशा छोड़ो।

सना घना बन बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार।
पैर पैर पर बाजरा, करै दरिद्रै पार ॥९७॥

सन को घना, कपास को छीदा-छीदा, ज्वार को मेढक की कुदान पर और बाजरे को एक-एक कदम पर बोवे, तो दरिद्रता से पार हो जाय।

कुड़हल भदईं बोओ यार। तब चिउरा की होय बहार ॥९८॥

कुड़हल ज़मीन में भादों को फ़सल बोओ, तब चिउड़ा खाने को मिलेगा। अथवा धरती खोदकर भदई धान बोओ।

शब्दार्थ—कुड़हल = वह ज़मीन जो जेठ में धान बोने के लिये तैयार की जाती है। अथवा धरती खोदकर।

बाड़ी में बाड़ी करैं, करै ईख में ईख।
वे घर योंहीं जायँगे, सुनै पराई सीख ॥९९॥

जो कपास के खेत में कपास और ईख के खेत में फिर बोता है। और पराई सीख सुनता है, उसका घर यों हीं नष्ट हो जायगा।

साठी में साठी करै, बाड़ी में बाड़ी।
ईख में जो धान बोवै, फूँको बाकी दाढ़ी ॥१००॥

जो साठी के खेत में फिर साठी बोता है; कपास के खेत में कपास और

चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गेहूँ होय ॥११५॥

चित्रा में चना और स्वाती में गेहूँ बोने से चौगुनो पैदावार होती है।

रोहिनि मृगसिर बोये मक्का। उरद मडुआ दे नहिं टका॥
मृगसिर में जो बोये चेना। ज़मींदार को कुछ नहीं देना॥
बोये बाजरा आया पुख। फिर मन माना भोगा सुख ॥११६॥

मक्का, उड़द और मड़वा रोहिणी और मृगशिरा में बोने से अच्छी पैदावार नहीं होती। मृगशिरा में यदि चेना बो दोगे तो जमींदार को देने भर के लिये भी पैदा न होगा। और पुष्य में यदि बाजरा बोओगे तो मनमाना आराम पाओगे।

या तो बोओ कपास औ ईख। ना तो माँग के खाओ भीख ॥११७॥

या तो कपास या ईख बोओ या भीख माँगकर खाओ।

ईख तक खेती—हाथी तक बनिज ॥११८॥

ईख से बढ़कर कोई खेती नहीं, और हाथी के व्यापार से बड़ा कोई व्यापार नहीं।

जो तू भूखा माल का। तो ईख कर ले नाल का ॥११९॥

अगर तुझे बहुत धन चाहिए, तो उस ज़मीन में ईख बो, जो फागुन से फागुन तक तैयार की जाती है।

सभी किसान हेठी। अगहनिया पानी जेठी ॥१२०॥

अगहन में खेत सींचने से बढ़कर कोई किसानी नहीं।

धान, पान, उखेरा। तीनों पानी के चेरा ॥१२१॥

धान, पान और ईख तीनों पानी के गुलाम हैं।

धान पान औ खीरा। तीनों पानी के कीरा ॥१२२॥

धान, पान और खीरा तीनों पानी के जीव हैं।

उठके बजरा यो हँस बोले। खाये बूढ़ जुवा हो जाय ॥१२३॥

बाजरा ने उठकर कहा कि मुझे यदि बुड्ढा खाय तो जवान हो जाय।

लाग बसन्त। ऊख पकन्त ॥१२४॥

बसन्त लगा अब ईख पक गई।

ऊख गोड़िके तुरत दबावै। तो फिर ऊख बहुत सुख पावै ॥१२५॥

ईख गोड़ कर तुरन्त ही उसे दबा दे, तो ईख बहुत सुख पाती है।

रूँध बाँध के फाग दिखाये। सो किसान मोरे मन भाये ॥१२६॥

ईख कहती है कि होली में पहले जो किसान मुझे अच्छी तरह रूँध देता है। अर्थात् होली तक मैं उग आती हूँ, वह मुझे बहुत पसंद है। अथवा जो मुझे होली तक रूँध और बाँध देता है, वह मुझे बहुत प्रिय लगता है।

खेती करै ऊख कपास। घर करै व्यवहरिया पास ॥१२७॥

ईख और कपास की खेती करे और समय पड़ने पर धन उधार देनेवाले के पास बसे, तो सुख मिलता है।

ऊख सरवती दिवला धान। इन्हें छाड़ि जनि बोओ आन ॥१२८॥

सरौती (एक प्रकार की पतली ईख) और देहुला (एक क़िस्म का धान) छोड़कर दूसरे क़िस्म की ईख और धान न बोवो।

नोट—सरौती ईख का गुड़ अच्छा होता है, और देहुला धान का चावल पुष्टिकारक होता है।

जो कपास को नाहीं गोड़ी। उसके हाथ न आवै कौड़ी ॥१२९॥

जिसने कपास को नहीं गोड़ा, उसके हाथ कौड़ी भी न लगेगी।

कपास चुनाई। खेत खनाई ॥१३०॥

कपास चुनने से और खेत खोदने से लाभदायक होता है।

तरकारी है तरकारी। या में पानी की अधिकारी ॥१३१॥

तरकारी को तर रखना चाहिये। इसमें पानी की अधिकता चाहिए।

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल। चढ़त सेवाती झम्पा झूल ॥१३२॥

हस्त नक्षत्र में जड़हन में डंठल निकलना शुरू होता है, चित्रा में फूल आ जाता है और स्वाती के प्रारम्भ में बालें लटक पड़ती हैं।

साठी होवै साठवें दिन। जब पानी पावै आठवें दिन ॥१३३॥

साठी (चावल) यदि आठवें दिन पानी पाता जाय, तो साठ दिन में तैयार हो जाता है।

सावन भादौं खेत निरावै। तब गृहस्थ बहुतै सुख पावै ॥१३४॥

यदि किसान सावन और भादौं में खेत निरावे, तो बहुत सुख पावेगा।

बाँध कुदारी खुरपो हाथ। लाठी हँसुवा राखै साथ॥
काटै घास औ खेत निरावै। सो पूरा किसान कहवावै ॥१३५॥

वही पूरा किसान है जो कुदाल और खुरपी हाथ में लाठी और हँसुआ साथ में रक्खे; तथा घास काटता रहे और खेत निराता रहे।

काले फूल न पाया पानी। धान मरा अध बीच जवानी ॥१३६॥

धान का फूल जब काला हो चला, तब उसे पानी न मिले, तो वह आधी जवानी ही में मर जायगा।

विधि का लिखा न होई आन। आधे चित्रा फूटै धान ॥१३७॥

चित्रा नक्षत्र के मध्य में धान फूटता है, यह ब्रह्मा का लिखा हुआ बदल नहीं सकता।

दो पत्ती क्यों न निराये। अब बीनत क्यों पछिताये ॥१३८॥

जब कपास में दो पत्तियाँ निकलती थीं, तब तुमने खेत को निराया क्यों नहीं? अब कपास चुनते हुए क्यों पछताते हो?

ठाढ़ी खेती गाभिन गाय। तब जानों जब मुँह में जाय ॥१३९॥

खड़ी खेती और गाभिन गाय को तभी अपना समझना चाहिये, जब वह अपने काम आवे।

चैना जी का लेना। सोलह पानी देना॥
बीस बीसके बच्छा हारे हारे बलम नगीना। हाथ में रोटी बगल में पैना॥
एक बयार बहे पुरवाई। लेना है न देना ॥१४०॥

चेनवा प्राण लेने वाला नाज है। सोलह पानी देना पड़ता है। बीस बीस मुट्ठी के बैल थक गये और हट्टे-कट्टे स्वामी भी थक गये। हाथ में रोटी और बगल में पैना दिन भर लिये रहते हैं। पर यदि एक दिन भी पूर्वी हवा बहा, तो कुछ भी पैदावार न होगी।

मघा मारै पुरवा सँवारै। उत्तरा भर खेत निहारै ॥१४१॥

मघा में यदि जड़हन बो दो, और पूर्वा में देख-भाल करो, तो उत्तरा में खेत को हरा-भरा देखोगे।

चार छावैं, छः निरावैं। तीन खाट, दो बाट ॥१४२॥

छप्पर छाने के लिये चार आदमी चाहिये; निराने के लिये छः; खाट बुनने के लिये तीन और राह चलने के लिये दो चाहिये।

चना सींच पर जब होआवै। ताको पहिले तुरत खुँटावै ॥१४३॥

चना जब सिंचाई के लायक हो, तब सबसे पहले उसे तुरन्त खुँटाना चाहिये।

गेहूँ बाहे चना दलाये। धान गाहें मक्की निराये ॥
ऊख कसाये ॥१४४॥

गेहूँ के खेत को बहुत बार जोतने से, चने को खोंटने से, धान को बार-बार पानी देने से, मक्के को निराने से और ईख को बोने के पहले से पानी में छोड़ रखने से लाभ होता है।

गोहूँ जौ जब पछुवाँ पावै। तब जल्दी से दायाँ जावै ॥१४५॥

गेहूँ और जौ को जब पछुवाँ हवा मिलती है, तब उसका डंठल जल्दी टूटता है।

पछिवाँ हवा ओसावै जोई। घाघ कहै घुन कबहुँ न होई ॥१४६॥

पछुवाँ हवा में यदि नाज ओसाया जाय, तो घाघ कहते हैं कि उसमें घुन कभी न लगेगा।

पहिले छावै तीन घरा। सार भुसौला औ बड़हरा ॥१४७॥

बरसात के पहले पशुओं के रहने, भूसा के रखने और कंडे जमा करने के घर को छाना चाहिये।

दो दिन पछुवाँ छः पुरवाई। गेहूँ जव को लेव दँवाई ॥
ताके बाद ओसावै सोई। भूसा दाना अलगै होई ॥१४८॥

पछुवाँ हवा में दो दिन में और पूर्वा में छः दिन में मड़ाई करालो। इसके बाद ओसावोगे तो उसका भूसा और दाना अलग होगा।

चना अधपका जौ पका काटै। गेहूँ बाली लटका काटै ॥१४९॥

चने को तब काटना चाहिये, जब वह आधा पका हो; जौ पूरा पक जाने पर और गेहूँ की बालें लटक आवें तब काटना चाहिये।

कामिनि गरभ औ खेती पकी। ये दोनों हैं दुर्बल बदी ॥१५०॥

गर्भवती स्त्री और पकी हुई खेती, ये दोनों दुर्बल कही गई हैं।

खेती करै अधिया। न बैल न बधिया ॥१५१॥

अपना खेत दूसरे किसान को, जिसके पास खेत न हो, आधे लाभ पर देकर खेती करानी चाहिये। तब बैल रखने की ज़रूरत ही न पड़ेगी।

पाही जोतै तब घर जाय। तेहि गिरहस्त भवानी खायँ ॥१५२॥

दूसरे गाँव में खेती करनेवाला जो किसान जोत कर फिर घर चला जाया करता है, उसको भवानी खा जायँ तो अच्छा। अर्थात् पाही-काश्त करनेवाले को पाही पर रहना अत्यन्त आवश्यक हैं।

जै दिन भादों बहै पछार। तै दिन पूस में पड़ै तुसार ॥१५३॥

भादौं के महीने में जितने दिन पछुआँ हवा बहेगी, उतने दिन पौष में पाला पड़ेगा।

ऊख कनाई काहे से। स्वाती क पानी पाये से ॥१५४॥

ईख कना क्यों गई? स्वाती का पानी बरस जाने से।

शब्दार्थ—कना=ईख का एक रोग, जिससे डंठल के अन्दर के रेशे लाल रंग के हो जाते हैं, और उतनी दूर का रस और मिठास कम हो जाता है।

जेकरे ऊखर लगै लोहाई। तेहि पर आवै बड़ी तबाही ॥१५५॥

जिसके ईख में लोहाई लग जाती है, उस पर बड़ी तबाही आती है।

शब्दार्थ—लोहाई=एक रोग, जिससे ईख लाल रंग की हो जाती है।

नीचे ओद ऊपर बदराई। घाघ कहै गेरुई अब धाई ॥१५६॥

खेत गीला हो और आकाश में बादल हों, तो घाघ कहते कि अब गेरुई (नाज का एक रोग है) दौड़ेगी।

फागुन मास बहै पुरवाई। तब गेहूँ में गेरुई धाई ॥१५७॥

फागुन के महीने में यदि पूर्वा हवा बहे, तो गेहूँ में गेरुई लगेगी।

माघ पूस बहै पुरवाई। तब सरसों का माहूँ खाई ॥१५८॥

माघ और पौष में यदि पूर्वा हवा बहे, तो सरसों को माहूँ (एक कीड़ा) खायगा।

बायु चलैगी दखिना। मॉड़ कहाँ से चखना ॥१५६॥

दक्खिन की हवा चलेगी, तो धान नहीं होगा। मॉड़ कहाँ से खाओगे ?

कुम्भे आवै मीने जाय। पेड़ी लागै पाती खाय ॥१६०॥

फागुन के प्रारम्भ में गेरुई रोग लगता है और चैत में चला जाता है। तने से शुरू होता है और पत्तियाँ खा जाता है।

गोहूँ गेरुई गांधी धान। बिना अन्न के मरा किसान ॥१६१॥

गेहूँ में गेरुई और धान में गाँधी रोग लग जाने से किसान पर बड़ी तबाही आती है।

पाठान्तर—गाँधी = चरका।

माघ में बादर लाल धरै। तब जान्यो साँचो पथरा परै ॥१६२॥

माघ में यदि लाल रंग के बादल हों, तो जानना कि सचमुच पत्थर पड़ेगा।

चना में सरदी बहुत समाई। ताको जान गधैला खाई ॥१६३॥

चने में यदि सरदी बहुत समा जायगी, तो उसमें गदहिला (एक कीड़ा) लग जायँगे।

जब वर्षा चित्रा में होय। सगरी खेती जावै खोय ॥१६४॥

यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा हो, तो सारी खेती बरबाद जायगी।

मघा में मक्कर पुरबा डाँस। उत्तरा में भई सब की नास ॥१६५॥

मघा नक्षत्र में मकड़ा-मकड़ी और पूर्वा में डाँस पैदा होते हैं और उत्तरा में सब नष्ट हो जाते हैं।

साँवाँ साठी साठ दिना। जब पानी बरसै रात दिना ॥१६६॥

यदि रात-दिन पानी बरसता रहे तो साँवाँ और साठी (धान) साठ दिन में तैयार हो जात हैं।

मघा के बरसे माता के परसे। भूखा न माँगे फिर कुछ हर से ॥१६७॥

मघा के बरसने से और माता के परोसने से ऐसी तृप्ति होती है कि भूखा आदमी फिर भगवान् से कुछ नहीं माँगता।

चढ़त जो बरसै चित्रा, उतरत बरसै हस्त।
कितनौ राजा डाँड़ ले, हारे नहिँ गृहस्त ॥१६८॥

यदि चित्रा नक्षत्र चढ़ते समय बरसे और हस्त उतरते समय, तो इतनी अच्छी पैदावार होगी कि राजा कितना ही दंड ले, पर गृहस्थ नहीं हारेगा।

पाठान्तर—सुखी रहे गिरहस्त।

मघा—भुम्मि अघा ॥१६९॥

मघा पृथ्वी को अघा देता है।

चीत के बरसे तीन जायँ—मोथी, मास, उखार ॥१७०॥

चित्रा के बरसने से तीन फसलों की हानि है—मोथी, उर्द और ईख की।

जो बरसे पुनर्बस स्वाति। चरखा चले न बोले ताँति ॥१७१॥

पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र के बरसने से कपास की खेती मारी जाती है। न चरखा चलता है और न रुई धुनी जाती है।

चटका मघा पटकि का ऊसर। दूध भात में परिगा मूसर ॥१७२॥

मघा में यदि पानी न बरसे, तो ऊसर भी सूख जायगा। घास न होने से न दूध मिलेगा और पानी न होने से न चावल।

माघ मास जो परै न शीत। महँगा नाज जानियो मीत ॥१७३॥

माघ के महीने में यदि सरदी न पड़े तो समझ लेना चाहिये कि अन्न महँगा होगा।

माघ पूस जो दखिना चलै। तौ सावन के लच्छन भलै ॥१७४॥

यदि माघ और पौष में दक्षिण को हवा चले तो सावन के लक्षण अच्छे समझने चाहिये।

ऊख करै सब कोई। जो बीच में जेठ न होई ॥१७५॥

यदि बीच में जेठ जैसा गरमी का महीना न हो, तो ईख की खेती सभी कोई करना चाहेगा।

जो कहुँ मग्घा बरसै जल। सब नाजों में होगा फल ॥१७६॥

यदि कहीं मघा में जल बरसे, तो सब अन्नों में फल लगेगा।

हथिया बरसे चित्रा मँडराय। घर बैठे किसान रिरियाय ॥१७७॥

हस्त नक्षत्र बरस रहा है, चित्रा मँडला रहा है अर्थात् बरसने वाला है। किसान खुश होकर घर में बैठा गीत गा रहा है।

हथिया पूछ डोलावै। घर बैठे गाहूँ आवै ॥१७८॥

हस्त नक्षत्र चलते-चलाते भी यदि बरस जाय तो गेहूँ की उपज बिना परिश्रम के बढ़ जायगी।

सावन सूखा स्यारी। भादों सूखा उन्हारी ॥१७९॥

सावन में पानी न बरसे, तो ख़रीफ़ की फसल को हानि पहुँचती है और भादों में पानी न बरसे, तो रबी को नुक़सान पहुँचता है।

पानी बरसै आधे पूस। आधा गाहूँ आधा भूस ॥१८०॥

आधे पौष में यदि पानी बरसे, तो आधा गेहूँ होगा, आधा भूसा। अर्थात् फ़सल अच्छी होगी।

आवत आदर ना दियो, जात न दीनों हस्त।
ये दोऊ पछतायँगे, पाहुन और गृहस्त ॥१८१॥

आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ में और हस्त अन्त में न बरसे, तो गृहस्थ पछतायगा और यदि अतिथि को आते ही सम्मान नहीं दिया और बिदा होते समय कुछ धन हाथ में नहीं दिया, तो वह अतिथि पछतायगा।

हस्त बरसे तीन होय, साली सक्कर मास।
हस्त बरसे तीन जायँ, तिल कोदो कपास ॥१८२॥

हस्त के बरसने से धान, ईख और उड़द की पैदावार अच्छी होती है। लेकिन तिल, कोदो कपास मारी जाती है।

यक पानी जो बरसै स्वाती। कुरमिन पहिरै सोने क पाती ॥१८३॥

स्वाती नक्षत्र यदि एक बार भी बरस जाय, तो इतनी अच्छी पैदावार हो कि कुरमिन भी सोने का गहना पहने।

जब बरसेगा उत्तरा। नाज न खावै कुत्तरा ॥१८४॥

उत्तरा बरसेगा तो पैदावार ऐसी अच्छी होगी कि कुत्ते भी अन्न से ऊब जायँगे।

पुक्ख पुनरबस भरे न ताल। फिर बरसेगा लौटि असाढ़ ॥१८५॥

पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्रों में यदि ताल न भरा, तो अगले आषाढ़ में भरेगा।

दिन में गरमी रात में ओस। कहैं घाघ वर्षा सौ कोस ॥१८६॥

यदि दिन में गरमी पड़े और रात में ओस पड़े, तो घाघ कहते हैं कि वर्षा बड़ी दूर है।

लगे अगस्त फुले बन कासा। अब छोड़ो बरखा की आसा ॥१८७॥

अगस्त तारा उदय हुआ और बन में कास फूल आई। अब वर्षा की आशा छोड़ो।

तुलसीदास—उदित अगस्त पंथ जल सोखा।

एक बूँद जो चैत में परै। सहस बूँद सावन में हरै ॥ १८८॥

चैत में यदि एक बूँद भी पानी बरस जाय, तो वह सावन में हज़ार बूँद हरण कर लेगा। अर्थात् चैत्र में बरसने से सावन में सूखा पड़ेगा।

तपै मृगसिरा जोय। तो बरखा पूरन होय ॥१८६॥

यदि मृगशिरा अच्छी तरह तपे, तो पूरी वर्षा होगी।

जब बहै हड़हवा कोन। तब बनजारा लादै नोन ॥१९०॥

जब पच्छिम-दक्षिण के कोने की हवा बहती है, तब बनजारे को नमक लादना चाहिये। अर्थात् पानी न बरसेगा, नमक के गलने का डर नहीं।

बोली लोखरि फूली कास। अब नाहीं बरखा कै आस ॥१९१॥

लोमड़ी बोलने लगी और कास में फूल आ गये; अब वर्षा को आशा नहीं।

पाठान्तर—बोली गोह फुली बन कास।

दूर गुड़ुसा दूर पानी। नीयर गुड़ुसा नीयर पानी ॥१९२॥

यदि रीवा (एक कीड़ा) पेड़ पर ऊँचे चढ़कर बोले, तो वर्षा को आशा दूर समझनी चाहिये और यदि नीचे बोले, तो वर्षा अति निकट समझी जाती है।

जेठ मास जो तपै निरासा। तो जानो बरखा की आसा ॥१९३॥

जेठ के महीने में जो अच्छी तरह गरमी पड़े, तो वर्षा की आशा है।

करिया बादर जी डरवावै। भूरे बादरे पानी आवै ॥१६४॥

काला बादल केवल डरावना होता है; पर भूरे रंग के बादल बरसता है।

दिन का बादर। सूम का आदर ॥१६५॥

दिन का बादल और सूम का आदर दोनों निष्फल होते है।

धनुष पड़ै बंगाली। मेह साँझ या सकाली ॥१६६॥

यदि बङ्गाल की तरफ़ इन्द्रधनुष निकले, तब वर्षा बहुत निकट समझनी चाहिये। या तो शाम को आयेगी, या सबेरे।

सब दिन बरसै दखिना बाय। कभी न बरसै बरखा पाय ॥१६७॥

दक्षिण से चलनेवाली हवा सब दिनों में पानी बरसाती है; पर वर्षाकाल में नहीं।

पूरब के बादर पच्छिम जायँ। पतली पकावै मोटी पकाय।
पछुवाँ बादर पुरब क जायँ। मोटी पकावै पतली पकाय ॥१६८॥

पूरब के बादल यदि पश्चिम को जायँ, तो यदि पतली रोटी पकाते हो तो मोटी पकाओ। क्योंकि पानी बरसेगा और अन्न होगा।

यदि पश्चिम के बादल पूरब को जायँ, तो यदि मोटी पकाते हो, तो पतली पकाओ। क्योंकि पानी नहीं बसेगा। इसलिये किफ़ायत से खाओ।

ढोकी बोलें जाय अकास। अब नाहीं बरखा कै आस ॥१६६॥

बनमुर्गी यदि आकाश में उड़कर बोले, तो वर्षा की आशा नहीं।

लाल पियर जब होय अकास। तब नाहीं बरखा कै आस ॥२००॥

वर्षाकाल में यदि आकाश लाल-पीला हो जाय, तो वर्षा की आशा न करनी चाहिये।

पुष्य पुनर्बस भरे न ताल। तो फिर भरिहैं अगली साल ॥२०१॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु में ताल न भरा, तो अगली साल भरेगा।

रात दिना घमछाहीं। घाघ कहैं बरखा अब नाहीं ॥२०२॥

कभी घाम हो, कभी बदली, तो घाघ कहते हैं कि अब वर्षा नहीं है।

रात निबद्दर दिन को घटा। घाघ कहैं ये बरखा हटा ॥२०३॥

रात को आकाश खुला रहे और दिन में घटा घिरी रहे, तो घाघ कहते हैं कि वर्षा गई।

दिन का बद्दर रात निबद्दर। बहै पुरवैया झब्बर झब्बर॥
घाघ कहैं कुछ होनी होई। कुँवा के पानी धोबी धोई॥२०४॥

दिन को बादल हों, रात को बादल न रहें और पूर्वा हवा रुक-रुक कर बहे; तो घाघ कहते हैं कि कुछ बुरा होनहार है। जान पड़ता है, सूखा पड़ेगा, और धोबी कुएँ के पानी से कपड़े धोयेगा।

पूरब धनुहीं पच्छिम भान। घाघ कहैं बरखा नियरान॥२०५॥

सन्ध्या समय यदि पूर्व में इन्द्रधनुष निकले, तो घाघ कहते है कि वर्षा निकट है।

बायू में जब वायु समाय। कहैं घाघ जल कहाँ समाय॥२०६॥

यदि एक ही समय आमने-सामने की दो हवा चले, तो घाघ कहते हैं कि पानी कहाँ समायगा? अर्थात् बड़ी वृष्टि होगी।

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहनो बाउ।
घाघ कहैं भड्डर से, बरधा भीतर लाउ॥२०७॥

पूरब की हवा चल रही हो और उत्तर की ओर बिजली चमक रही हो, तो घाघ भड्डर से कहते हैं कि बैलों को छप्पर के नीचे लाओ। अर्थात् पानी जल्दी ही बरसेगा।

सावन मास बहै पुरवाई। बरदा बेंचि लिहा धेनु गाई॥२०८॥

सावन में यदि पूर्वा हवा बहे, तो बैल बेंचकर गाय ले लेना। क्योंकि वर्षा न होगी और अकाल पड़ेगा।

जेठ में जरै माघ में ठरै। तब जीभी पर रोड़ा परै॥२०९॥

जेठ की धूप में जलने से और माघ की सरदी में ठिठुरने से ईख की खेती होती है और तब किसान की जीभ पर गुड़ का रोड़ा पड़ता है।

धान गिरै सुभागे का। गेहूँ गिरै अभागे का॥२१०॥

धान का पौधा भाग्यवान् का गिरता है और गेहूँ का पौधा अभागे का।

मंगलवारी होय दिवारी। हँसैं किसान रोवैं बैपारी॥२११॥

यदि दिवाली मंगल को पड़े, तो किसान हँसेगा और व्यापारी रोयेगा।

ऊँचे चढ़िके बोला मँडुवा। सब नाजों का मैं हूँ भडुवा।
आठ दिनां मुझको जो खाय। भले मर्द से उठा न जाय ॥२१२॥

मडुवा ऊँचे खड़े होकर बोला—मैं सब अन्नों में भँडुवा हूँ। मुझे यदि कोई आठ दिन भी खाय, तो वह कैसा ही मर्द हो, इतना निर्बल हो जायगा कि उससे उठा नहीं जायगा।

जौ तेरे कुनबा घना। तो क्यों न बोये चना ॥२१३॥

तुम्हारे परिवार में यदि अधिक प्राणी हैं, तो तुमने चना क्यों नहीं बोया ?

मकड़ी घासा पूरा जाला। बीज चने का भरि भरि डाला ॥२१४॥

जब मकड़ी घास पर जाला तनने लगे, तब चने का बीज बोना चाहिये।

उर्द मोथी की खेती करिहौ। कुँड़िया तोर ऊसर में धरिहौ ॥२१५॥

उर्द और मोथी की खेती करोगे तो कूँडा (मिट्टी का घड़ा, जिसमें किसान लोग अन्न रखते हैं) या कुरिया (खेत की रखवाली के लिये फूस का छोटा-सा छप्पर) तोड़कर तुमको ऊसर में रखना पड़ेगा। क्योंकि उर्द और मोथी की खेती उसरीली ज़मीन में अधिक होती है। अथवा उर्द और मोथी के भरोसे रहोगे, तो तुमको अपना कूँड़ा फोड़कर फेंकना पड़ेगा।

जहँवा देखिहा लोह बैलिया। तहँवा दीहा खोलि थैलिया ॥२१६॥

जहाँ लाल रंग का बैल देखना, वहाँ जल्दी थैली खोल देना। अर्थात् उसे जल्द ख़रीद लेना।

बैल मुसरहा जो कोई ले। राजभंग पल में कर दे॥
त्रिया बाल सब कुछ छुट जाय। भीख माँगि के घर घर खाय ॥२१७॥

जो किसान मुसहरा बैल (जिसकी पूँछ के बीच में दूसरे रंग के बालों का गुच्छा हो, जैसे काले में सफेद, सफेद में काला, अथवा डोल लटका हुआ) खरीदता है, उसका जल्दी ही सब ठाट-बाट नष्ट हो जाता है, स्त्री, पुत्र सब छूट जाते हैं और वह घर-घर भीख माँगकर खाता है।

मत कोइ लीजो मुसरहा बाहन। खसम मारि के डालै पायन ॥२१८॥

मुसहरा बैल कोई मत खरीदना। यह ऐसा मनहूस होता है कि मालिक को मारकर पैरों तरे डाल लेता है।

है उत्तम खेती वाकी। होय मेवाती गोयो जाकी ॥२१६॥

जिस किसान के बैल मेवाती नस्ल के हों, उसकी खेती उत्तम कही जायगी।

समरथ जोतै पूत चरावै। लगते जेठ भुसौला छावै॥
भादौं मास उठै जो गरदा। बीस बरस तक जोतौ बरदा ॥२२०॥

यदि बैल को समतल खेत में जोते; किसान का बेटा उसे चरावे; जेठ लगते हा भूसा रखने का घर छा दे और बैल के बैठने को जगह ऐसी सूखी रक्खे कि भादों में वहाँ धूल उड़े, तो बीस बरस तक बैल जोता जा सकता है।

ना मोहिँ नाधो उलिया कुलिया, ना मोहिँ नाधो दायें।
बीस बरस तक करौं बरदाई, जो ना मिलिहैं गायें ॥२२१॥

बैल कहता है—अगर मुझे छोटे-छोटे खेतों में न जोतोगे, न दाहिने जोतोगे, और मैं गाय से मिलने न पाऊँगा, तो बीस वर्ष तक पूरा काम दूँगा।

बड़सिंगा जनिलीजौ मोल। कुएँ में डारो रुपिया खोल ॥२२२॥

बड़ी सींग वाला बैल न खरीदना, चाहे रुपया खोलकर कुएँ में डाल देना।

पतली पेंडुली मोटी रान। पूँछ होय भुइँ में तरियान॥
जाके होवै ऐसी गोई। वाको तकैं और सब कोई ॥२२३॥

जिस बैल की पेंडुली पतली हो, रान मोटी हो और पूछ ज़मीन तक पहुँची हुई हो, वैसा बैल जिस किसान के पास होगा, उसकी ओर सब की दृष्टि जायगी।

करिया काछी धौरा बान, इन्हें छाँड़ि जनि बेसह्यो आन ॥२२४॥

काली कच्छ (पूँछ की जड़ के नीचे का भाग) और सफेद रङ्ग वाले बैल को छोड़कर दूसरा मत खरीदना।

कार कछौटा सुनरे बान। इन्हें छाँड़ि जनि बेसह्यो आन ॥२२५॥

काली कच्छ और सुन्दर रूप-रंग वाले बैल को छोड़कर दूसरा न खरीदना।

जोतै क पुरबी लादै क दमोय। हेंगा क काम दे जो देवहा होय ॥२२६॥

पूर्बी नस्ल का बैल जुताई के लिये, दमोय नस्ल का बैल लादने के लिये और देवहा नस्ल का बैल हेंगा के लिये अच्छा होता है।

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल़ अनमोल ॥२२७॥

जिस बैल के सींग मुंडे (छोटे ओर एक दूसरे की ओर) हों, माथा उठा हुआ हो, मुँह गोल हो, रोएँ मुलयाम हों और कान चंचल हों, वह बैल चलने में तेज़ और अनमोल होगा।

मुँह का मोट माथ का महुआ। इन्हैं देखि जनि भूल्यो रहुआ ॥
धरती नहीं हराई जोतै। बैट मेंड़ पर पागुर करै ॥२२८॥

जो बैल मुँह का मोटा होता है, और माथा जिसका पीला होता है, उसे देखकर सावधान हो जाना। वह एक हराई भी खेत नहीं जोतता, मेंड़ पर बैठा हुआ पागुर करता रहता है।

अमहा-जबहा जोतहु जाय। भीख माँगि के जाहु बिलाय ॥२२६॥

अमहा और जबहा नस्ल वाले बैलों को जोतोगे, तो भीख माँगनी पड़ेगी और अंत में तबाह हो जाओगे।

जहाँ परै फुलवा की लाह। झाडू लैके बुहारो सार ॥२३०॥

फुलवा नस्ल के बैल की लार जहाँ पड़े, उस जगह को झाड़ू से बुहार देना चाहिये। अर्थात् वह अच्छा नहीं होता।

कार कछोटा झबरे कान। इन्हैं छाड़ि जनि लीजौ आन ॥२३१॥

काले कच्छ और झबरे कान वाले बैल को छोड़कर दूसरा न लेना।

निटिया बरद छोटिया हारी। दूब कहै मोर काह उखारी ॥२३२॥

निटिया—जिसकी पूँछ गरेरी हो अथवा नाटा—छोटा बैल और नन्हें हलवाले को देखकर दूब कहती है कि ये मेरा क्या उखाड़ लेंगे?

बैल लीजै कजरा। दाम दीजै अगरा ॥२३३॥

काली आँखों वाला बैल मिले तो पेशगी दाम देकर ले लेना चाहिये।

लम्बे लम्बे कान। और ढाला मुतान ॥
छोड़ो छोड़ो किसान। न तो जात हैं प्रान ॥२३४॥

जिस बैल के कान लम्बे हों और पेशाब की इन्द्रिय झूलती हुई हो, हे किसान ! उसे जल्दी से दूर करो। नहीं तो तुम्हारे प्राण चले जायँगे।

बैल बेसाहन जाओ कन्ता। भूरे का मत देखो दन्ता ॥२३५॥

हे स्वामी ! बैल खरीदने जाना, तो भूरे बैल का दाँत न देखना। अर्थात् उसे न खरीदना।

सात दाँत उदन्त को रंग जो काला होय।
इनकी कबहुँ न लीजिये दाम चहै जो होय ॥२३६॥

उदन्त बैल सात दाँत का हो और उसका रङ्ग काला हो, तो उसे कभी मत खरीदना, चाहे जो दाम हो।

हिरन मुतान और पतली पूँछ। बैल बेसाहो कंत बे पूँछ ॥२३७॥

जो हिरन की तरह मूतता हो और जिसकी पूँछ पतली हो; वैसे बैल को बिना पूँछे ले लेना।

बरद बेसाहन जाओ कन्ता। कबरा का जनि देखो दन्ता ॥२३८॥

हे स्वामी ! बैल खरीदने जाना, तो चितकबरे बैल का दाँत न देखना।

पाठान्तर = कुबरा।

घोंची देखै ओहि पार। थैली खालै यहि पार ॥२३९॥

आगे मुड़ी सींगों वाला बैल नदी के उस पार भी दिखाई पड़े, तो उसे ख़रीदने के लिये इसी पार से थैली खोल लेनी चाहिये।

श्वेत रंग औ पीठ बरारी। ताहि देखि जनि भूल्यो लारी ॥२४०॥

सफेद रंग का और जिसकी पीठ की रीढ़ दबी हुई हो, ऐसा बैल देखना तो लेने में मत चूकना।

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ। सद्दर कहै गुसैयें खाऊँ।
नौदर कहै मैं नौ दिस धाऊँ। हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ ॥२४१॥

जिस बैल के छः ही दाँत होते हैं, वह कहता है कि मैं तो कहीं ठहरता ही नहीं। सात दाँतों वाला कहता है कि मैं तो मालिक ही को खा जाता हूँ। नौ दाँतों वाला कहता है कि मैं नवो दिशाओं में दौड़ता हूँ और किसान के मित्र, कुटुम्बी और पुरोहित को भी खा जाता हूँ।

सौंख कहै देख मोर कला। बे मेहरी का करौं घरा ॥२४२॥

सौंख (बैल के माथे पर का एक निशान) कहती है कि मेरी कला देखो, मैं किसान का घर बिना स्त्री का कर दूँगी।

छोट सींग औ छोटी पूँछ। ऐसे को ले लो बे पूँछ ॥२४३॥

जिस बैल की सींगें और पूँछ छोटी हों, उसे बिना पूछे ले लेना चाहिये।

वह किसान है पातर। जो बरदा राखै गादर ॥२४४॥

वह निर्बल किसान है, जिसके पास गादर बैल है।

उदन्त बरदे उदन्त ब्याये। आप जायँ या खसमै खाये ॥२४५॥

जो गाय उदन्त (जिसके दूध के दाँत न गिर चुके हों) अवस्था में साँड़ से जोड़ा खाय और उदन्त ही बच्चा दे, वह या तो स्वयं मर जाती है, या मालिक को मार लेती है।

भैंस कन्देलिया पिय लाये। माँगे दूध कहाँ से आये ॥२४६॥

कन्देलिया नस्ल की भैंस स्वामी लाये हैं। भला, अब दूध कहाँ मिले ? अर्थात् कन्देलिया भैंस दूध कम देती है।

नासू करै राज का नास ॥२४७॥

नासू बैल (जिसकी आधी पसली और पसलियों से कम हो) ऐसा मनहूस होता है कि राज का नाश कर देता है।

बाँसड़ औ मुँह धौरा। उन्हें देखि चरवाहा रौरा ॥२४८॥

उभरी हुई रीढ़ वाला और सफेद मुँह वाला बैल देखकर चरवाहा चिल्ला उठता है। क्योंकि यह बहुत सुस्त होता है।

नीला कंधा बैंगन खुरा। कबहूँ न निकले कंता बुरा ॥२४९॥

हे स्वामी ! जिस बैल का कन्धा नीले रंग का हो और खुर बैंगनी रंग का, वह कभी बुरा नहीं निकलता।

छोटा मुँह औ ऐंठा कान। यही बैल की है पहचान ॥२५०॥

छोटा मुँह और ऐंठे हुए कान अच्छे बैल की पहचान है।

मियनी बैल बड़ो बलवान। तनिक में करिहै ठाढ़े कान ॥२५१॥

मियनी नस्ल का बैल बड़ा बलवान होता है। क्षण भर में यह कान खड़ा कर लेता है।

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़।
ये नीके ना होयँगे, चाहे बद लो होड़ ॥२५२॥

बैल का गिरा हुआ सींग और आदमी का कोढ़, ये कभी अच्छे नहीं होते, चाहे शर्त लगा लो।

बैल तरकना टूटी नाव। ये काहू दिन दैहैं दाँव ॥२५३॥

चमकने वाला बैल और टूटी हुई नाव, ये कभी धोखा देंगे।

बैल *चमकना जोत में, औ चमकीली नार।
ये बैरी हैं जान के, लाज रखैं करतार ॥२५४॥

जोतते वक्त चमकने वाला बैल और चटकीली-मटकीली स्त्री, ये दोनों प्राण के शत्रु हैं। इनसे भगवान् ही लज्जा रक्खें तो रहे।

पाठान्तर—कुशकरी।

पूँछ झंपा औ छोटे कान। ऐसे बरद मेहनती जान ॥२५५॥

गुच्छेदार पूँछ और छोटे कान वाले बैल को मेहनती समझो।

उजर बरौनी मुँह का महुआ। ताहि देखि हरवाहा रोवा ॥२५६॥

जिस बल की बरौनी सफ़ेद हो और मुँह पीले रंग का हो, उसे देख कर हलवाहा रो देता है। क्योंकि उस क़िस्म का बैल सुस्त होता है।

जब देखा पिय संपति थोड़ी। बेसहो गाय बिआउरि घोड़ी ॥२५७॥

हे स्वामी! जब देखना कि सम्पत्ति कम है, तब बच्चा देनेवाली गाय और घोड़ी ख़रीद लेना।

अगहन में ना दी थी कोर। तेरे बैल क्या ले गये चोर ॥२५८॥

अगहन में तुमने ऊख के खेत को नहीं जोता, क्या तेरे बैलों को चोर गये थे?

मर्द निकौनी बरदै दायें। दुबरी चलने में दुख पायें ॥२५९॥

मर्द को निराई करने में और बैल को हल में दाहिनी ओर जुतकर चलने में अथवा दवँरी चलने में और दुर्बल व्यक्ति या गर्भिणी स्त्री राह चलने में दुःख पाते हैं।

बरद बिसाहन जाओ कंता । खैरा का जनि देखो दंता ॥
जहाँ परै खैरे का खुरी । ता कर डारैं चापर पुरी ॥
जहाँ परै खैरा की लार । बढ़नी लेके बुहारो सार ॥२६०॥

हे स्वामी ! बैल खरीदने जाना तो कत्थई रंग के बैल का दाँत न देखना, अर्थात् न खरीदना । क्योंकि वह ऐसा मनहूस होता है कि, जहाँ उसके खुर पड़ते हैं, वह गाँव ही चौपट हो जाता है । बैल बाँधने की जगह में जहाँ उसके मुँह की लार पड़े, उस जगह को जल्दी ही झाड़ू से बुहार कर साफ़ कर देना चाहिये ।

भैंसा बरद की खेती करै, करजा काढ़ि बिरानो खाय ।
बधिया ऐंचत है येहरी को, भैंसा ओहरी को लै जाय ॥२६१॥

भैंसा और बैल को हल में जोतकर खेती करने से तो दूसरे से कर्ज लेकर खाना अच्छा है । बैल माटयार ज़मीन की तरफ़ खींचता है, भैंसा दलदल की ओर ले जाता है ।

एक समय बिधिना का खेल । रहा ऊसर मैं चरत अकेल ॥
एक बटोहा हर हर कहा । ठाढ़े गिरा होस ना रहा ॥२६२॥

एक गादर बैल कहता है—ब्रह्मा की लीला तो देखो; एक बार मैं ऊसर में अकेला चर रहा था । एक यात्री ने स्नान करते समय 'हर हर' किया। मैं हल समझकर ऐसा गिरा कि होश न रहा !

जहाँ देखिहो रूपा धँवर । सुका चार बरु दीहअ अवर ॥२६३॥

जहाँ सफेद रंग का बैल देखना, उसके लिये एक रुपया अधिक दाम भी देना पड़े, तो देकर ले लेना ।

शब्दार्थ—सूका = चार आना ।

डग डग डोलन फरका पेलन, कहाँ चले तुम बाँड़े ।
पहिले खावइ रान परोसी, गोसैयाँ कब छाँड़े ॥२६४॥

किसी ने बैल से पूछा—हे कटी हुई पूँछ वाले बाँड़े, डगमगाते हुए डोलने वाले और इतनी बड़ी सींगों वाले कि जिनसे छप्पर ढकेला जा सके, बैल ! तुम कहाँ चले ?

बैल ने कहा—मैं अड़ोस-पड़ोसी को पहले ही खाऊँगा, मालिक को तो मैंने कभी छोड़ा ही नहीं।

पाठान्तर—पहिले कइउ गुसैयाँसाये, तुहऊँ क खाबइ पोड़े।

नाटा खोटा बेंचि के, चारि धुरंधर लेहु।
आपन काम निकारि के, औरहु मँगनी देहु ॥२६५॥

छोटे-मोटे बैलों को बेंच कर चार बड़े-बड़े बैल लो। उनसे अपना भी काम निकालो और दूसरो को भी उधार दो।

एक पाख दो गहना। राजा मरै कि सहना ॥२६६॥

एक पक्ष में यदि दो ग्रहण लगें, तो राजा और बादशाह में से कोई एक मरेगा।

जहँ देखो पटवा की डोर। तहवाँ दीजै थैली छोर ॥२६७॥

जहाँ पीले रंग का बैल दिखाई पड़े, उसे तत्काल ख़रीद लेना।

खेत बे पाना बूढ़ा बैल। सो गृहस्त साँझै गहे गैल ॥२६८॥

जिसका खेत बिना पानी का हो, अर्थात् ऐसी जगह पर हो, जहाँ सिंचाई के लिये पानी की पहुँच न हो, और जिसके बैल बुड्ढे हों, वह किसान खेती न करे।

बाँधा बछड़ा जाय मठाय। बैठा ज्वान जाय तुँदियाय ॥२६९॥

बँधा हुआ बछड़ा मठ (सुस्त) हो जाता है, और जवान आदमी बैठा रहे, तो उसकी तोंद निकल आती है।

एक बात तुम सुनहु हमारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी ॥२७०॥

तुम मेरी एक बात सुनो—बूढ़े बैल से तो कुदाल ही अच्छी।

दो तोई। घर खोई ॥२७१॥

रबी काटकर उसी ज़मीन में ईख बोने से घर का माल भी चला जाता है। अथवा एक घर में दो तवे होने (दो चूल्हे जलने) से घर का नाश हो जाता है।

पाठान्तर=दो जोई—दो स्त्रियाँ।

कर्म हीन खेती करै। बरधा मरै कि सूखा परै ॥२७२॥

अभागा आदमी यदि खेती करेगा, तो या तो बैल मर जायगा या सूखा पड़ेगा।

दस हल राव आठ हल राना। चार हलों का बड़ा किसाना ॥२७३॥

जिस किसान के दस हल की खेती होती है, वह राव है; जिसके आठ की होती है वह राना है; और चार हल की खेती करनेवाला एक बड़ा किसान है।

अगहन में सरवा भर। फिर करवा भर ॥२७४॥

अगहन में फसल के लिये एक कटोरा पानी दूसरे समय के एक घड़े भर पानी के बराबर लाभदायक है।

खेती करै साँझ घर सोवै। काटै चोर हाथ धरि रोवै ॥२७५॥

जो किसान खेती करके निश्चिन्त होकर रात को घर में सोता है, उसकी खेती चोर काट ले जाते हैं और वह हाथ पर हाथ धरकर रोता है।

रामबाँस जहँ धँसै अचूका। तहँ पानी की आस अखूटा ॥२७६॥

रामबाँस जहाँ बिना किसी रुकावट के धँस जाय, वहाँ कुएँ में इतना पानी होगा, जो कभी न चुकेगा।

बेस्या बिटिया नील है, बन सावाँ पुत जान।
वो आई सब घर भरै, दरब लुटावत आन ॥२७७॥

नील वेश्या की कन्या है और कपास और सावाँ वेश्या के पुत्र हैं। कन्या आयेगी तो घर भर देगी और पुत्र घर का धन लुटा देगा। अर्थात् खेत में नील बो दिया जाय तो खेत उर्वर हो जाता है। पर कपास और सावाँ बोने से खेत की रही-सही ताक़त भी चली जाती है।

पुरबा में जो पछुवाँ बहै। हँसि के नार पुरुष से कहै ॥
ऊ बरसै ई करै भतार। घाघ कहैं यह सगुन बिचार ॥२७८॥

पूर्वा हवा और पछुवाँ हवा यदि एक साथ बहे, और स्त्री पर-पुरुष से हँसकर बातें करे, तो घाघ यह शकुन विचार कर कहते हैं कि वह हवा पानी बरसायेगी और स्त्री दूसरा पति करेगी।

धनि वह राजा धनि वह देस। जहवाँ बरसै अगहन सेम ॥
पूस में दूना माघ सवाई। फागुन बरसै घरौं से जाई ॥२७९॥

वह राजा और देश धन्य है, जहाँ अगहन के अंत में वृष्टि हो। पौष बरसने से अन्न दूना उपजता है और माघ में सवाया। पर फागुन में बरसने से घर का अन्न भी चला जाता है।

सिंहा गरजै। हथिया लरजै ॥२८०॥

सिंह नक्षत्र के गरजने से हस्त में वर्षा कम होती है।

सावन सुक्ला सत्तमी गगन स्वच्छ जो होय।
कहै घाघ सुन घाघिनी, पुहुमी खेती खोय ॥२८१॥

सावन शुक्ला सप्तमी को यदि आकाश साफ़ हो, तो घाघ घाघिनी से कहते हैं कि पृथ्वी पर की खेती नष्ट हो जायगी।

तिल कोरें। उर्द बिलोरें ॥२८२॥

तिल कोरने से और उर्द के बिलोरने से फ़सल अच्छी होती है।

रोहिनि बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय।
कहैं घाघ घाघिन से, स्वान भात नहिं खाय ॥२८३॥

रोहिणी बरसे, मृगशिरा तपे और कुछ-कुछ आर्द्रा भी बरस दे, तो ऐसी पैदावार हो कि कुत्ते भी भात से ऊब जायँ।

खनि के काटै घन के मोराये। जब बरदा के दाम सुलाये ॥२८४॥

ईख को जड़ से खोदकर निकलाने और खूब दबा-दबा कर कोल्हू में पेरने से फ़ायदा होता है और बैलों का परिश्रम सफल होता है।

कीकर पाथा सिरस हल, हरियाने का बैल।
लोधा डाली लगाय के, घर बैठा चौपड़ खेल ॥२८५॥

जिस किसान के पास बबूल की लकड़ी का पाथा, सिरीक का हल, हरियाने का बैल, लोधा (?) की डाली (?) हो, वह अनन्द से घर में बैठकर चौपड़ खेल सकता है।

पाठान्तर—चौपड़=चौसर।

माघा मकड़ी पुरबा डाँस। उत्रा में है सबकी नास ॥२८६॥

मघा में मकड़ी और पूर्वा में डाँस पैदा होते हैं और उत्तरा में सब मर जाते हैं।

यकसर खेती यकसर मार। घाघ कहैं ये सदहूँ हार ॥२८७॥

जो अकेले खेती करता है और अकेले मार-पीट करता है, घाघ कहते हैं ये दोनों सदा हारते हैं।

मेदिन मेघा भइँसि किसान। मोर पपीहा घोड़ा धान ॥
बाढ्यो मच्छ लता लपटानी। दसौ सुखो जब बरसै पानी ॥२८८॥

पृथ्वी, मेढ़क, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता, ये दस पानी बरसने से सुखी होते हैं।

छीपा छेड़ी ऊँट कोंहार। पीलवान और गाड़ीवान ॥
आक जवासा बेस्वा बानो। दस मलीन जब बरसै पानी ॥२८९॥

रँगरेज, बकरी, ऊँट, कुम्हार, महावत, गाड़ीवान्, मदार, जवासा, वेश्या और बनिया, ये दस पानी बरसने पर दुखी हो जाते हैं।

आये मेख। हरी न देख ॥२९०॥

मेष राशि लगने पर अर्थात् चैत में फसल काट लेनी चाहिये। उसकी हरियाली का ख्याल न करना चाहिये।

आकर कोदो नीम जवा। गाडर गेहूँ बेर चना॥२९१॥

यदि मदार की फसल अच्छी हो तो कोदो, नीम की हो तो जौ, गाडर की हो तो गेहूँ और बेर की हो तो चना अच्छा होगा।

आगे की खेती आगे आगे। पीछे की खेती भागे जागे ॥२९२॥

जो आगे खेत बोयेगा, उसकी पैदावार भी सब से आगे रहेगी। पीछे बोने वाले की पैदावार भाग्य के जगने पर सम्भव है।

उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहै जु बाव।
घाघ कहैं भड्डर से, बरधा भीतर लाव ॥ २९३ ॥

उत्तर की ओर बिजली चमकती हो और पूर्वा हवा चलती हो, तो घाघ

भड्डरी से कहते हैं कि बैलों को छप्पर के नीचे लाओ। अर्थात् पानी बरसेगा।

छिन पुरवैया छिन पछियाँव। छिन-छिन बहै बबूला बाव॥
बादर ऊपर बादर धावै। तबै घाघ पानी बरसावै॥२६४॥

क्षण में पूर्व की हवा चले, क्षण में पश्चिम की; बारबार बवंडर उठे, और बादल के ऊपर बादल दौड़े तो घाघ कहते हैं कि पानी बरसेगा।

पाठान्तर—**खन पुरवैया खन पछियाँव। खन खन बहै बबूरा बाव॥**
जौ बादर बादर माँ जाय। घाघ कहैं जल कहाँ समाय॥

औआ बौआ बहे बतास। तब होला बरसा कै आस॥२६५॥

हवा यदि कभी पश्चिम की कभी पूरब की अथवा बे सिर-पैर की बहे, तब वर्षा की आशा होती है।

अदरा गेल तीनि गेल, सन साठी कपास।
हथिया गेल सब गेल, आगिल पाछिल चास॥२६६॥

आद्रा न बरसे तो सन, साठी और कपास की खेती नष्ट हो जाती है। और हथिया न बरसे, तो पीछे और आगे दोनों की खेती नष्ट हो जाती है।

सावन क पछुवाँ दिन दुइ चार। चूल्ही क पाछा उपजै सार॥२६७॥

सावन में यदि दो-चार दिन भी पछुवाँ चले, तो मौसम ऐसा अच्छा हो कि चूल्हे के पिछवाड़े भी उत्पन्न हो। अर्थात् अत्यन्त सूखी जगह में भी खेती हो।

अदरा माँहि जो बोवइ साठी। दुख के मार निकालउ लाठी॥२६८॥

यदि आर्द्रा में साठी धान बोओ, तो इतनी अच्छी फ़सल होगी कि दुःख को लाठी से मार कर भगा सकोगे।

आदि न बरसे अदरा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु भड्डरी, भये किसान पिसान॥२६९॥

आद्रा नक्षत्र शुरू में यदि न बरसे और हस्त अन्त में, तो किसान बेचारे पिसान (आटा; चूर) हो जायँगे।

मड़वा मीन चीन सँग दही। कोदौ क भात दूध सँग सही ॥ ३०० ॥

मडुवे के साथ मछली, दही के साथ चीनी और कोदों के भात के साथ दूध का मेल अच्छा होता है।

चैत के पछुवाँ भादौं जल्ला। भादौं पछुवाँ माघ क पल्ला ॥ ३०१ ॥

चैत में पछुवाँ बहे, भादों में जल बहुत होगा। भादों में पछुवाँ बहे, तो माघ में पाला पड़ेगा।

कॉंमी कूमी चौथ क चान। अब का रोपबा धान किसान ॥ ३०२ ॥

कास-कुस फूल आये, भादों की उजाली चौथ भी हो गई। अब धान क्यों रोपेंगे?

बिधि का लिखा न होवै आन। बिना तुला ना फूटै धान ॥
सुख सुखराती देव उठान। तेकरे बरहे करौ नेमान ॥
तेकरे बरहे खेत खरिहान। तेकरे बरहे कोठिलै धान ॥ ३०३ ॥

ब्रह्मा का लिखा हुआ बदल नहीं सकता। तुला ही में धान फूटेगा। सुख की रात दीवाली और देवोत्थान एकादशी बीत जाने पर उसके बारहवें दिन नवान्न ग्रहण करना चाहिये। उसके बारहवें दिन धान को काटकर खलिहान में रखना चाहिये। और उसके बारहवें दिन तो कोठिला में रख ही देना चाहिये।

चिरैया में चीर फार। असरेखा में टार टार ॥
मघा में काँदो सार ॥ ३०४ ॥

चिरैया नक्षत्र में यदि जमीन को थोड़ा-सा भी गोड़कर जड़हन लगा दे तो फ़सल अच्छी होगी। अश्लेषा में जोतकर लगाना पड़ेगा। और मघा में लगाया जायगा तो खाद पास डालकर खेत अच्छी तरह तैयार होगा, तभी होगा।

बाउ चलेगी दखिना। माँड़ कहाँ से चखना ॥ ३०५ ॥

दक्खिन की हवा चलेगी, तो धान न होगा। माँड़ कहाँ से चखोगे?

बाउ चलेगी उतरा। माँड़ पियेंगे कुतरा ॥ ३०६ ॥

उत्तर की हवा चलेगी, तो धान की फ़सल ऐसी अच्छी होगी कि कुत्ते भी माँड़ पियेंगे।

बाउ चलेगी पुरवा। पियो माँड़ का कुरवा ॥३०७॥

पूर्व की हवा चलेगी, तो धान की उपज अच्छी होगी। फिर तो घड़ों माँड़ पीना।

चमके पच्छिम उत्तर ओर। तब जान्यो पानी है जोर ॥ ३०८ ॥

यदि पश्चिम और उत्तर के कोने पर बिजली चमके, तो समझना कि पानी बहुत बरसेगा।

पहला पवन पुरब से आवे। बरसे मेघ अन्न भरि लावे ॥ ३०९ ॥

असाढ़ में पहली हवा यदि पूर्व से बहे, तो पानी बहुत बरसेगा और अन्न की उपज बहुत होगी।

मग्घा गरजे। हथिया लरजे ॥ ३१० ॥

यदि मघा नक्षत्र में बादल गरजता है तो हस्त में बरसात नहीं होती।

पाठान्तर—सिंह गरजे।

आर्द्रा चौथ। मघ पंचक ॥ ३११ ॥

आर्द्रा नक्षत्र बरसता है तो आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा, चारो नक्षत्र बरसते हैं। और जब मघा नक्षत्र बरसता है तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा, पाँचो नक्षत्र बरसते हैं।

दखनी कुलखनी। माघ पूस सुलखनी ॥ ३१२ ॥

दक्षिण की हवा आम तौर पर खराब होती है; पर माघ पौष में अच्छी होती है।

मंगल पड़े तो भू चलै, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचै पड़े अकाल ॥ ३१३ ॥

यदि फागुन महीने का अंतिम दिन मङ्गल को पड़े, तो भूकंप हो; बुध को पड़े तो अकाल पड़े; और यदि शनैश्चरवार को पड़े, तो निश्चय ही अकाल पड़े।

सावन सूखे धान, भादों सूखे गोहूँ। ३१४ ॥

सावन में सूखा पड़े, तो धान हो सकता है। इसी तरह फागुन में सूखा पड़े, तो गेहूँ हो सकता।

तपे मृगसिरा बिलखें चार। बन बालक औ भैंस उखार ॥ ३१५ ॥

मृगशिरा के तपने से कपास, बालक, भैंस और ईख ये चार दुःख पाते हैं। बालक माता या गाय भैंस का दूध कम हो जाने से दुःख पाते हैं।

दिन सात जो चले बाँड़ा। सूखे जल सातो खाँड़ा ॥ ३१६ ॥

यदि सात दिनों तक लगातार दक्षिण-पश्चिम की हवा चले, तो सातों खंड में पान. सूख जायगा।

सावन सुक्र न दीसै, निहचै पड़े अकाल ॥ ३१७ ॥

सावन में यदि शुक्रास्त हो, तो निश्चय अकाल पड़ेगा।

मघा मसीना बोइये झार। फिर राखौ रब्बी की डार ॥ ३१८ ॥

माघ में उड़द को साफ़ करके रख छोड़ो; फिर रबी के लिये खेत तैयार कर रक्खो।

आसपास रबी बीच में खरीफ़। नोन मिर्च डाल के खा गया हरीफ़ ॥३१९॥

यदि ख़रीफ़ की फसल के चारोंओर खेत में रबी बोओगे, तो तुम्हारा शत्रु नमक मिर्च लगाकर उसे खा जायगा। अर्थात् पैदावार अच्छी न होगी।

सात सेवाती धान उपाठ ॥ ३२० ॥

स्वाती में सात दिन बीतने पर धान पक जाता है।

साँझै धनुक बिहानै पानी। कहैं घाघ सुनु पंडित ज्ञानी ॥ ३२१ ॥

शाम को यदि इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो दूसरे दिन पानी बरसेगा। घाघ ज्ञानी पंडितों से ऐसा कहते हैं।

अधकचरी विद्या दहे, राजा दहे अचेत।
ओछे कुल तिरिया दहे, दहे कलर का खेत ॥ ३२२ ॥

अनुभव हीन विद्या व्यर्थ है, असावधान राजा, नीच कुल की स्त्री, और कपास का खेत व्यर्थ है। अर्थात् एक बार कपास बोने से खेत बहुत कमज़ोर हो जाता है।

तीन बैल घर में दो चाकी। पूरब खेत राज की बाकी ॥ ३२३ ॥

किसान के पास तीन बैल हों, तो एक हमेशा बेकार रहेगा ; घर में फूट हो, दो चक्कियाँ चलने लगें तो शान्ति नहीं मिलेगी; पूरब दिशा में खेत हो तो सबेरे खेत की ओर जाते और शाम को वापस आते समय सूर्य आँखों पर पड़ेगा और आँखें कमजोर होंगी; और मालगुज़ारी अदा न हुई रहेगी तो राज का अपमान सहना पड़ेगा। ये चारो बातें किसानों के लिये कष्टदायक हैं।

भड्डरी की कहावतें

कातिक सुद एकादसी, बादल बिजुली होय।
तो असाढ़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय ॥१॥

कार्तिक शुक्ला एकादशी को यदि बादल हों और बिजली चमके, तो भड्डरी कहते हैं कि अषाढ़ में निश्चय वर्षा होगी।

कातिक मावस देखो जोसी। रबि सनि भौमवार जो होसी।
स्वाति नखत अरु आयुष जोगा। काल पड़ै अरु नासैं लोगा ॥२॥

ज्योतिषी को कार्तिक अमावास्या को देखना चाहिये, यदि उस दिन रविवार, शनिवार और मङ्गलवार होगा और स्वाती नक्षत्र आयुष्य योग होगा तो अकाल पड़ेगा और मनुष्यों का नाश होगा।

पाठान्तर—स्वाती नखत और पुष जोग।

कातिक सुद पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होइ।
तामें बादर बजुरी, जो सँजोग सौं होइ॥
चार मास तौ वर्षा होसी। भली भाँति यों भाषैं जोसी ॥३॥

कार्तिक सुदी पूर्णिमा को यदि कृतिका नक्षत्र हो और उसमें संयोग से बादल और बिजली भी हों, तो समझना चाहिये कि चार महीने वर्षा अच्छी होगी।

मार्ग महीना माहिं जो, जेष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलै भड्डली, निपटै सातो तूर ॥४॥

अगहन के महीने में यदि न ज्येष्ठा नक्षत्र तपे और न मूल, तो भड्डरी कहते है कि सातों प्रकार के अन्न पैदा हों।

मार्ग बदी आठैं घटा, बिज्जु समेतो जोइ।
तौ सावन बरसै भलो, साखि सवाई होइ ॥५॥

अगहन बदी अष्टमी को यदि बिजली समेत घटा हो, तो सावन में बरसात अच्छी होगी और उपज सवाई होगी।

पौस अँध्यारी सत्तमी, जो पानी नहिँ देइ।
तो आर्द्रा बरसै सही, जल थल एक करेइ ॥६॥

पौष बदी सप्तमी को यदि पानी न बरसे, तो आर्द्रा अवश्य बरसेगा और जल-थल को एक कर देगा।

पौष अँध्यारी सत्तमी, बिन जल बादर जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, बरषा अवसिहिँ होय ॥७॥

पौष बदी सप्तमी को यदि बादल हों, पर पानी न बरसे, तो सावन सुदी पूर्णिमा को वर्षा अवश्य होगी।

पौष मास दशमी दिवस, बादल चमकै बीज।
तौ बरसै भर भाद्वो, साधौ खेलो तीज ॥८॥

पौष बदी दसमी को यदि बादल हों और बिजली चमके, तो भाद भर बरसात होगी। हे सज्जनो! आनन्द से तीज का त्योहार मनाओ।

पौष अँध्यारी तेरसै, चहुँदिसि बादर होय।
सावन पूनों मावसै, जलधर अतिहीं जोय ॥९॥

यदि पौष बदी तेरस को आकाश में चारोंओर बादल दिखाई पड़ें, तो सावन में पूर्णिमा को और अमावास्या को भी वृष्टि बहुत होगी।

पौष अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
निश्चय बाँधो झोपड़ो, बरषा होय सिवाय ॥१०॥

पौष के अमावस को यदि मूल नक्षत्र हो और चारोंओर की हवा चले, तो वर्षा बड़े ज़ोर की होगी। छान-छप्पर छा रक्खो।

सनि आदित औ मंगल, पौष अमावस होय।
दुगुनो तिगुनो चौगुनो, नाज महँगो होय ॥११॥

यदि पौष की अमावास्या को शनिवार, रविवार या मङ्गल पड़े, तो इसी क्रम से अन्न दोगुना, तिगुना और चौगुना महँगा होगा।

सोम सुक्र सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
घर घर बजे बधावड़ा, दुखी न दीखे कोय ॥१२॥

यदि पौष की अमावास्या को सोमवार, शुक्रवार या वृहस्पतिवार पड़े, तो घर-घर बधाई बजेगी और कोई दुखी न दिखाई पड़ेगा।

पूष अँधेरी तेरसी, चहुँदिसि बादल होय।
सावन पूनो मावसै, जल धरनो में होय ॥१३॥

पौष की अँधेरी त्रयोदशी को यदि चारोंओर बादल दिखाई पड़े, तो सावन की पूर्णिमा और अमावास्या को पृथ्वी पर पानी पड़ेगा।

मार्ग बदी आठैं घन दरसै। सो मग्घा भरि सावन बरसै ॥१४॥

अगहन बदी अष्टमी को यदि बादल हो, तो सावन भर पानी बरसेगा।

पूस मास दसमी अँधियारी। बदली घेर होय अधिकारी।
सावन बदि दसमी के दिवसे। भरे मेघ चारो दिसि बरसे ॥१५॥

पौष बदी दशमी को यदि ज़ोर-शोर की घटा घिरी हो, तो सावन बदी दशमी को चारोंओर बड़ी वृष्टि होगी।

कर्क बुवावै काकरी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोले भड्डरी, कीडा फिर फिर खाय ॥१६॥

कर्क राशि में ककड़ी बोये और सिंह में न बोये, तो भड्डरी कहते हैं कि उसमें कीड़ा बार-बार लगेगा।

मंगल सोम होय सिवराती। पछिवाँ बाय बहै दिन राती॥
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ैं। राजा मरैं कि परती पड़ै ॥१७॥

यदि शिवरात्रि मङ्गल या सोमवार को पड़े और रातदिन पच्छिम की हवा बहती रहे, तो समझना कि घोड़ा (एक पतिंगा), रोड़ा और टिड्डी उड़ेंगी; तथा राजा की मृत्यु होगी या सूखा पड़ेगा, जिससे खेत पड़ती पड़ा रहेगा।

काहे पंडित पढ़ि पढ़ि मरो। पूस अमावस की सुधि करो।
मूल बिसाखा पूरबाषाढ़। झूरा जान लो बहिरे ठाढ़ ॥१८॥

हे पंडित! बहुत पढ़-पढ़कर क्यों जान देते हो? पौष के अमावस को

देखो। यदि उस दिन मूल, विशाखा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो, तो समझना कि सूखा घर के बाहर खड़ा है, अर्थात् सूखा पड़ेगा।

पूस उजेली सप्तमो, अष्टमो नौमो गाज।
मेघ होय तो जान लो, अब सुभ होइहै काज ॥१९॥

पौष सुदी सप्तमी, अष्टमी और नवमो को यदि बादल हों और गरजे, तो समझना कि काम सिद्ध होगा, अर्थात् सुकाल होगा।

माघ अंधेरी सप्तमी, मेह बिज्जु दमकन्त।
मास चारि बरसै सही, मत सोचै तू कन्त ॥२०॥

माघ बदी सप्तमी को यदि बादल हों और बिजली चमके, तो हे स्वामी ! तुम सोच मत करो, चौमासा भर पानी बरसेगा।

नौमी माह अँधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
तौ भादौं नौमी दिवस, जल बरसै बिन खेद ॥२१॥

माघ बदी नवमी को यदि मूल नक्षत्र हो, तो भादों बदी नवमी को निश्चय पानी बरसेगा।

माह अमावस गर्भमय, जो केहु भाँति विचारि।
भादौ की पून्यो दिवस, बरषा पहर जु चारि ॥२२॥

माघ की अमावास्या यदि वृष्टि के गर्भ से मुक्त हो, तो भादों की पूर्णिमा को चार पहर वर्षा होगी।

माघ जु परिवा ऊजली, बादर वायु जु होय।
तेल और सुरही सबै, दिन दिन महँगो होय ॥२३॥

माघ सुदी प्रतिपदा को यदि हवा चलती रहे और बादल भी हों तो तेल और घी महँगे होते जायँगे।

माघ उज्यारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय।
तो भाखैं यो भड्डरी, अन्न जु महँगो लाय ॥२४॥

माघ सुदी दूज को यदि बादलों में बिजली समाती दिखाई पड़े, तो भड्डरी कहते हैं कि अन्न महँगा होगा।

माघ उज्यारी तीज को, बादर बिज्जु जु देख।
गेहूँ जौ संचय करौ, महँगो होसी पेख ॥२५॥

माघ सुदी तृतीया को यदि बादल और बिजली दिखाई पड़े, तो अन्न महँगा होगा। जौ-गेहूँ जमा करो।

माघ उँजेरी चौथ को, मेह बादरो जान।
पान और नारेल नै, महँगो अवसि बखान ॥२६॥

माघ सुदी चौथ को बादल हो और पानी बरसे, तो पान और नारियल अवश्य महँगे होंगे।

माघ उँजेरी पंचमी, परसै उत्तम बाय।
तो जानो ये भादवौ बिन जल कोरौ जाय ॥२७॥

माघ सुदी पंचमी को अच्छी हवा चले, तो समझना कि भादों बिना पानी का सूखा ही जायगा।

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास।
सातें देखा निर्मली, तो नाहीं कछु आस ॥२८॥

माघ सुदी छठ को यदि बादल न गरजे, तो कपास महँगा होगा। पर सप्तमी को आकाश बिल्कुल साफ़ हो, तो कुछ भी आशा नहीं।

माघ सप्तमी ऊजली, बादल मेघ करंत।
तो असाढ़ में भड्डुली, घनो मेघ बरसंत ॥२९॥

माघ सुदी सप्तमी को यदि बादल घिर आये, तो भड्डरी कहते हैं कि आषाढ़ में ख़ूब वर्षा हो।

माघ सुदी जो सत्तमी, बिज्जु मेह हिम होय।
चार महीना बरससी, सोक करौ मति कोय ॥३०॥

माघ सुदी सप्तमी को यदि बिजली चमके, पानी बरसे और सरदी बहुत पड़े, तो चौमासे भर पानी बरसेगा; कोई चिन्ता मत करो।

माघ सुदी जो सत्तमी, सोमवार दीसन्त।
काल पड़ै राजा लड़ैं, सगरे नराँ भ्रमन्त ॥३१॥

माघ सुदी सप्तमी को यदि सोमवार पडे, तो अकाल पड़ेगा, राजा लड़ेंगे और सभी मनुष्य चक्कर में पड़े रहेंगें ।

माघ जो सातैं कज्जली, आठैं बादर होय ।
तो असाढ़ में धूरवा, बरसै जोसी जोइ ॥३२॥

माघ बदी सप्तमी और अष्टमी को यदि बादल हों, तो अषाढ़ में पानी बरसेगा, ज्योतिषी को यह देख रखना चाहिये ।

माघ सुदी जो सत्तमी, भौमवार को होय ।
तो भड्डर जोसी कहैं, नाजु किरानो लोय ॥३३॥

यदि माघ सुदी सप्तमी मङ्गलवार को पड़े, तो अन्न में कीड़े लग जायँगे ।

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतिका रिषि होय ।
की फागुन रोली पड़ै, की सावन महँगो होइ ॥३४॥

माघ सुदी अष्टमी को यदि कृतिका नक्षत्र हो, तो या तो फागुन में कुसमय पड़ेगा, या सावन में महँगा होगा ।

अथवा नौमी निरमली, बादर रेख न जोय ।
तौ सरवर भी सूखहीं, महि में जल नहिं होय ॥३५॥

माघ सुदी नवमी को यदि बादल की एक रेखा भी न हो और आकाश स्वच्छ हो, तो पृथ्वी पर कहीं पानी न मिलेगा । तालाब भी सूख जायँगे ।

माघ सुदी पून्यो दिवस, चन्द्र निर्मलो जोय ।
पसु बैंचौ कन संग्रहौ, काल हलाहल होय ॥३६॥

माघ सुदी पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा स्वच्छ हो, अर्थात् आकाश में बादल न हों, तो हे किसान ! पशुओं को बेंचकर अन्न का संग्रह करो; क्योंकि भयानक अकाल पड़ेगा ।

माघ पाँच जो हों रविवार । तो भी जोसी समय विचार ॥३७॥

माघ में यदि पाँच रविवार पड़ें, तो समय अच्छा होगा ।

फागुन बदी सुदूज दिन, बादर होय न बीज ।
बरसै सावन भादवा, साधौ खेलो तीज ॥३८॥

फागुन बदी दूज को यदि बादल हों, पर बिजली न चमके; अथवा न बादल हों, न बिजली; तो सावन-भादों दोनों महीनों में वर्षा होगी। हे सज्जनो ! आनन्द से तीज का त्योहार मनाओ।

मङ्गलवारी मावसो, फागुन चैतो जोय।
पशु बेंचौ कन संग्रहो, अवसि दुकाली होय ॥३९॥

फागुन और चैत का अमावस यदि मङ्गल को पड़े, तो अकाल पड़ेगा। पशुओं को बेंच डालो और अन्न संग्रह करो।

पाँच मङ्गरौ फागुनौ, पौष पाँच सनि होय।
काल पड़ै तब भड्डरी, बीज बवौ मति कोइ ॥४०॥

यदि फागुन के महीने में पाँच मङ्गल और पौष में पाँच शनिवार पड़े, तो भड्डरी कहते हैं कि अकाल पड़ेगा; कोई बीज मत बोओ।

होली झर को करो विचार। सुभ अरु असुभ कहा फल सार॥
पच्छिम वायु बहै अति सुन्दर। समयो निपजै सजल बसुन्धर॥
पूरब दिशि की बहै जो बाई। कछु भीजै कछु कोरो जाई॥
दक्खिन बाय बहे बध नास। समया निपजे सनई घास॥
उत्तर बाय बहे दड़बड़िया। पिरथी अचूक पानी पड़िया॥
जोर झकोरै चारो बाय। दुखया परघा जीव डराय॥
जोर झलो आकाशै जाय। तो पृथ्वी संग्राम कराय॥४१॥

होली के दिन की हवा का विचार करो। उसके शुभ और अशुभ फलों का सार बताया जाता है। पश्चिम की हवा बहे, तो बहुत अच्छा है। उससे पैदावार अच्छी होगी और वृष्टि होगी। पूरब की हवा बहती हो, तो कुछ वृष्टि होगी और कुछ सूखा पड़ेगा। दक्षिण की हवा बहती हो, तो प्राणियों का बध और नाश होगा। खेती में सनई और घास की पैदावार अधिक होगी। उत्तर की हवा बहती हो, तो पृथ्वी पर निश्चय पानी पड़ेगा। यदि चारों ओर का झकोरा चलता हो, तो दुःख

पड़ेगा और जीवों को भय होगा। यदि हवा नीचे ऊपर को जाय, तो पृथ्वी पर संग्राम होगा।

होली सूक सनीचरी, मङ्गलवारी होय।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय ॥४२॥

होली यदि शुक्र, सनीचर या मंगलवार को पड़े, तो पृथ्वी पर भयानक समय उपस्थित होगा। शायद ही कोई जीवे।

चैत अमावस जै घड़ी, परती पत्रा माँहिं।
तेता सेरा भड्डुरी, कातिक धान बिकाहिं ॥४३॥

पंचांग में चैत्र का अमावस जै घड़ी होगा, कातिक में उतने ही सेर धान बिकेगा।

चैत सुदी रेवतड़ी जोय। बैसाखहिं भरणी जो होय ॥
जेठ मास मृगसिर दरसंत। पुनरबसू आषाढ़ चरंत ॥
जितो नछत्र कि बरत्यो जाई। तेतो सेर अनाज बिकाई ॥४४॥

चैत्र सुदी में रेवती, वैशाख में भरणी, जेठ में मृगशिरा और आषाढ़ में पुनर्वसु जितने घड़ी रहेंगे, उतने सेर अनाज बिकेगा।

चैत मास उजियाले पाख। आठें दिवस बरसता राख ॥
नव बरसे जित बिजली जोय। ता दिसि काल हलाहल होय ॥४५॥

चैत सुदी अष्टमी को यदि आकाश से धूल बरसती रहे और नवमी को पानी बरसे, तो जिस दिशा में बिजली चमकेगी, उस दिशा में भयानक दुर्भिक्ष पड़ेगा।

चैत मास दसमी खड़ा, बादर बिजुरी होय।
तौ जानौ चित माँहि यह, गर्भ गला सब जोइ ॥४६॥

चैत सुदी दशमी को यदि बादल और बिजली हो, तो यह समझ रखना कि वर्षा का गर्भ गल गया। अर्थात् चौमासे में वृष्टि बहुत कम होगी।

चैत मास दसमी खड़ा, जो कहुँ कोरा जाइ।
चौमासे भर बादला, भली भाँति बरसाइ ॥४७॥

यदि चैत सुदी दशमी को बादल न हुआ, तो समझना कि कि चौमासे भर अच्छी वृष्टि होगी।

चैत पूर्णिमा होइ जो, सोम गुरौ बुधवार।
घर घर होइ बधावड़ा, घर घर मंगलचार ॥४८॥

चैत्र की पूर्णिमा यदि सोमवार, बृहस्पतिवार और बुधवार को पड़े, तो घर-घर आनन्द की बधाई बजेगी और घर-घर मंगलाचार होगा।

असनी गलिया अन्त बिनासै। गली रेवती जल को नासै॥
भरनी नासै तृना सहूतो। कृतिका बरसै अन्त बहूतो ॥४६॥

चैत्र में यदि अश्विनी बरस जाय, तो चौमासे के अंत में सूखा पड़ेगा। रेवती बरसे, तो वृष्टि होगी ही नहीं। भरणी बरसे तो तृण का भी नाश हो जायगा। और कृतिका बरसे, तो अन्त में अच्छी वृष्टि होगी।

बादर ऊपर बादर धावै। कह भड्डर जल आतुर आवै ॥५०॥

बादल के ऊपर बादल दौड़ने लगे, तब भड्डरी कहते हैं कि जल्दी ही पानी बरसेगा।

असुना गल भरनी गली, गलियो जेष्ठा मूर।
पुरबाषाढ़ा धूल कित, उपजै सातो तूर ॥५१॥

अश्विनी में वर्षा हुई, भरणी में हुई, ज्येष्ठा और मूल में हुई, तो पूर्वाषाढ में कितनी धूल शेष रहेगी? निश्चय ही सातो प्रकार के अन्न उपजेंगे।

कृतिका तो कोरी गई, अद्रा मेंह न बूँद।
तौ यों जानौ भड्डरी, काल मचावै दूँद ॥५२॥

कृतिका नक्षत्र कोरा ही चला गया, वर्षा हुई ही नहीं; आर्द्रा में बूँद भी नहीं गिरी। भड्डरी कहते हैं कि निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

जो चित्रा में खेलैं गाई। निहचै खाली साख न जाई ॥५३॥

यदि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा—गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट, गो-क्रीड़ा के दिन चित्रा नक्षत्र में चन्द्रमा हो, तो फ़सल अच्छी होगी।

रोहिणि माहीं रोहिणी, एक घड़ी जो दीख।
हाथ मे खपरा मेदिनी, घर घर माँगै भीख ॥५४॥

यदि चैत्र में रोहिणी में एक घड़ी भी रोहिणी रहे, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि लोग हाथ में खप्पर लेकर भीख माँगते फिरेंगे।

मृगसिर बायु न बाजिया, रोहिणि तपै न जेठ।
गोरी बीनै काँकरा, खड़ी खेजड़ी हेठ ॥५५॥

मृगशिरा में हवा न चली और जेठ में रोहिणी न तपी, तो वृष्टि न होगी। किसान की स्त्री खेजड़ी (एक वृक्ष) के नीचे खड़ी कंकड़ चुनेगी।

आद्रा तौ बरसै नहीं, मृगसिर पौन न जोय।
तौ जानौ ये भड्डरी, बरखा बूँद न होय ॥५६॥

आर्द्रा में वर्षा नहीं हुई और मृगशिरा में हवा न चली, तो भड्डरी कहते हैं कि एक बूँद भी बरसात नहीं होगी।

बैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ।
दामा बिना बिसाहिजै, पूरा साख भरेइ ॥५७॥

बैशाख शुक्ल प्रतिपदा को यदि बादल हो और बिजली चमके, तो उस वर्ष ऐसी अच्छी पैदावार होगी कि अन्न बिना मोल के बिकेगा।

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवै संजूत।
तो भाखै यों भड्डरी, निपजै नाज बहूत ॥५८॥

बैशाख में अक्षय तृतीया के दिन यदि गुरुवार हो, तो भड्डरी कहते हैं कि अन्न बहुत उपजेगा।

अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावस मूल न जोई॥
राखी श्रवणो हीन विचारो। कातिक पूनो कृतिका टारो॥
महि माहीं खल बलहिँ प्रकासै। कहत भड्डरी सालि बिनासै ॥५९॥

बैशाख की अक्षय तृतीया को यदि रोहणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और भड्डरी कहते हैं कि धान की उपज न होगी।

जेठ पहिल परिवा दिना, बुध बासर जो होइ।
मूल असाढ़ी जो मिलै, पृथ्वी कम्पै जोइ ॥६०॥

जेठ बदी प्रतिपदा को यदि बुधवार पड़े और आषाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो, तो पृथ्वी दुःख से काँप उठेगी।

जेठ आगली परवा देखू। कौन बासरा है यों पेखू ॥
रविबासर अति बाढ़ बढ़ाय। मंगलवारी व्याधि बताय ॥
बुधा नाज महँगा जो करई। सनिबासर परजा परिहरई ॥
चंद्र सुक्र सुरगुरु के बारा। होय तो अन्न भरो संसारा ॥६१॥

जेठ बदी प्रतिपदा को रविवार पड़े, तो बाढ़ आवे; मंगल पड़े, तो रोग बढ़े; बुधवार पड़े, तो अन्न महँगा हो; शनिवार हो, तो प्रजा का कष्ट हो। और यदि सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार पड़े, तो संसार अन्न से भर जायगा।

जेठ बदी दसमी दिना, जो सनिबासर होइ।
पानी होय न धरनि पर, बिरला जीवै कोइ ॥६२॥

जेठ कृष्ण दशमी को यदि शनिवार पड़े, तो पृथ्वी पर पानी नपड़ेगा अर्थात् वर्षा न होगी और शायद ही कोई जीवित रहे।

जेठ उँजारे पच्छ में आद्रादिक दस रिच्छ।
सजल होयँ निरजल कह्यो निरजल सजल प्रत्यच्छ ॥६३॥

जेठ सुदी में यदि आर्द्रा आदि दस नक्षत्र बरस जायँ, तो चौमासे में सूखा पड़ेगा और यदि न बरसें, तो चौमासे में पानी बरसेगा।

स्वाति बिसाखा चित्रा, जेठ सु कोरा जाय।
पिछलो गरभ गल्यो कहो, बनी साख मिट जाय ॥६४॥

यदि स्वाती, विशाखा और चित्रा जेठ में सूखा जाय; अर्थात् इनमें बादल न हों, तो वृष्टि का पिछला गर्भ गला हुआ समझना चाहिये। इससे खेती नष्ट हो जायगी।

तपा जेठ में जो चुइ जाय। सभी नखत हलके परि जायँ ॥६५॥

जेठ में मृगशिर के अंत के दस दिन को, दसतपा कहते हैं। यदि दसतपा में पानी बरस जाय, तो पानी के सभी नक्षत्र हलके पड़ जायँगे।

जेठ उज्यारी तीज दिन, आद्रा रिष बरसन्त।
जासी भाखै भड्डर, दुभिछ अवसि करन्त ॥६६॥

जेठ सुदी तृतीया को यदि आर्द्रा नक्षत्र बरसे, तो भड्डरी ज्योतिषी कहते हैं कि अवश्य दुर्भिक्ष पड़ेगा।

चैत मास जो बीज विज़ोवै। भरि बैसाखहिँ टेसू धोवै ॥६७॥

यदि चैत के महीने में बिजली चमके, तो बैसाख के महीने में इतना पानी बरसे कि टेसू के फूल धुल जायँगे।

जेठ मास जो तपै निरासा। तो जानो बरषा की आसा ॥६८॥

जेठ के महीने में खूब गरमी पड़े तो वर्षा की आशा करनी चाहिये।

उतरे जेठ जो बोलै दादर। कहैं भड्डरी बरसै बादर ॥६९॥

यदि जेठ उतरते ही मेंढक बोलने लगें, तो वृष्टि जल्दी होगी।

असाढ़ मास पुनगाना। धुजा बाँधि के देखौ पौना ॥
जो पै पवन पुरब से आवै। उपजै अन्न मेघ झरि लावै ॥
अगिन कोन जो बहै समारा। पड़ै काल दुख सहै सरीरा ॥
दखिन बहै जल थल अलगोरा। ताहि समै जूझैं बड़ बीरा ॥
तीरथ कोन बूँद ना परैं। राजा परजा भूखन मरैं ॥
पच्छिम बहै नाक कर जानो। पड़ै तुसार तेज डर मानो ॥
बायब बह जल थल अति भारी। मूस उगाह दंड बस नारी ॥
उत्तर उपजै बहु धन धान। खेत बात सुख करै किसान ॥
कोन इसान दुन्दुभ बाजै। दही भात भोजन सब गाजै ॥७०॥

आषाढ़ की पूर्णमासी को झण्डी बाँधकर हवा का रुख देखना चाहिये। यदि पूर्व की हवा हो, तो समझना चाहिये कि पैदावार अच्छी होगी, वृष्टि बहुत होगी। यदि पूर्व और दक्षिण कोन की हवा हो, तो अकाल पड़ेगा और शरीर को कष्ट मिलेगा। यदि दक्षिण की हवा हो, तो पानी बहुत बरसेगा और बड़े-बड़े योद्धा लड़ मरेंगे। यदि दक्षिण-पश्चिम कोन की हवा हो, तो बरसात

न होगी और राजा-प्रजा दोनों भूखों मरेंगे। यदि पश्चिम की हवा हो, तो मौसम अच्छा होगा, लेकिन पाला ज्यादा पड़ेगा। यदि पश्चिम-उत्तर कोन की हवा हो, तो पानी बहुत बरसेगा, लेकिन चूहे बहुत पैदा होंगे और हानि पहुँचायेंगे और स्त्रियाँ दुःख पायेंगी। यदि उत्तर की हवा हो, तो धन-धान्य की उपज बहुत होगी, और किसान मौज करेंगे। यदि पूर्व-उत्तर कोन की हवा हो, तो पैदावार अच्छी होने के कारण शादी ब्याह बहुत होंगे। सब लोग दही-भात खाकर मस्त रहेंगे।

कृष्ण अषाढ़ी प्रतिपदा, जो अम्बर गरजन्त।
छत्री छत्री जूझिया, निहचै काल पड़न्त ॥७१॥

आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि आकाश गरजे, तो क्षत्रिय-क्षत्रिय लड़ पड़ेंगे और निश्चय अकाल पड़ेगा।

पाठान्तर—उत्तर गरजन्त।

धुर आसाढ़ी बिज्जु की, चमक निरन्तर जोय।
सोमाँ सुकराँ सुरगुराँ, तो भारी जल होय ॥ ७२ ॥

आषाढ़ बदी में सोमवार, शुक्र और बृहस्पति के दिन यदि लगातार थोड़ी-थोड़ी दूर पर बिजली चमके तो पानी बहुत बरसेगा।

नवैं असाढ़े बादलो, जो गरजै घनघोर।
कहैं भड्डरी जोतिसी, काल पड़े पहुँच ओर ॥ ७३ ॥

आषाढ़ कृष्ण नौमी को यदि बादल ज़ोर से गरजे तो भड्डरी ज्योतिषी कहते हैं कि चारों ओर अकाल पड़ेगा।

दसै असाढ़ी कृष्ण को, मंगल रोहिनि होय।
सस्ता धान बिकाइहै, हाथ न छुइहैं कोय ॥ ७४ ॥

आषाढ़ कृष्ण की दशमी को यदि मंगल और रोहिणी हो, तो इतना सस्ता अन्न बिकेगा कि कोई हाथ से भी न छुयेगा।

सुदि असाढ़ में बुध को, उदै भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखो, महाकाल अवरेख ॥ ७५ ॥

आषाढ़ शुक्ल में यदि बुध उदय हों और सावन में शुक्र अस्त हों, तो महा अकाल पड़ेगा।

सुदि असाढ़ की पंचमी, गरज धमधमो होय।
तो यों जानो भड्डरी, मधुरी मेघा जोइ ॥ ७६ ॥

आषाढ़ शुक्ल की पंचमी को यदि बिजली चमके, तो भड्डरी कहते हैं कि बरसात अच्छी होगी।

सुदि असाढ़ नौमी दिना, बादर झीनो चन्द।
जानै भड्डर भूमि पर, मानो होय अनन्द ॥ ७७ ॥

आषाढ़ शुक्ल नवमी को यदि चन्द्रमा के ऊपर हलका बादल छाया रहे तो भड्डरी कहते हैं कि पृथ्वी पर आनन्द होगा।

चित्रा स्वाति बिसाखड़ी, जो बरसै आषाढ़।
चालौ नराँ बिदेसड़ो, परिहै काल सुगाढ़ ॥ ७८ ॥

यदि आषाढ़ में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र बरसें, तो भयानक अकाल पड़ेगा। मनुष्यों को विदेश ही में शरण मिलेगी।

आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भीनो चन्द।
सो भड्डर जोसी कहै, सकल नराँ आनन्द ॥ ७९ ॥

आषाढ़ पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा बादलों से ढका हो, तो भड्डरी कहते हैं कि सब मनुष्य सुख पायेंगे।

आसाढ़ी पूनो दिना, निर्मल ऊगै चन्द।
पीव जाव तुम मालवै, अटूठैं छै दुख द्वन्द ॥ ८० ॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा स्वच्छ उदय हो, तो हे स्वामी! तुम मालवे चले जाना, यहाँ कठिन दुःख पड़ेगा।

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीज बरसन्त।
नासै लच्छन काल का, आनँद मानो सन्त ॥ ८१ ॥

आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि बादल गरजे, बरसे और बिजली चमके, तो सुकाल का लक्षण है। खूब आनन्द होगा।

आसाढ़ी पूनो की साँझ। वायु देखिये नभ के माँझ ॥

नैऋत भूईं बूँद ना पड़े। राजा परजा भूखों मरें॥
अगिन कोन जो बहे समीरा। पड़े काल दुख सहैं सरीरा॥
उत्तर से जल फूहों परे। मूस साँप दोनों अवतरें॥
पच्छिम समै नीक करि जान्यो। आगे बहै तुसार प्रमान्यो॥
जो कहुँ बहै इसाना कोना। नाप्यो बिस्वा दो दो दोना॥
जो कहुँ हवा अकासे जाय। परै न बूँद काल परि जाय॥
दक्खिन पच्छिम आधो समयो। भड्डर जोसी ऐसे भनयो॥ ८२॥

आषाढ़ की पूर्णिमा की शाम को आकाश में हवा की परीक्षा करना। नैऋत्य कोन की हवा हो, तो पृथ्वी पर एक बूँद भी पानी नहीं पड़ेगा और राजा प्रजा दोनों भूखों मरेंगे। अग्नि कोन की हवा हो, तो अकाल पड़ेगा और शरीर को कष्ट मिलेगा। उत्तर की हवा हो, तो पानी साधारण बरसेगा चूहे और साँप बहुत पैदा होंगे। पश्चिम की हवा हो, तो समय अच्छा होगा, किन्तु आगे चलकर पाला पड़ेगा। और यदि कहीं ईसान कोन की हवा हो, तो पैदावार बिस्वे में दो दो दोने भर को होगी। यदि हवा आकाश की ओर जाय, तो एक बूँद भी वर्षा न होगी और अकाल पड़ जायगा। दक्खिन पश्चिम की हवा हो, तो पैदावार आधी होगी। भड्डरी ज्योतिषी ने ऐसा कहा है।

जो बदरी बादर माँ खमसे। कहैं भड्डरी पानी बरसे॥ ८३॥

बादल से बादल मिलें, तो भड्डरी कहते हैं कि पानी बरसेगा।

आसाढ़ मास आठें अँधियारी। जो निकले चन्दा जलधारी॥
चन्दा निकले बादल फोड़। साढ़े तीन मास बरखा का जोग॥ ८४॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को यदि चन्द्रमा बादल में से निकले, तो साढ़े-तीन महीने वर्षा होगी।

आगे रवि पीछे चलै, मंगल जो आसाढ़।
तौ बरसै अनमोल ही, पृथी अनन्दै बाढ़॥ ८५॥

आषाढ़ में यदि सूर्य आगे और मंगल पीछे हो, तो पानी ख़ूब बरसेगा और पृथ्वी पर आनंद बढ़ेगा।

आर्द्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।

इन मंगल आँधी चलै, तबलौं बरखा छीन ॥ ८६ ॥

यदि मंगल के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में आँधी चले, तो बरसात कम समझना।

असाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चन्द।

तो भड्डर जासी कहैं, होवै परम अनन्द ॥ ८७ ॥

आषाढ़ की पूर्णमासी को यदि चन्द्रमा बादलों से घिरा रहे, तो भड्डर कहते हैं कि परम आनन्द होगा। अर्थात् वर्षा अच्छी होगी।

आगे मंगल पीछे भान। बरषा होवै ओस समान ॥ ८८ ॥

जब मंगल आगे हो और सूर्य पीछे, तब वर्षा ओस के समान अर्थात् बहुत थोड़ी होगी।

आगे मेघा पीछे भान। बरषा होवै ओस समान ॥ ८९ ॥

आगे मघा और पीछे सूर्य हो, तो वर्षा ओस के समान होगी।

आगे मेघा पीछे भान। पानी पानी रटै किसान ॥ ९० ॥

आगे मघा और पीछे सूर्य हो, तो सूखा पड़ेगा। किसान पानी-पानी की रट लगायेगा।

रात निर्मली दिन को छाँहीं। कहैं भड्डरी पानी नाहीं ॥ ९१ ॥

रात निर्मल हो और दिन में बादलों की छाया दिखाई पड़े, तो भड्डरी कहते हैं कि अब वर्षा न होगी।

पूरब को घन पच्छिम चलै। राँड़ बतकही हँसि हँसि करै ॥

ऊ बरसै ऊ करै भतार। भड्डर के मन यही विचार ॥ ९२ ॥

पूर्व का बादल पश्चिम को जाता हो, विधवा पर-पुरुष से हँस-हँस कर बतलाती हो, तो भड्डर कहते हैं कि वे बादल बरसेंगे और विधवा दूसरा पति कर लेगी।

मंगल रथ आगे चलै, पीछे चलै जो सूर।

मन्द वृष्टि तब जानिये, पड़सी सगलै भूर ॥ ९३ ॥

यदि मंगल आगे हो और सूर्य पीछे; तो वृष्टि कम होगी और सर्वत्र सूखा पड़ेगा।

आगे मंगल पीठ रबि, जो असाढ़ के मास।
चौपट नासै चहुँ दिसा, बिरलै जीवन आस ॥ ६४ ॥

आषाढ़ में यदि मंगल आगे हो, और सूर्य पीछे; तो चारों ओर चौपायों का नाश होगा और शायद ही किसी के जीने की आशा हो।

न गिनु तीनि सै साठ दिन, ना कर लग्न बिचार।
गिनु नौमी आषाढ़ बदि, होवै कौनउ बार।
रबि अकाल मंगल जग डगै। बुधा समो सम भावो लगै॥
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय। पुहुम फूल फलन्ती जोय ॥६५॥

न तीन सौ साठ दिनों की गिनती करो, और न लग्न का विचार करो। आषाढ़ बदी नवमी का विचार करो, चाहे वह किसी दिन पड़े। रविवार को होगी तो अकाल पड़ेगा, मंगल को होगी तो पृथ्वी कांप उठेंगे; बुध को होगी तो समभाव रहेगा; सोमवार, शुक्रवार या वृहस्पतिवार को होगी त पृथ्वी और स्त्री फूलें फलेंगी।

रोहिनि जो बरसै नहीं, बरसै जेठा मूर।
एक बूँद स्वाती पड़ै, लागै तीनों तूर ॥ ६६ ॥

यदि रोहिणी न बरसे, पर जेष्ठा और मूल बरस जाय और एक बूँद स्वाती की भी पड़ जाय, तो तीनों फसलें अच्छी होंगी।

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाखैं यों भड्डली, साख सवाई जाय ॥ ६७ ॥

सावन बदी चौथ को यदि बादल बरसे, तो भड्डरी कहते हैं कि उपज सवाई होगी।

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिणि होइ।
महँग नाज अरु अल्प जल, बिरला बिलसै कोइ ॥६८॥

श्रावण के पहले पक्ष की दशमी को यदि रोहिणी हो, तो अन्न महँगा होगा, जल कम बरसेगा और शायद ही कोई सुख भोगे।

सावन बदि एकादसी, जेती रोहिणि होय।
तेतो समया ऊपजै, चिन्ता करो न कोय ॥९९॥

श्रावण कृष्ण एकादशी को जितने दंड रोहिणी होगी, उसी परिणाम से उपज होगी। व्यर्थ चिन्ता कोई मत करो।

सावन कृष्ण एकादसी, गर्जि मेघ घहरात।
तुम जाओ पिय मालवै, हम जाबै गुजरात ॥१००॥

सावन बदी एकादशी को यदि बादल गरज-गरज कर घहराता रहे, तो अकाल पड़ेगा। हे स्वामी! तुम मालवे चले जाना और मैं गुजरात चली जाऊँगी।

जो कृतिका तो किरवरो, रोहिणि होय सुकाल।
जो मृगसिर आवै तहाँ, निहचै पड़ै दुकाल ॥१०१॥

यदि सावन बदी द्वादशी को कृत्तिका हो, तो अन्न का भाव साधारण रहेगा। रोहिणी हो, तो सुकाल होगा और यदि मृगशिर पड़े, तो निश्चय दुर्भिक्ष पड़ेगा।

सावन सुकला सत्तमी, छिपि कै ऊगै भान।
तब लग दैव बरीसिहैं, जब लग देव-उठान ॥१०२॥

सावन सुदी सप्तमी को यदि इतनी बदली हो कि उदय होते समय सूर्य दिखाई न दे, बाद को दिखाई दे, तो समझना चाहिये कि वर्षा देवोत्थान एकादशी तक होगी।

सावन केरे प्रथम दिन, उवत न दीखै भान।
चार महीना बरसै पानी, याको है परमान ॥१०३॥

सावन बदी प्रतिपदा को यदि ऐसी बदली हो कि उदय के समय सूर्य न दिखाई पड़े, तो निश्चय जानो कि चार महीने तक वृष्टि होगी।

माघ उजेरी अष्टमी, वार होय जो चन्द।
तेल घीव को जानिये, महँगो होय दुचन्द ॥१०४

यदि माघ सुदी अष्टमी को सोमवार हो, तो तेल और घी का भाव दूना महँगा हो जायगा।

पुरबा बादर पच्छिम जाय । वासे वृष्टि अधिक बरसाय ॥
जो पच्छिम से पूरब जाय । वर्षा बहुत न्यून हो जाय ॥१०५॥

पूर्व दिशा से यदि बादल पश्चिम को जायँ, तो वृष्टि अधिक होगी। यदि पश्चिम के बादल पूर्व को जायँ, तो वर्षा बहुत न्यून होगी ।

सावन बदी एकादसी, बादल ऊगै सूर ।
तो यों भाखै भड्डरी, घर घर बाजै तूर ॥१०६॥

सावन बदी एकादशी को यदि उदय होते हुये सूर्य पर बादल रहें, तो भड्डरी कहते है कि सुकाल होगा और घर-घर आनंद की बंशी बजेगी ।

सावन सुक्ला सत्तमी, चन्दा छिटिक करै ।
की जल देखौ कूप में, की कामिनि सीस धरै ॥१०७॥

सावन सुदी सप्तमी को यदि आकाश निर्मल हो और चन्द्रमा साफ़ उदय हो, तो सूखा पड़ेगा । पानी या तो कुँए में मिलेगा या घड़े में स्त्रियों के सिर पर ।

सावन पहली पंचमी, जोर की चलै बयार ।
तुम जाना पिय मालवा, हम जावै पितुसार ॥१०८॥

सावन बदी पंचमी को यदि ज़ोर को हवा चले, तो हे प्रिय ! तुम मालवे चले जाना, मैं पिता के घर चली जाऊँगी । अर्थात् अकाल पड़ेगा ।

चित्रा स्वाति बिसाखहूँ, सावन नहिं बरसन्त ।
हाली अन्नै संग्रहो, दूनो मोल करन्त ॥१०९॥

यदि चित्रा, स्वाती और विशाखा भी सावन में न बरसे, तो जल्दी अन्न का संग्रह कर लो। क्योंकि भाव दूना महँगा हो जायगा ।

करक जु भीजै काँकरो, सिंह अभीनो जाय ।
ऐसा बोलै भड्डली, टीड़ी फिरि फिर खाय ॥ ११० ॥

सावन में जब कर्क राशि पर सूर्य हों, तब यदि इतनी अल्प वृष्टि हो कि केवल कंकड़ ही भीजे और सिंह राशि भी सूखा ही जाय, तो भड्डरी कहते हैं टीड़ी पैदा होंगी और बार-बार फसल को खायँगी ।

मीन सनीचर कर्क गुरु, जो तुल मंगल होय।
गोहूँ गोरस गोरड़ी, बिरला बिलसै कोय ॥१११॥

यदि मीन का शनैश्चर, कर्क का वृहस्पति और तुला का मंगल हो, तो गेहूँ, दूध और ऊख की उपज मारी जायगी और शायद ही कोई इनसे सुख पावे।

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय।
राजा बिग्रह प्रजा छय, बिरला जीवै कोय ॥११२॥

शनैश्चर मीन का हो या तुला का, दोनों दशाओंमें राजाओं में युद्ध होगा, प्रजा का नाश होगा और शायद ही कोई जीवित बचे।

सावन कृष्ण पच्छ में देखौ। तुल को मंगल होय बिसेखौ॥
कर्क रासि पर गुरु जो जावै। सिंह रासि में सुक्र सुहावै॥
ताल सो सोखै बरसै धूर। कहूँ न उपजै सातो तूर ॥११३॥

सावन के कृष्ण पक्ष में यदि तुला का मंगल हो, या कर्क राशि पर वृहस्पति हो, या सिंह राशि पर शुक्र हो, तो तालाब सूख जायँगे, धूल की वृष्टि होगी और कहीं अन्न न उपजेगा।

सावन उजरे पाख में, जो ये सब दरसाय।
दुन्द होय छत्री लड़ैं, भिरैं भूमिपति राय ॥११४॥

सावन सुदी में यदि यही योग पड़े, तो भयानक लड़ाई होगी, क्षत्रिय और राजा राव लड़ेंगे।

तीतर बरनी बादरी, रहै गगन पर छाय।
कहै डंक सुनु भड्डरी, बिन बरसे न जाय ॥११५॥

तीतर के पंख की शक्ल वाली बदली यदि आकाश पर छा जाय, तो डंक कहते हैं कि हे भड्डरी! सुन, वह बदली बरसे बिना न्हीं जायगी।

सावन सुक्ला सत्तमी, उवत जो दीखै भान।
या जल मिलि है कूप में, या गंगा असनान ॥११६॥

सावन सुदी सतमी को यदि आकाश साफ़ हो और सूर्य उदय होता हुआ दिखाई पड़े, तो सूखा पड़ेगा। पानी या तो कुँवों में मिलेगा या गंगा-स्नान में।

सावन पछिवाँ भादों पुरवा, आसिन बहै ईसान।
कातिक कंता सींक न डोलै, गाजैं सबै किसान ॥११७॥

सावन में पछुवाँ, भादों में पूर्वी और आश्विन में ईशान कोन की हवा बहे, तो हे स्वामी! कातिक में एक सींक भी न हिलेगी अर्थात् हवा न बहेगी और सब किसान हर्ष से गरजेंगे।

तीतर बरनो बादरा, विधवा काजर रेख।
वे बरसैं वे घर करैं, कहैं भड्डरी देख ॥११८॥

तीतर के पंख की तरह बदली हो और विधवा की आँखों में काजल की रेखा हो, तो भड्डरी कहते हैं कि बदली बरसेगी और विधवा दूसरा घर करेगी।

पाठान्तर—पायें मीन न मेख।

पवन थक्यो तीतर लवै, गुरुहिं सदेवै नेह।*
कहत भड्डरी जोतिसी, ता दिन बरसै मेह ॥११९॥

हवा थम गई हो, तीतर जोड़ा खा रहे हों,...तो भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि उस दिन वर्षा होगी।

कलसे पानी गरम है, चिरियाँ न्हावै धूर।
अंडा लै चींटी चढ़ैं, तौ बरषा भरपूर ॥१२॥

घड़े में पानी गरम जान पड़े, चिड़ियाँ धूल में नहायें और चींटी अंडे लेकर ऊपर की ओर चढ़ती हो, तो भरपूर वर्षा होगी।

बोले मोर महातुरो, खाटा होय जु छाछ।
मेह मही पर परन का, जानो काछे काछ ॥१२१॥

मोर जल्दी-जल्दी बोले और मट्ठा खट्टा हो जाय, तो समझो कि पानी पृथ्वी पर पड़ने के लिये कछनी काछे है।

सावन सुक्ला सत्तमी, जो बरसे अधिरात।
तू पिय जाओ मालवा, हम जायें गुजरात ॥१२२॥

---

* पाठ स्पष्ट नहीं है।

सावन सुदी सप्तमी को यदि आधी रात के समय पानी बरसे, तो हे पति! तुम मालवे चले जाना और मैं गुजरात चली जाऊँगीं। अर्थात् अकाल पड़ेगा।

सावन उखमे भादों जाड़, बरजा मारे ठाढ़ कछाँड़ ॥१२३॥

यदि सावन में गरमी जान पड़े और भादों में सरदी, तो समझना चाहिये कि वर्षा बहुत होगी।

कुहो अमावस मूल बिन, बिन रोहिनि अखतीज।
स्रवन बिना हो स्रावनो, आधा उपजै बीज ॥१२४॥

अमावस के दिन मूल नक्षत्र न पड़े, अक्षय तृतीया को रोहिणी न पड़े और सलूनो के दिन श्रवण न पड़े, तो बीज आधा उगेगा।

सावन पहली पंचमी, गरभे ऊदे भान।
बरखा होगी अति घनी, ऊँचे जानो धान ॥१२५॥

सावन बदी पंचमी को यदि सूर्य बादलों में से निकले, तो बढ़ी वर्षा होगी और धान की फ़सल अच्छी होगी।

सावन बदी एकादशी, जितनी घड़ी क होय।
तितनो संवत नीपजै, चिंता करै न कोय ॥१२६॥

सावन बदी एकादशी को जै घड़ी एकादशी होगी, उतने ही सेर अन्न बिकेगा। कोई चिन्ता न करे।

मृगसिरा वायु न बादला, रोहिनि तपै न जेठ।
अद्रा जो बरसै नहीं, कौन सहै अलसेठ ॥१२७॥

यदि मृगशिरा में न हवा चले, न बादल हों, जेठ में गरमी न पड़े और आर्द्रा न बरसे, तो खेती करने का झंझट कौन ले? अर्थात् मौसम बहुत ख़राब होगा।

सर्व तपै जो रोहिणी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ को, उपजै सातो तूर ॥१२८॥

यदि रोहिणी पूरी तपे, मूल भी पूरा तपे और जेठ का परिवा भी पूरा तपे, तो सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न हों।

जौ पुरवा पुरवाई पावे। झूरी नदिया नाव चलावे॥
ओरी क पानी बँड़ेरी जावे ॥१२६॥

अगर पूर्वा नक्षत्र में पूर्व की हवा चले, तो इतना पानी बरसे कि सूखी नदी में भी नाव चलने लगे। और ओलती का पानी छप्पर की चोटी पर चढ़ जायगा।

सावन सुकला सत्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसे तो सूखा पड़े, नाहीं समौ सुकाल ॥१३०॥

सावन सुदी सप्तमी को यदि आधी रात के समय बादल गरजे और पानी बरसे, तो सूखा पड़ेगा और यदि पानी न बरसे, तो समय अच्छा होगा।

भोर समै डरडम्बरा, रात उजेरी होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय ॥१३१॥

सबेरे आकाश में बादल छाये हों, रात में आकाश साफ़ रहे और दोपहर में सूर्य तपे, तो दुर्भिक्ष पड़ेगा।

सुंकरवारी बादरी, रही सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी, बिन बरसे नहिं जाय ॥१३२॥

शुक्रवार के दिन बदली हो और शनैश्चरवार को छाई रहे, तो भड्डरी कहते हैं कि बिना बरसे नहीं जायगी।

मघादि पंच नछत्तरा, भृगु पच्छिम दिसि होय।
तो यों जानो भड्डरी, पानी पृथी न जोय ॥१३३॥

मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा नक्षत्रों में यदि शुक्र पश्चिम दिशा में हो, तो भड्डरी कहते हैं कि पृथ्वी पर पानी न बरसेगा।

रात्यो बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै परै अकाल ॥१३४॥

रात में यदि कौवे बोलें और दिन में सियार; तो भड्डरी कहते हैं कि अकाल निश्चय पड़ेगा।

रवि के आगे सुरगुरू, ससि सुक्र परबेस।
दिवस चु चौथे पाँचवें, रुधिर बहन्तो देस ॥१३५॥

यदि सूर्य के आगे बृहस्पति हों और चन्द्रमा शुक्र की परिधि में प्रवेश करे, तो उसके चौथे-पाँचवें दिन देश में रक्त बह चलेगा।

सूर उगे पच्छिम दिसा, धनुष उगन्तो जान।
दिवस जो चौथे पाँचवें, रुंडमुंड महि मान ॥१३६॥

यदि सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े, तो उसके चौथे-पाँचवें दिन पृथ्वी रुण्ड मुण्ड से भर जायगी।

उतरा उत्तर दै गई, हस्त गयो मुख मोरि।
भली बिचारी चित्रा, परजा लेइ बहोरि ॥१३७॥

उत्तरा सूखा जवाब दे गई। हस्त मुख मोड़कर चला गया। बेचारी चित्रा ने उजड़ती हुई प्रजा को फिर बसा लिया। अर्थात् उत्तरा और हस्त में वृष्टि नहीं हो, पर चित्रा में हो जाय, तो भी फ़सल अच्छी होगी।

पाठान्तर—भीजै चित्रा बावरी, परजा लेइ बहोरि।

रवि ऊगते भादवा, अम्मावस रविवार।
धनुष उगन्ते पच्छिम, होमो हाहाकार ॥१३८॥

भादौं के अमावस्या को यदि रविवार हो, और उस दिन सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र-धनुष दिखाई पड़े, तो संसार में हाहाकार मच जायगा।

भादों की सुदि पंचमी, स्वाति सँजोगी होय।
दोनों सुभ जोगै मिलै, मंगल बरती लोय ॥ १३९ ॥

भादों सुदी पंचमी को यदि स्वाती हो, तो यह योग शुभ है। लोग आनन्द से रहेंगे।

भादौं मासै ऊजरी, लखौ मूल रबिवार।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार ॥ १४० ॥

यदि भादों सुदी में रविवार के दिन मूल नक्षत्र हो, तो फ़सल अच्छी होगी, ऐसा भड्डरी कहते हैं।

मूल गल्यो रोहिनि गली, अद्रा बाजी बाय।
हाली बेंचो बधिया, खेती लाभ नसाय ॥ १४१ ॥

यदि मूल और रोहिणी नक्षत्र में बादल हो और आर्द्रा में हवा चले, तो जल्दी बैल बेंच डालो। खेती में लाभ न होगा।

भादों बदी एकादसी, जो ना छिटकै मेघ।
चार मास बरसै नहीं, कहै भड्डरी देख॥ १४२॥

भादों बदी एकादशी को यदि बादल तितर-बितर न हो जायँ, तो चार मास तक वर्षा न होगी। ऐसा भड्डरी कहते हैं।

क्या रोहिनि बरसा करै, बचै जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़ै, नासै तीनों तूर॥ १४३॥

रोंहिणी में वर्षा होने और जेठ में न होने से क्या लाभ-हानि है? एक बूँद भी यदि कृत्तिका बरस जाय, तो तीनों फ़सलें चौपट हो जायँगी।

आस्विन बदो अमावसी, जो आवै सनिवार।
समयो होवै किरगरो, जोसी करो विचार॥ १४४॥

कुआर बदी अमावस को यदि शनिवार पड़े, तो समय साधारण होगा।

बिजै दसैं जो बारी होई। संवतसर को राजा सोई॥ १४५॥

विजयादशमी के दिन जो बार होगा, वही संवत्सर का राजा होगा। जैसे मंगलवार हो तो राजा मंगल हो।

स्वाती दीपक जो बरै, खेल बिसाखा गाय।
घना गयंदा रन चढ़ै, उपजी साख नसाय॥ १४६॥

यदि स्वाती नक्षत्र में दीवाली हो, और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो बड़ी भारी लड़ाई हो और खेती की हानि हो।

जिन बारों रवि संक्रमै, तिनै अमावस होय।
खप्पर हाथा जग भ्रमै, भीख न घालै कोय॥ १४७॥

जिस दिन सूर्य की संक्रान्ति हो और उसी दिन अमावस भी हो, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि लोग हाथ में खप्पर लेकर फिरेंगे और कोई भीख न डालेगा।

जिन बारों रवि संक्रमै, तासों चौथे बार।
असुभ परंती सुभ करै, जोसी जोतिस सार॥ १४८॥

जिस दिन सूर्य की संक्रान्ति हो, उसके चौथे दिन अशुभ भी हो, तो शुभ फल होता है।

दूजे तीजे किरबरो, रस कुसुम्भ महँगाय।
पहले छठयें आठयें, धिरथी परलै जाय॥ १४६॥

सूर्य की संक्रान्ति के दूसरे और तीसरे दिन गड़बड़ हैं। रसदार पदार्थ और तेलहन महँगा होगा। और पहला, छठाँ और आठवाँ तो पृथ्वी पर प्रलय करने वाले हैं।

जाड़े में सूतो भला, बैठो बरषा काल।
गरमी में ऊभो भलो, चोखो करै सुकाल॥ १५०॥

द्वितीया का चन्द्रमा जाड़े में सोया हुआ; वर्षा में बैठा हुआ और गर्मी में खड़ा शुभ है।

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रान्ति सो जानियो, संवत महँगो जात॥ १५१॥

रिक्ता तिथि और क्रूर दिन (जैसे शनिवार; मंगल आदि) को यदि दोपहर या प्रातःकाल में संक्रान्ति पड़े, तो समझना कि तू महँ संवगा जायगा।

ज्येष्ठा आर्द्रा सतभिखा, स्वाति सुलेखा माँहि।
जो संक्रान्ति तो जानिये, महँगो अन्न बिकाहिँ॥ १५२॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती, श्लेषा में यदि संक्रान्ति हो, तो समझना कि अन्न महँगा बिकेगा।

कर्क संक्रमी मंगलवार। मकर संक्रमी सनिहि बिचार॥
पंद्रह महुरतवारी होय। देस उजाड़ करै यों जोय॥ १५३॥

यदि कर्क की संक्रान्ति मंगलवार को पड़े और मकर की संक्रान्ति शनिवार को, तथा वह पन्द्रह मुहूर्त्त की हो, तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि देश उजड़ जायगा।

जिहि नक्षत्र में रवि तपै, तिहीं अमावस होय।
परिवा साँझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय॥ १५४॥

सूर्य जिस नक्षत्र में होता है, उसी में अमावस्या होती है। शाम को यदि प्रतिपदा हो जाय, तो सूर्यग्रहण होगा।

मास कृष्ण जो तीज अँध्यारी। लेहु जोतिसी ताहि विचारी॥
तिहि नछत्र जो पूरनमासी। निहचै चन्द्रग्रहन उपजासी॥ १५५॥

महीने की कृष्णपक्ष की तृतीया को कौन सा नक्षत्र है, ज्योतिषी को इसका विचार कर लेना चाहिए। यदि उसी नक्षत्र में पूर्णिमा पड़े, तो निश्चय चन्द्रग्रहण होगा।

दो आश्विन दो भादौं, दो अषाढ़ के माँह।
सोना चाँदी बेंचकर, नाज बेसाहो साह॥ १५६॥

यदि किसी वर्ष मे दो आश्विन या भादों या दो आषाढ़ पड़ें, तो सोना-चाँदी बेंचकर अन्न खरीदो। क्योंकि अकाल पड़ेगा। अन्न महँगा होगा।

पाँच सनीचर पाँच रवि, पाँच मँगर जो होय।
छत्र टूटि धरनी परै, अन्न महँगो होय॥ १५७॥

यदि एक महीने में पाँच सनीचर या पाँच रविवार या पाँच मंगल पड़ें, तो महा अशुभ है। इससे राजा का नाश होगा और अन्न महँगा होगा।

पाठान्तर—**माघे मंगर जेठ रवि, जो शनि भादों होय।**
छत्र टूटि धरती परे, की अन्न महँगो होय॥

माघ में पाँच मंगल, जेठ में पाँच रवि और भादों में पाँच शनिवार पड़ें, तो राजा का नाश होगा या अन्न महँगा होगा।

सावन सुक्ला सत्तमी, उभरे निकले भान।
हम जायें पिय माइके, तुम कर लो गुजरान॥ १५८॥

सावन सुदी सप्तमी को यदि सूर्य बिना बादलों के साफ निकलता हुआ दिखाई पड़े, तो हे प्रियतम! मैं माइके चली जाऊँगी, तुम किसी तरह दिन काट लेना। अर्थात् सूखा पड़ेगा।

धुर अषाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख।
पीव जाइके मालवा, माँगत फिरिहैं भीख॥ १५९॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को यदि चन्द्रमा के आसपास बादल न हों, तो अकाल पड़ेगा। और पुरुष मालवे में जाकर भीख माँगता फिरेगा।

भादों जै दिन पछुवाँ ब्यारी। तै दिन माघे पड़े तुसारी॥ १६०॥

भादों में जितने दिन पछुवाँ हवा बहेगी, माघ में उतने ही पाला पड़ेगा।

जै दिन जेठ बहे पुरवाई। तै दिन सावन धूरि उड़ाई॥ १६१॥

जेठ में जितने दिन पूर्वा हवा बहेगी, सावन में उतने दिन धूल उड़ेगी।

सावन पुरवाई चलै, भादों में पछियाँव।
कन्त डँगरवा बेंचि के, लरिका जाइ जियाव॥ १६२॥

सावन में पूर्वा हवा चले और भादों में पछुवाँ; तो हे स्वामी! बैलों को बेंचकर बालबच्चों की रक्षा करो। अर्थात् वर्षा कम होगी।

अगहन द्वादस मेघ अखाड़। असाढ़ बरसे अछना धार॥१६३॥

यदि अगहन की द्वादशी को बादलों का जमघट दिखाई पड़े, तो आषाढ़ में वर्षा बहुत कम होगी।

मोरपंख बादल उठे, राँडाँ काजर रेख।
वह बरसे वह घर करे, या में मीन न मेख॥ १६४॥

जब मोर के पंख की सी सूरत वाले बादल उठें और विधवा आँखों में काजल दे, तो समझना चाहिये कि बादल बरसेंगे और विधवा किसी पर पुरुष के साथ बस जायगी। इसमें संदेह नहीं।

कर्करासि में मंगलवारी। ग्रहण परै दुर्भिक्ष बिचारी॥ १६५॥

जब चन्द्रमा कर्क राशि में हो, तब मंगल के दिन चन्द्रग्रहण हो, तो दुर्भिक्ष पड़ेगा।

गुरु बासर धन बरखा करई। धावर बारा राजा मरई॥१६६॥

और जब धन राशि में वृहस्पति के दिन चन्द्रग्रहण हो, तो वर्षा होगी और यदि रविवार हो तो राजा मरेगा।

एक मास में ग्रहण जो दोई। तो भी अन्न महंगो होई॥१६७॥

एक महीने में यदि दो ग्रहण पड़ें तो भी अन्न महँगा होगा।

गहता आथा गहतो ऊगै। तोऊ चोखो साख न पूगै ॥१६८॥

यदि ग्रहण ग्रस्तास्त या ग्रस्तोदय हो, तो भी फ़सल अच्छी न होगी।

अद्रा भद्रा कृत्तिका, असरेखा जो मघाहिँ।
चन्दा ऊगै दूज को, सुख से नरा अघाहिँ ॥१६९॥

यदि द्वितीया का चन्द्रमा आर्द्रा, भद्रा, कृत्तिका, अश्लेषा या मघा में उदय हो, तो मनुष्य सुख से तृप्त हो जायँगे।

तेरह दिन का देखो पाख, अन्न महँग समझो बैसाख ॥१७०॥

यदि पक्ष तेरह दिन का हो, तो अन्न बैसाख में महँगा होगा।

छः ग्रह एकै राशि बिलोकौ। महाकालको दीन्हों कोकौ ॥१७१॥

यदि छः ग्रह एक ही राशि पर हों, तो मानों महाकाल को निमन्त्रण दिया है।

सनि चक्कर की सुनिये बात। मेष राशि भुगतै गुजरात ॥
वृष में करै निरोधाचार। भूवै आबू औ गिरनार ॥
मिथुने पिंगल औ मुलतान। कर्के कास्मीर खुरसान ॥
जो सनि सिंहा करसी रंग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग ॥
जो सनि कन्या करै निवास। तो पूरब कछु माल बिनास ॥
तुला वृश्चिकै जो सनि होय। मारवाड़ नै काट विलोय ॥
मकरा कुंभा जो सनि आवै। दीन्हों अन्न न कोई खावै ॥
जो धन मीन सनीचर जाय। पवन चलै पानी जु नसाय ॥१७२॥

अब शनि के चक्कर की बात सुनो। यदि शनि मेष राशि पर हो, तो गुजरात कष्ट भोगेगा। वृष राशि पर हो, तो सब प्रकार का सुख छिन्न-भिन्न हो जायगा और आबू और गिरनार प्रान्त दुःख भोगेंगे। मिथुन राशि पर हो, तो पिङ्गल देश और मुल्तान, और कर्क राशि पर हो, तो काश्मीर और खुरासान पर संकट आयेगा। यदि शनि सिंह राशि पर होगा, तो दिल्ली का राज भंग होगा। यदि शनि कन्या राशि पर होगा, तो पूर्व दिशा में हानि पहुँचायेगा। यदि वृश्चिक राशि पर होगा, तो मारवाड़ को भूखों मारेगा। मकर और कुम्भ राशियों पर शनि होगा, तो ऐसा कष्ट पड़ेगा कि कोई दिया हुआ अन्न भी

नहीं खायगा। धन और मीन राशियों पर शनि होगा, तो हवा तेज़ चलेगी और सूखा पड़ेगा।

साते पाँच तृतीया दसमी, एकादसि में जीव।
ऐहि तिथिन पर जोतहु, तौ प्रसन्न हो सीव ॥१७३॥

सप्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी और एकादशी में जीव का निवास होता है। इन तिथियों में खेत जोते, तो शिवजी प्रसन्न होते हैं।

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा हो।
ऊबड़खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा हो ॥१७४॥

भादों सुदी छठ को यदि अनुराधा नक्षत्र हो, तो ख़राब ज़मीन को भी यदि बो दोगे, तो अन्न बहुत पैदा होगा।

मौन अमावस मूल बिन, रोहिनि बिन अखतीज।
सावन सरवन ना मिले, वृथा बखेरो बीज ॥१७५॥

यदि मौनी अमावस के दिन मूल नक्षत्र न हो, अक्षय तृतीय को रोहिणी न हो और श्रावण में श्रवण नक्षत्र न हो, तो बीज बोना व्यर्थ है। अर्थात् सूखा पड़ेगा।

इतवार करै धनवन्तरि होय। सोम करै सेवा फल होय॥
बुध बिहफै सुक्रै भरै बखार। सनि मंगल बीज न आवै द्वार ॥१७६॥

खेती का काम यदि रविवार को प्रारम्भ करे, तो किसान धनवान् होगा। सोमवार को करेगा, तो परिश्रम का फल मिलेगा। बुध, वृहस्पति और शुक्र को करेगा, तो अन्न से कोठिला भर जायगा और यदि शनिवार और मंगलवार को प्रारम्भ करेगा, तो हानि होगी और बीज भी लौटकर नहीं आयेगा।

कर्क के मंगल होयँ भवानी। दैव धूर बरसेंगे पानी ॥१७७॥

यदि सावन में कर्क और मंगल का योग हो, तो निश्चय वृष्टि होगी।

सोम सनीचर पुरब न चाल। मंगर बुद्ध उतर दिसि काल॥
जो बिहफै को दक्खिन जाय। बिना गुनाहें पनहीं खाय॥
बुद्ध कहै मैं बड़ा सयाना। मोरे दिन जिन किह्यो पयाना॥

कौड़ी से नहिँ भेंट कराऊँ। कल कुसल से घर पहुँचाऊँ ॥
एक पहर जो परखै मोहि। सोने क छत्र धराऊँ तोहि ॥१७८॥

सोमवार और शनिवार को पूर्व, मंगल और बुध को उत्तर में दिशाशूल है। वृहस्पति को जो दक्षिण जायगा, वह विना अपराध ही जूतों से पीटा जायगा। बुध कहता है कि मैं बड़ा चतुर हूं। पर मेरे दिन कहीं जाना मत। मैं कौड़ी से भी भेंट नहीं होने देता। हाँ, क्षेम-कुशल से घर वापस पहुँचा देता हूँ। पर यदि तुम एक पहर तक रुककर चलोगे, तो तुम्हारे सिर पर सोने का छत्र धरा दूँगा। अर्थात् तुम्हारा काम सिद्ध कर दूँगा।

रवि तामूल सोम के दरपन। भौमवार गुर धनियाँ चरबन ॥
बुद्ध मिठाई बिहफै राई। सुक्र कहै महि दही सुहाई ॥
सन्नो बाउभिरंगी भावै। इन्द्रो जाति पुत्र घर आवै ॥ १७९ ॥

रविवार को पान खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर, मंगलवार को गुड़ और धनिया खाकर, बुध को मिठाई और वृहस्पति को राई खाकर यात्रा में जाना चाहिए। शुक्रवार कहता है कि मुझे दही पसन्द है। शनिवार को बाउभिरंग भाता है। इस प्रकार घर से प्रयाण करने वाला इन्द्र को भी जीत कर घर वापस आयेगा।

भरणि बिसाखा कृत्तिका, आरद्रा मघ मूल।
इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल ॥ १८० ॥

भरणी, विशाखा, कृतिका, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में कुत्ता काटे, तो भड्डर कहते हैं कि बुरा है।

कपड़ा पहिरै तीन बार। बुद्ध बृहस्पत सुक्रवार ॥
हारे अबरे का इतवार। भड्डर का है यही बिचार ॥ १८१ ॥

बुध, बृहस्पति और शुक्रवार को नया वस्त्र धारण करना चाहिये। यदि बड़ी ही ज़रूरत आ पड़े, तो रविवार को भी पहना जा सकता है। भड्डरी की यही राय है।

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान॥
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार॥
सनमुख आवैं जो नौ नार। कहै भड्डरी असुभ बिचार॥१८२॥

घर से चलते समय यदि कुत्ता कान फटफटा दे, तो बुरा है। सामने से एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण और चार क्षत्रिय और नौ स्त्रियाँ आयें तो भड्डरी कहते हैं कि अशुभ है।

चलत समय नेउरा मिलि जाय। बाम भाग चारा चखु खाय॥
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समझहु भाय॥ १८३॥

प्रयाण करते समय यदि नेवला मिल जाय, नीलकंठ बाईं तरफ़ चारा खा रहा हो, दाहिने ओर कौवा हो, तो मनोरथ को सिद्ध समझो।

लोमा फिरि फिरि दरस दिखावे। बायें ते दहिने मृग आवै॥
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावैं। सगरे काज सिद्ध होइ जावैं॥ १८४॥

लोमड़ी बारबार दिखाई पड़े, हरिण बायें से दाहिने को जायँ, तो भड्डरी कहते हैं कि कार्य सिद्ध होगा।

भैंसि पाँच खट स्वान। एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान। चलत मिलैं मति करौ पयान॥ १८५॥

यदि चलने के समय पाँच भैंसे, छः कुत्ते, एक बैल, एक बकरा, तीन गायें और सात हाथी मिलें, तो रुक जाना चाहिये।

सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि से दूरि निकट से निकट, समझौ फल भरपूर॥ १८६॥

शुभ और अशुभ शकुन दूर हों, तो फल को दूर समझना चाहिये, निकट हों तो निकट।

नारि सुहागिन जल घट लावै, दधि मछली जो सनमुख आवै॥
सनमुख धेनु पिआवै बाछा। यही सगुन है सब से आछा॥ १८७॥

सौभाग्यवती स्त्री पानी से भरा हुआ घड़ा लाती हो, या सामने से दही और मछली आती हो, या गाय बछड़े को पिला रही हो, तो शगुन सबसे अच्छा है।

रबिदिन बास चमार घर, ससि दिन नाई गेह ॥
मंगल दिन काछी भवन, बुध दिन रजक सनेह ॥
गुरु दिन ब्राह्मण के बसै, भृगु दिन वैश्य मँझार ॥
सनि दिन बेस्वा के बसै, भड्डर कहैं बिचार ॥ १८८ ॥

भड्डरी कहते हैं कि रविवार को चमार के घर, सोमवार को नाई के घर, मंगल को काछी के घर, बुध को धोबी के घर, बृहस्पति को ब्राह्मण के घर, शुक्रवार को वैश्य के घर और शनिवार को वेश्या के घर प्रस्थान रखना चाहिये।

सनमुख छींक लड़ाई भाखै। पीठि पाछिली सुख अभिलाखै ॥
छींक दाहिनी धन को नासै। बाम छींक सुख सदा प्रकासै ॥
ऊँची छींक महा सुभकारी। नीची छींक महा भयकारी ॥
अपनी छींक महा दुखदाई। कह भड्डर जोसी समझाई ॥
अपनी छींक राम बन गयऊ। सीता हरन तुरतै भयऊ ॥१८९॥

सामने छींक होगी, तो लड़ाई होगी। पीठ पीछे की छींक सुख देगी। दाहिने ओर की छींक धन का नाश करती है। बाईं ओर की छींक सदा सुख देनेवाली है। ज़ोर की छींक शुभ करनेवाली है और हलकी छींक भय उत्पन्न करनेवाली है। अपनी छींक बड़ी ही दुःखदायिनी है। भड्डरी कहते हैं कि रामचन्द्र अपनी छींक के साथ बन गये थे, परिणाम यह हुआ कि तुरन्त ही सीता का हरण हुआ।

सिर पर गिरै राज सुख पावै। औ ललाट ऐश्वर्यहिं आवै ॥
कंठ मिलावै पिय को लाई। काँधे पड़े बिजय दरसाई ॥
जुगल कान औ जुगल भुजाहू। गोधा गिरे होय धन लाहू ॥
हाथन ऊपर जो कहुँ गिरई। सम्पति सकल गेह में धरई ॥
निश्चय पीठ परै सुख पावै। परे काँख पिय बंधु मिलावै ॥
कटि के परै वस्त्र बहुरंगा। गुदा परे मिल मित्र अभंगा ॥
जुगल जाँघ पर आनि जो परई। धन गन सकल मनोरथ भरई ॥

परे जाँघ पर होइ निरोगी। परब परे तन जीव वियोगी॥
या विधि पल्ली सरट विचारा। कह्यो भड्डरी जोतिस सारा॥१६०॥

छिपकली और गिरगिट यदि सिर पर गिरें, तो राजसुख मिले। ललाट पर पड़ें, तो ऐश्वर्य मिले। कंठ पर पड़ें, तो प्रियजन से भेंट हो। कंधे पर पड़े, तो विजय प्राप्त हो। दोनों कानों और दोनों भुजाओं पर पड़ें, तो धन का लाभ हो। यदि हाथों पर गिरें, तो धन घर में आवे। पीठ पर पड़े, तो निश्चय सुख मिले। काँख पर पड़े, तो प्रिय-बन्धु में भेंट हो। कटि पर पड़े तो रंगबिरंगे वस्त्र मिलें। गुदा पर पड़े, तो सच्चा मित्र मिले। यदि दोनों जाँघों पर पड़े, तो धन आदि के सब मनोरथ पूरे हों। एक जाँघ पर पड़े, तो मनुष्य नीरोगी होगा। यदि पर्व के दिन गिरे, तो शरीर और जीव का वियोग होगा। इस प्रकार छिपकली और गिरगिट का विचार भड्डरी ने ज्योतिष का सार लेकर कहा है।

स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर।
तौ निज कारज भंग, अतिही कुसगुन जानिये॥ १६१॥

यदि यात्रा के समय कुत्ता अपना शरीर फरफराये या भूमि पर लोटता दिखाई दे, तो बड़ा अशकुन समझना चाहिये। कार्य की हानि अवश्य होगी।

सूके सोमे बुद्धे बाम। यहि स्वर लंका जीते राम॥
जो स्वर चले सोई पग दीजै। काहे क पंडित पत्रा लीजै॥१६२॥

शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को बायें स्वर में काम प्रारम्भ करने से सिद्ध होता है। राम ने इसी स्वर में लंका जीती थी। बाँया स्वर चले, तो बाँया पैर आगे रखना चाहिये। दाहिना चले, तो दाहिन पैर। इससे कार्य सिद्ध होगा। पञ्चाङ्ग में विचार करने की क्या आवश्यकता है?

पुरुब गधूली पश्चिम प्रात। उत्तर दुपहर दक्खिन रात॥
का करै भद्रा का दगसूल। कहै भड्डर सब चकनाचूर॥ १६३॥

पूर्व दिशा में यात्रा करनी हो, तो गोधूली (संध्या) के समय; पश्चिम जाना हो, तो प्रातःकाल; उत्तर जाना हो तो दोपहर को, और दक्खिन जाना हो, तो रात में घर से निकलना चाहिये। भड्डरी कहते हैं कि इस प्रकार चलने से भद्रा और दिशाशूल क्या कर सकेंगे? सब चकनाचूर हो जायँगे।

राजपूताने में भड्डली की कहावतें

सूरज तेज सतेज, आड बोले अनयाली।
मही माट गल जाय, पवन फिर बैठे छाली ॥
कीड़ी मेलै इंड, चिड़ी रेत में नहावै।
काँसो कामन दौड़, आभ लीलो रंग आवै ॥
डेडरो डहक बाड़ा चढ़ै, बिसहर चढ़ बैठै बड़ाँ।
पाँडिया जोतिस झूठा पड़ै, घन बरसै इतरा गुणाँ ॥ १ ॥

यदि धूप की तेज़ी बढ़ जाय, बत्तक चिल्लाने लगे, घी पिघल जाय, बकरी हवा के रुख पर पीठ करके बैठे, चींटियाँ अंडे लेकर चलें, गौरैया धूल में नहाय, काँसे का रंग फीका पड़ जाय, आकाश रंग गहरा नीला हो जाय, मेढक काँटों की बाड़ में घुस जायँ और साँप वृक्ष के ऊपर चढ़कर बैठे, तो घनी वर्षा होगी। ज्योतिषी का कथन झूठा हो सकता है, पर ये लक्षण मिथ्या नहीं हो सकते।

ईसानी। बिसानी ॥ २ ॥

ईशान कोन में यदि बिजली चमके, तो पैदावार अच्छी होगी।

अगस्त ऊगा। मेह पूगा ॥ ३ ॥

अगस्त तारा उदय होने पर बरसात का अंत समझना चाहिये।

तुलसीदास ने भी कहा है:—

उदित अगस्त पंथ जल सोखा। जिमि लोभहिं सोखै संतोषा ॥

परभाते मेह डंबरा, साँजे सीला बाव।
डंक कहै हे भड्डली, काला तणा सुभाव ॥ ४ ॥

डंक भड्डुली से कहता है कि यदि प्रातःकाल मेघ भागे जा रहे हों और शाम को ठंडी हवा चले, तो समझना चाहिये कि अकाल पड़ेगा।

ऊगन्तेरो माछलो, अथँव तेरी मोग।
डंक कहै हे भड्डली, नदियाँ चढ़सी गोग ॥ ५ ॥

यदि प्रातःकाल इन्द्रधनुष हो और संध्या को सूर्य की किरणें लाल दिखाई पड़े, तो समझना चाहिये कि नदियों में बाढ़ आयेगी।

आभा राता । मेह माता ॥ ६ ॥

आकाश लाल हो, तो वर्षा बहुत हो।

आभा पीला । मेह सीला ॥ ७ ॥

आकाश पीला हो, तो वर्षा कम हो।

दुश्मन की किरपा बुरी, भली मित्र की त्रास।
आड़ंग कर गरमी करै, जद बरसन की आस ॥ ८ ॥

शत्रु की कृपा की अपेक्षा मित्र की डाट-डपट अच्छी है। जब कड़ाके की गरमी पड़ती है और पसीना नहीं सूखता, तब वर्षा की आशा होती है।

अगस्त ऊगा मेह न मंडे । जो मंडे तो धार न खंडे ॥ ९ ॥

अगस्त के उदय होने पर वर्षा होती ही नहीं। और यदि होती है, तो मूसलधार होती है।

सवारो गाजियो, नै सापुरस रो बोलियो—एल्यो नहीं जाय ॥ १० ॥

सबेरे का गरजना और सत्पुरुष का बचन निष्फल नहीं जाता।

पानी पाला पादसा, उत्तर सूँ आवै ॥ ११ ॥

पानी, पाला और बादशाह उत्तर ही से आया करते हैं।

परभाते मेह डंबरा, दोफाराँ तपंत।
रातू तारा निरमला, चेला करो गछंत ॥ १२ ॥

प्रातःकाल मेघ दौड़े, दोपहर को धूप कड़ी हो और रात को निर्मल आकाश में तारे दिखाई पड़ें, तो अकाल पड़ेगा। वहाँ से जल्दी चल देना चाहिये।

घन जायाँ कुल मेहनो, घन बूँठा कण हाण ॥ १३ ॥

कन्या की अधिकता कुटुम्ब की हानि करती है और अधिक वर्षा अन्न का।

झिंझलियाँ बोलै रात निमाई। छालो बाडाँ बेस छिकाई॥
गोहाँ राग करै गरणाई। जोराँ मेह मोराँ अजगाई॥ १४॥

यदि रात भर झींगुर बोले, बकरी बाड़ के पास बैठकर छींके, गोह ज़ोर से आवाज़ करे और मोर बोले, तो वर्षा होगी।

भल भल बके पपइयों बाणी। कूँपल कैर तणी कमलाणी॥
ज तहल तो ऊगे रबि जाणी। पहराँ माँय अवसरे पाणी॥ १५॥

यदि पपीहा चारोंओर पी-पी रटता हुआ फिरे, कैर (एक वृक्ष) की ताज़ी कोंपल कुम्हला जाय, और सूर्योदय के समय बड़ी कड़ी धूप हो, तो समझना चाहिये कि पहर भर अन्दर वर्षा होगी।

नाडी जल ह्वै तातो न्हाली। थिर करवै नीलो रँग थाली॥
चहक बैठ सिरे चूँचाली। काँठल बँधे उतर दिस काली॥ १६॥

यदि तालाब का जल गरम हो जाय, काँसे की थाली नीली पड़ जाय और पनडुब्बी पेड़ पर बैठकर बोले, तो उत्तर दिशा से काली घटा आयेगी।

जिण दिन नीली बले जवासो। माँडे राड साँपरी मासो॥
बादल रहे रातरा बासी। तो जाणो चौकस मेह आसी॥ १७॥

यदि हरा जवासा जल जाय, बिल्लियाँ लड़ें और रात के बादल सबेरे तक रहें, तो समझना चाहिये कि वर्षा अवश्य आयेगी।

बिरछाँ चढ़े किरकाँट बिराजे। स्याह सफेत लाल रँग साजे॥
बिजनस पवन सूरियो बाजे। घड़ी पलक माँहे मेह गाजे॥ १८॥

यदि गिरगिट पेड़ पर बैठकर काला-सफेद या लाल रंग धारण करे और वायु उत्तर पश्चिम से चले, तो घड़ी दो घड़ी में वर्षा आयेगी।

ऊँचो नाग चढ़ै तर ओडे। दिस पिछमाँण बादला दोड़े॥
सारस चढ़ असमान सजोडे। तो नदियाँ ढाहा जल तोड़े॥ १९॥

यदि साँप पेड़ की चोटी पर चढ़े, मेघ पश्चिम दिशा को दौड़े और सारसों के जोड़े आकाश में उड़ें, तो नदी का जल किनारे को तोड़ कर बहेगा।

ऊमस कर घृत माठ जमावै। ईंडा कीड़ी बाहर लावै॥
नीर बिना चिड़िया रज न्हावै। मेह बरसे घर माँह न मावै॥ २०॥

यदि गर्मी से घी पिघल जाय, चींटियाँ अपना अंडा बाहर निकालें और चिड़ियाँ रेत में नहायें, तो इतना पानी बरसेगा कि घर में नहीं समायगा।

जटा बधे बड़री जद जाँणाँ। बादल तीतर पंख बखाणाँ॥
अवस नील रँग है असमाणाँ। घण बरसे जल रो घमसाणाँ॥ २१॥

जब बरगद की जटा बढ़ने लगे, बादल का रंग तीतर के पंख की तरह हो जाय, और आकाश का रंग गहरा नीला हो जाय, तब घमासान वर्षा होगी।

गले अमल गुलरी ह्वै गारी। रवि सिसरे दोली कुंडारी॥
सुरपत धनख करै बिध सारी। एरापत मघवा असवारी॥ २२॥

यदि अफीम गलने लगे, गुड़ में पानी छूटने लगे, सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर कुण्डल हो, इन्द्रधनुष पूरा दिखाई दे, तो इन्द्र ऐरावत की सवारी पर आयेगा।

पवन गिरी छूटै परवाई। ऊठे घटा छटा चढ़ आई॥
सारो नाज करै सरसाई। धर गिर छोलाँ इन्द्र धपाई॥ २३॥

यदि पूर्व से हवा चले, बिजली की चमक के साथ बादल चढ़े तथा नाज हरा होने लगे, तो भूमि और पर्वत को इन्द्र पानी से अघा देंगे।

चैत चिड़पड़ा। सावन निरमला॥ २४॥

यदि चैत्र में छोटी-छोटी बूँदें गिरे, तो सावन में वर्षा बिल्कुल न होगी।

जेठा मूँगा। सता सूँगा॥ २५॥

यदि जेठ में अन्न महँगा हो, तो वर्ष भर सस्ता ही रहेगा।

चैत मास नै पख अँधियारा। आठम चौदस दो दिन सारा॥
जिण दिस बादल जिण दिस मेह। जिण दिस निरमल जिण दिस खेह॥२६॥

चैत्र के कृष्णपक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को जिस दिशा में बादल होंगे, उस दिशा में बरसात में वर्षा अच्छी होगी, और जिस दिशा में बादल न होंगे, उस दिशा में धूल उड़ेगी।

चैत मास उजियाले पाख। नव दिन बीज लुकोई राख॥
आठम नम नीरत कर जाय। जाँ बरसे जाँ दुरभख हाय॥ २७॥

चैत्र शुक्ल में प्रतिपदा से नवमी तक यदि बिजली न चमके, अष्टमी और नवमी को ख़ास तौर पर देखना चाहिये तो जहाँ वर्षा हो, वहाँ अकाल पड़ेगा।

चैत मास जो बीज लुकोवै। धुर बैसाखाँ केसू धोवै॥ २८॥

यदि चैत्र में बिजली न चमके, तो आषाढ़ बदी में वृष्टि हो।

पाठान्तर—केसू = टेसू।

जेठा अंत बिगाड़िया, पूनम नै पड़वा॥ २९॥

यदि जेठ को पूर्णिमा और आषाढ़ को प्रतिपदा को छींटे पड़े, तो लक्षण अच्छा नहीं।

जेठ बीती पहली पड़वा, जो अम्बर धरहड़ै।
असाढ़ सावन जाय कोरो, भादरवे बिरखा करै॥ ३०॥

आषाढ़ की प्रतिपदा को यदि बादल गरजे या वर्षा हो, तो आषाढ़ और सावन सूखे जायँगे और भादों में वर्षा होगी।

आसाढ़ाँ धुर अष्टमा, [illegible] छाय।
चार मास चवतो रहै, जिउ भाँडे रै राय॥ ३१॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को चंद्रोदय के समय यदि बादल हों, तो फूटी हाँड़ी की तरह वे चारो महीने चूते रहेंगे।

आसाढ़ै सुद नौमी, घन बादल घन बीज।
कोठा खरे खँखेर दो, राखो बलद ने बीज॥ ३२॥

आषाढ़ सुदी नवमी को यदि बादल घना हो और खूब बिजली चमकती हो, तो ज़माना अच्छा होगा। कोठिला ख़ाली कर दो। सिर्फ बोने के लिये बीज और बैल रक्खो।

आसाढ़ै सुद नवमी, नै बादल नै बीज।
हल फाड़ो ईंधन करो, बैठा चाबो बीज ॥ ३३ ॥

आषाढ़ सुदी नवमी को यदि बादल और बिजली न हो, तो हल को तोड़कर ईंधन कर लो, और बैठे-बैठे बीज को चबा जाओ। क्योंकि वर्षा नहीं होगी।

सावण पहली पंचमी, मेह न माँडे आल।
पीउ पधारो मालवे, मैं जासाँ मोसाल ॥ ३४ ॥

सावन बदी पंचमी तक यदि बादल बरसना प्रारम्भ न करे, तो हे पति! तुम मालवे चले जाना, मैं अपने नैहर चली जाऊँगी। क्योंकि अकाल पड़ेगा।

सावण बदी एकादसी, तीन नखत्तर जोय ॥
कृतिका होवे किरवरो, रोहन होय सुगाल ॥
टुक यक आवै मिरगलो, पड़े अचिन्त्यौ काल ॥ ३५ ॥

सावन बदी एकादशी को तीन नक्षत्र देखो—यदि कृत्तिका हो, तो वर्षा मामूली हो; रोहिणी हो, तो सुकाल हो; और यदि मृगसिरा हो, तो ऐसा अकाल पड़ेगा, किसी ने सोचा भी नहीं होगा।

सावण पहले पाख में, जे तिथ ऊणी जाय।
कैयक कैयक देस में, टाबर बेचै माय ॥ ३६ ॥

सावन के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि टूट जाय, तो किसी-किसी देश में ऐसा अकाल पड़ेगा कि माताएँ अपने बच्चे बेचेंगी।

सावण पहली पंचमी, झीनी छाँट पड़ै।
डंक कहै हे भड्डली, सफलाँ रूख फलै ॥ ३७ ॥

यदि सावन बदी पंचमी को छींटें पड़े, तो डंक भड्डली से कहते हैं कि वृष्टि अच्छी होगी और वृक्षों में फल आयेंगे।

सावण पहिली पंचमी, जो बाजे बहु बाय।
काल पड़ै सहु देस में, मिनख मिनख नै खाय ॥ ३८ ॥

सावन बदी पंचमी को यदि गहरी हवा चले, तो देश भर में ऐसा अकाल पड़ेगा कि आदमी को आदमी खा जायगा।

आसोजाँ रा मेहड़ा, दोय बात बिनास।
बोरड़ियाँ बोर नहिँ, बिणयाँ नहीं कपास ॥ ३६ ॥

आश्विन में यदि वर्षा हो, तो दो चीजों की हानि होगी—बेर की झाड़ियों में बेर नहीं लगेंगे और कपास में रुई न लगेगी।

आसवाणी। भागवाणी ॥ ४० ॥

आश्विन में वर्षा भाग्यवानों के यहाँ होती है।

सासू जितरै सासरो, आसू जितरै मेह ॥ ४१ ॥

जब तक सास जीती रहती है, तब तक ससुराल का सुख है। इसी प्रकार आस्विन तक वर्षा की आशा रहती है।

काती। सब साथी ॥ ४२ ॥

कार्तिक सब फ़सलें साथ पकती हैं।

दीवाली रा दीया दीठा। काचर बोर मतीरा मीठा ॥ ४३ ॥

दिवाली का दिया दिखाई देने तक कचरी, बेर और तरबूज़ मीठे हो जाते हैं।

काती रो मेह, कटक बराबर ॥ ४४ ॥

कार्तिक की वर्षा खेती के लिये वैसी ही हानिकारक हैं, जैसी सेना।

मिँगसर बद वा सुद मँहीं, आधे पोह उरे।
धँवरा धुंध मचाय दे, तो समियो होय सिरे ॥ ४५ ॥

अगहन के कृष्ण या शुक्लपक्ष में या पौष के पहले पक्ष में यदि प्रातःकाल धुधँला हो, तो ज़माना अच्छा होगा।

मिँगसर बद वा सुद महीं, आधे पोह उरे।
धुँवर न भीजे धूल तो, करसण काह करे ॥ ४६ ॥

अगहन बदी या सुदी में या पौष बदी में मिट्टी ओस से गीली न हो, तो भूमि क्यों बोई जाय? अर्थात् उपज अच्छी न होगी।

पोह सबिंभल पेखजे, चैत निरमल चंद।
डंक कहै हे भड्डली, मण हूता अन मंद॥ ४७॥

पौष में यदि गहरे बादल दिखाई पड़े और चैत्र में चन्द्रमा स्वच्छ दिखाई पड़े, तो डंक भड्डली से कहता है कि अन्न रुपये के एक मन से भी सस्ता हो जायगा।

बरसे भरणी। छोड़े परणी॥ ४८॥

यदि भरणी नक्षत्र में बरसात हो, तो परिणीता (विवाहिता स्त्री) को छोड़ना पड़ेगा। अर्थात् विदेश जाना पड़ेगा।

किरती एक जबूकड़ो, ओगन सह गलिया॥ ४९॥

कृत्तिका नक्षत्र (९ से २२ मई तक) की बिजली की एक चमक भी पहले के सब अपशकुनों का नाश कर देती है।

रोहन रेली। रुपया री अधेली॥ ५०॥

रोहिणी में वर्षा हो, तो फ़सल रुपये की अठन्नी भर रह जायगी।

पहली रोहन जल हरै, दूजी बहोतर खाय।
तीजी रोहन तिण हरै, चौथी समन्दर जाय॥ ५१॥

यदि पहली रोहिणी में वर्षा हो, तो अकाल पड़े; दूसरी में बहत्तर दिन तक सूखा पड़े; तीसरी में घास न उगे और चौथी में मूसलधार वर्षा हो।

रोहन तपै नै मिरगला बाजै। अदरा मैं अनचीतियो गाजै॥५२॥

रोहिणी में कड़ाके की गरमी पड़े, मृगशिरा में आँधी चले, तो आर्द्रा में मेघ ख़ूब गरजेगा।

रोहन बाजै मृगला तपै। राजा जूझै परजा खपै॥५३॥

यदि रोहिणी नक्षत्र में आँधी चले और मृगशिरा में खूब धूप हो, तो राजा लोग लड़ेंगे और प्रजा का नाश होगा।

मिरगा बाव न बाजियो, रोहन तपी न जेठ।
केनै बाँधो झूँपड़ो, बैठो बड़लै हेठ॥ ५४॥

यदि मृगशिरा में हवा न चले, और जेठ में रोहिणी नक्षत्र में कड़ाके की धूप न हुई, तो झोपड़ा क्यों बनाते हो ? बरगद के नीचे बैठ जाओ। अर्थात् अकाल पड़ने से परदेश जाना होगा।

द्वै मूसा द्वै कातरा, द्वै टीडी द्वै ताव।
दोयाँ री बादी जल हरै, द्वै बीसर द्वै बाव ॥ ५५ ॥

यदि मृगशिरा के प्रथम दो दिनों में हवा न चले, तो चूहे पैदा हों। तीसरे चौथे दिन हवा न चले, तो गुबरीले पैदा हों। पाँचवें छठें दिन हवा न चले, तो टीड़ी पैदा हों। सातवें आठवें दिन हवा न चले, तो ज्वर फैले। नवें दसवें हवा न चले, तो वर्षा कम हो। ग्यारहवें बारहवें हवा न चले, तो ज़हरीले कीड़े पैदा हों, और तेरहवें चौदहवें हवा न चले तो खूब आँधी चले।

पहली आद टपूकड़ै, मासाँ पाखाँ मेह ॥ ५६ ॥

आर्द्रा में हवा चले, त., .पड़ी डाँवाडोल हो जाय। अर्थात् अकाल पड़े और घर छोड़ना पड़े।

आदरा बाजै बाय। झूँपड़ी जोला खाय ॥ ५७ ॥

आर्द्रा में एक बार भी वर्षा हो जाय, तो झट (किसान) प्रसन्न हो जाय।

एक आदरयो हाथ लग जाय, पछै तो जाट राजी ॥ ५८ ॥

अरद्रा में वर्षा हो, तो गड्ढे पानी से भर जायँगे। पुनर्वसु में बरसे, तो तालाब भर जाय और यदि पुष्य में न बरसे, तो फिर कठिनता से बरसेग।

आदरा भरै खाबड़ा, पुनरबसु भरै तलाव।
नै बरस्यो पुखै, तो बरसही घणा दुखै ॥ ५९ ॥

अश्लेषा में वर्षा हो, तो वैद्यों के घर बधाई बजे अर्थात् रोग खूब फैलेगा।

असलेखा बूँठा, बैदा घरे बधावना ॥ ६० ॥

मघा में या तो वर्षा होगी, या मेघ चले जायँगे।

मघा माचन्त मेहा। नहीं तो उड़ंत खेहा ॥ ६१ ॥
मघा मेह माचन्त। नहीं तो गच्छन्त ॥ ६२ ॥

भादरवे जग रेलसी, जे छट अनुराधा होय।
डंक कहै हे भड्डली, चिन्त करो न कोय ॥ ६३ ॥

यदि भादों बदी छठ को अनुराधा हो, तो वर्षा खूब होगी। डंक कहता है—हे भड्डरी ! चिन्ता न करो।

आखा रोहन बायरी, राखी स्रवन न होय।
पोही मूल न होय तौ, महि डोलन्ती जोय ॥ ६४ ॥

अक्षय तृतीया को रोहिणी न हो, रक्षाबन्धन पर श्रवण न हो और पौष की पूर्णिमा को मूल न हो, तो पृथ्वी काँप उठेगी।

चित्रा दीपक चेतवे, स्वाते गोबरधन्न।
डंक कहै हे भड्डली, अथग नीपजे अन्न ॥ ६५ ॥

यदि चित्र में दीवाली हो, और गोवर्धन-पूजा के समय स्वाती हो, तो डंक भड्डली से कहता है कि अन्न की उपज बहुत होगी।

स्वाते दीपक प्रजले, बिसाखा पूजे गाय।
लाख गयन्दा धड़ पड़े, या साख निश्फल जाय ॥ ६६ ॥

यदि दीवाली स्वाती नक्षत्र में हो, और दूसरे दिन गोपूजन के समय बिशाखा हो, तो लड़ाई होगी; जिसमें लाखों हाथी मारे जायँगे, या फ़सल निष्फल होगी।

दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गुरु मूर।
डंक कहै हे भड्डली, निपजे सातो तूर ॥ ६७ ॥

कार्तिक सुदी पंचमी को यदि मूल नक्षत्र में सोमवार; शुक्रवार या बृहस्पतिवार पड़े, तो डंक भड्डली से कहता है कि सातो प्रकार के अन्न उत्पन्न होंगे।

काती पूनम दिन कृति, चंद मथाने जोय।
आगे पीछे दाहिने, जिणसूँ निश्चय होय ॥
आगे है तो अन्न नहीं, पासे है तो ईत ॥
पीठ हुयाँ परजा सुखी, निस दिन रहो नचीत ॥ ६८-६६ ॥

कार्तिक की पूर्णमासी को देखो कि चन्द्रमा का मध्य किस तरफ़ है, आगे है या पीछे या दाहिने ? उनसे निश्चय होगा कि यदि आगे होगा, तो अन्न नहीं उपजेगा; दाहिने होगा तो ईतिभीति* होगी और यदि पीछे होगा तो प्रजा सुखी रहेगी और रात-दिन निश्चिन्त रहना।

माहे मंगल जेठ रवि, भादरवै सनि होय।
डंक कहै हे भड्डली, बिरल जीवै कोय ॥ ७० ॥

यदि माघ में पाँच मंगल, जेठ में पाँच रविवार और भादों में पाँच शनिवार पड़े, तो डंक भड्डुली से कहता है कि ऐसा अकाल पड़ेगा शायद ही कोई जीवित बचे।

सावण मास सूरियो बाजै, भादरवे परवाई।
आसोजाँ में नमदरी बाजै, काती साख सवाई ॥ ७१ ॥

यदि श्रावण में उत्तर पश्चिम की हवा चले, भादों में पूर्वा, और कुवार में पश्चिम की हवा चले, तो कार्तिक में फ़सल अच्छी हो।

पवन बाजै पूरियो । हालो हलावकोम पूरियो ॥ ७२ ॥

यदि उत्तर पश्चिम की हवा चले, तो किसान को नई ज़मीन में हल नहीं चलाना चाहिये। क्योंकि वर्षा जल्दी ही आनेवाली है।

आवे जेठ अमावस्या, रवि आथिम तो जोय।
बोज जो चंदो ऊगसी, तो साख भरेला सोय।
उत्तर होय तो अति भलो, दक्खन होय दुकाल।
रवि माथे ससि आथये, तो आधो एक सुगाल ॥ ७३ ॥

जेठ की अमावस्या को जहाँ सूर्योदय होता है, उस स्थान को याद रक्खो। यदि जेठ सुदी द्वितीया का चन्द्रमा उस स्थान से उत्तर में हो, तो ज़माना अच्छा होगा; दक्खिन में होगा, तो अकाल पड़ेगा; और यदि उसी स्थान पर होगा, तो समय साधरण होगा।

* अति वृष्टि अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी, पक्षी और राज-विद्रोह, ये छः ईति कहलाते हैं।

आसाड़े धुर अष्टमी, चन्द उगन्तो जोय।
कालो वै तो करवरो, धोलो वै तो सुगाल ॥
जे चंदो निर्मल हवै, तो पड़ै अचिन्त्यां काल ॥ ७४ ॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को उदय होते हुए चन्द्रमा की ओर देखो, यदि वह काले बादलों में हो, तो समय साधारण होगा; यदि फे सफेद बादलों में होगा, तो समय अच्छा होगा; और यदि बादल नहीं होगा, तो निश्चय अकाल पड़ेगा।

सोमाँ सुकराँ सुरगुराँ, जे चन्दो ऊगन्त।
डंक कहै हे भड्डली, जल थल एक करन्त ॥ ७५ ॥

यदि आषाढ़ में चन्द्रमा सोमवार, शुक्रवार या गुरुवार को उदय हो, तो डंक भड्डली से कहता है कि ऐसी वृष्टि होगी कि जल और थल एक हो जायँगे।

सावन तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ़ ॥ ७६ ॥

द्वितिया का चन्द्रमा सावन में सोता हुआ अच्छा है और आषाढ़ में खड़ा हुआ।

मंगल रथ आगे हुवै, लारे हुवै जो भान।
आरँभिया यूँही रहै, ठाली रवै निवाण ॥ ७७ ॥

यदि सूर्य के आगे मंगल हो, तो सारी आशाओं पर पानी फिर जायगा और तालाब सूखे पड़े रहेंगे।

सोमाँ सुकराँ बुध गुराँ, पुरबाँ धनुस तणै।
भीजै चौथै देहरै, समदर ठेल भरै ॥ ७८ ॥

यदि सोम, शुक्र, बुध और गुरुवार को पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष तने, तो उसके तीसरे-चौथे दिन इतनी वृष्टि होगी कि समुद्र भर जायगा।

बिना तिलक का पाँडिया, बिना पुरुष की नार।
बायें भले न दायें, सीन्याँ सर्प सुनार ॥ ७९ ॥

यात्रा के समय बिना तिलक का पंडित, विधवा स्त्री, दर्जी, साँप और सुनार न दाहिने अच्छे हैं, न बायें।

रार करो तो बोलो आड़ा। कृषी करो तो रक्खो गाड़ा ॥ ८० ॥

यदि झगड़ा करना हो, तो ऐंड़ी-बैंड़ी बात बोलो। और यदि खेती करना हो, तो गाड़ी रक्खो।

जो तेरे कंता धन घना, गाड़ी कर ले दो।
जो तेरे कंता धन नहीं, कालर बाड़ी बो ॥ ८१ ॥

हे स्वामी! यदि तुम्हारे पास अधिक धन हो, तो दो गाड़ियाँ बनवा लो और यदि धन न हो, तो बाड़ी में कपास बो दो।

अनुक्रमणिका

राजपूताने में

भड्डुली की कहावतों की अनुक्रमणिका

———

कोष

अग्नि कोन—दक्षिण-पूर्व
अँकोर—घूस, रिश्वत
अगसर—पहले-पहल
अँतरे खोंतरे—कभी-कभी, दूसरे-तीसरे
असाढ़ी—अषाढ़ की
असलेखा—अश्लेषा नक्षत्र
अघा—तृप्त करो या तृप्त कर देता है
अमहा—बैल की एक क़िस्म
अगरा—अग्रिम
अलगीरा—अलग
अलूटा—अटूट
अबोनो—बिना बोया हुआ
असनी—अश्विनी नक्षत्र
अखै तीज—अक्षय तृतीया
अम्बर—आकाश
अलसेठ—कष्ट, संकट, दबाव
अगन्ते—अग्रिम
अछनाधार—मूसलाधार
असार—व्यर्थ
अम्बा—आम
अरसी—अलसी, तीसी
आछी—अच्छी
आछा—अच्छा
थष्आयुष—आयु योग
आदित—आदित्य, सूर्य
आर, आड़—आरी, किनारा
इकलन्त—अकेला
ईसाना—ईशान कोण, पूर्वोत्तर
उढ़रि—विषय-भोग के लिये किसी के साथ भाग जाना
उलिया कुलिया—छोटी-छोटी क्यारियाँ
उञ्झी—उलझी
उफनायँ—उफान आये
उपाठ—पक जाता है
उखेरा—ऊख, ईख
उन्हारी—गर्मी
उदन्त—जिस बैल के दूध के दाँत न टूटे हों
उगाह—चूहे का रोग, प्लेग
ऊखम—ऊष्मा, गर्मी
एक बाह—अकेला, एकान्त
ओर—अंत
ओसावै—नाज और भूसा अलग करे
ओद—गीलापन
ओहरी—उधर

औंआ-बौआ—बे सिर-पैर का
करकसा—कर्कशा, झगड़ालू
कुतवा मूतनि—त्रह खाट, जिस पर कुत्ते मूत जाते हों
कुड़हल—ऊसर, बञ्जर, खोदी हुई, हल से जोती हुई
कठौती—काठ की थाली
काछी—एक जाति का नाम है
कोरी—एक जाति का नाम है
कुसहे—कुशवाली।
कसी—फावड़ा
काकुन—एक अन्न का नाम है
कनाई—ईख में एक रोग लग जाना
कँडिथा—कूँड़ा (घड़ा);
कुरिया—खेत रखाने के लिये झोपड़ा
कछौटी—बैल की पूँछ के नीचे का भाग
कजरा—काली आँखोंवाला बैल
कोर—कूँड़; हल की लीक
करवा—घड़ा
कुलखनी—कुलक्षिणी
कज्जली—कृष्णपक्ष
काहे—क्यों
कसाये—ईख को बोने से पहले पानी में छोड़ रखने से
कोरा—खाली
करन्त—करता है
करवरो—साधारण
खटिया—छोटी खाट
खुनुस—क्रोध
खेजड़ी—मारवाड़ का एक वृक्ष
खसम—पति
गइल—गये; नष्ट हो गये
गिहथिन—गृहस्थिनी; गृहस्थी के धंधो में निपुण स्त्री
गागल—खूब रसदार
गरियार—ढीठ
गादर—सुस्त बैल
गाहा—अनेक बार पानी देना
गोड़ाई—कुदाल से खेत गोड़ना
गड़रा—एक प्रकार की घास
गधैला—चना का रोग
गाहे—बार बार पानी देने से
गाजै—गरजे; अच्छा हो
गाँड़ा—ईख
गाभिन—गर्भिणी
गेरुई—एक रोग, जो जौ-गेहूँ में लगता है
गोई—बैलों की जोड़ी
गाँधी—एक रोग. जो धान में लगता है
गुड़सा—एक कीड़ा, जिसे रींवाँ कहते हैं
गरदा—धूल

गोरड़ी—ईख
गयंदा—हाथी
गया—नष्ट हुआ
घोर—घोड़ा
घापघूप—घेरना
घोंची—वह बैल जिसकी सींगें आगे को झुकी हुई हों
चीन—चीनी
चमकुल—चटक-मटक वाली
चिक—चिकवा, बकरी का मांस बेंचने वाला
चून—चूना, आटा
चकवर—चँकौड़ा
चिरैया—चित्रा नक्षत्र
चैना—एक अन्न
चास—खाद
चरका—धान का रोग
चापर—नष्ट, बरबाद
चोखो—अच्छी
चाक चहोड़े—चारों ओर
चरबन—चबेना
छज्जे—द्वार के ऊपर बढ़ी हुई छत
छीदी-छीछी—बिड़र, दूर-दूर
छिया बिया—नष्ट
छीपा—रँगरेज
छेड़ी—बकरी
छद्दर—छः दाँतों वाला बैल
जड़हन—जाड़े में पैदा होने वाला धान
जार—पर-स्त्री-गामी पुरुष
जुट्टी—नील का डंठल
जेठी—जेठ का
जबहा—बैल की एक जाति
जल्ला—जल
जासी—ज्योतिषी
ज्येष्ठा—एक नक्षत्र
जोन्हरी—मक्का; कहीं-कहीं ज्वार को भी जोन्हरी कहते हैं।
झिलँगा—ढीली-ढाली खाट
झंपा—फलों का गुच्छा
झर—बरसात
झार—झड़ी; राशि
झूरा—सूखा
टोवै—टटोले
टोटा—घाटा
ठकुर क—ठाकुर का
ठूँट—कटी हुई डालों वाला पेड़
ठरै—सरदी सहे
डंडै—डंड कसरत
डंडा—छड़ी
डाँस—मच्छर
डग-मग—लड़खड़ाते हुये
डँगरवा—बैल
डेहरी पारै—कोठिला तैयार कर

ढिलढिल—ढीला-ढाला
तारो—वाला
तेकर—उसका
ताका—दो तरहकी आँखो वाला, ऐंचाताना
तेकी—उसकी
तूर—अन्न
तुसार—पाला
तरियान—लटकी हुई
तकें—देखते हैं; प्रशंसा क ।
थाहे—कम गहरा, जहाँ बहाव न हो
दुलकन—दुलकी चलने वाला
दरवि—द्रव्य, धन
दलिद्दर—दरिद्रता
दिवला—दिया
दलाये—खोंटने से
दायाँ—दाहिना; जौ गेहूँ के डंठल को बैलों से कुचलवाना
दाना—दोस्त
देव-उठान—देवोत्थान एकाद श. कार्तिक में होती है
दमोय—बैलों की एक किस्म
दो तौई—एक घर में दो तवे चढ़ने से
दमकन्त—चमकती है
दिखन्त—दिखाई पड़ती
दूंद—द्वंद, ऊधम
दाँय—भार
धना—धान
धिया—कन्या
धोरे—निकट
धी—कन्या
धौरा—सफेद
धुरंधर—बैल
पाड़ी—भैस का बच्चा
पुरखिन—गृह-कर्म में निपुण स्त्री
पुरवा—पूर्वा
पाँसा—खाद
पइया—वह धान, जिसमें चावल न हो
पँड़वा—भैंस का बच्चा
पौला—पैर में पहनने का एक खड़ाऊँ, जिसमें खूँटी के स्थान पर रस्सी लगी रहती है।
पकन्त—पकती है।
पैना—बैल हाँकने की सोंटी
पछम—पश्चिम की
पेड़ी—तना
पास—खाद
पेंडुरि—पिंडली
पेलन—ढकेलने वाला
पिरथी—पृथ्वी
पुगौना—पूर्णिमा को
पूगै—पूरा हुआ

फूट—पकी हुई ककड़ी
फूटे—फूटने से
फलाँगन—छलाँग
फुलवा—बैल की एक किस्म
फरका—छप्पर
बनिय क—बनिये का
बइद—वैद्य
बेसवा—वेश्या
बाछा—बछड़ा
बहुरिया—बहू, नई आई हुई स्त्री
बाबै—बाबा को
बाध—मूँज की रस्सी
बिया—बीज
बेकहल—ढाक के जड़ की छाल
बारी—एक जाति, फुलवाड़ी
बीन—चुनना
बगड़—घर
बिराने—पराये
बगौधा—पालतू बैल
बातल—बादी
बिसाहन—खरीदने
बारह बाट—छिन्न-भिन्न, व्यर्थ
बढ़वारी—वृद्धि
बराहे—सूअर से खोदी जाती हुई
बतास—हवा
बिड़र—दूर-दूर
बान—वाणिज्य, रंग
बाहे—हल से जोतना
बारे—लड़के
बाढ़—वृद्धि
बोउनिहा—बोनेवाला
बरदिया—बैलवाला
बिस्सा—बिस्वा
बर्र—ततैया
बरौठे—दालान में, ओसारे में
बौनी—बोआई
बाड़ी—खेत जिसमें शाक-सब्जी
बोई जाय; कपास
बड़हरा—कंडा जमा करने का घर
बरारी—दबी हुई रीढ़
बाव—हवा
बाँसड़—उभरी हुई रीढ़वाला बैल
बाड़ा—खेत के आस-पास काँटों
का घेरा
बाँड़ा—दक्षिण-पश्चिम की हवा
बिलखें—रोयें
बधावड़ा—बधाई
भुइयाँ—जमीन; खेत
भकुवा—मूर्ख, भोंदू
भड़ेहरि—बरतन-भाँड़ा
भाड़—एक कटीली झाड़ी, जिसे
भड़भड़ा कहते हैं।
भुंजी—भुजवा
भुसौला—भूसा रखने का घर

अमंत—घूमते हैं
भवा—हुआ
मइल—मैली, गंदी
महावट—महावृष्टि
मुँड़िया—साधू, स्वामी, सन्यासी
मही—मट्ठा; पृथ्वी
मरकना—मारने वाला
मूसर—मुशल
मसीना—उड़द
मरकनी—मर-मर करने वाली
मकुनी—मोटी रोटी
मेहरी—स्त्री
मेहरारू—स्त्री
मोरा—मोर
मघारै—शीत सहे
माँड़—भात का पानी
मँझार—में, बीच में
मुसरहा—डील लटका हुआ बैल, अथवा जिसकी पूँछ के बीच में दूसरे रंग के बालों का गुच्छा हो।
मेवाती—मेवात की
मकर—नीला और सफेद मिले हुए रंग का बैल
महुवा—लाल
मुतान—मूतने का स्थान
मोराये—ईख का रस निकालना
मठाथ—सुस्त पड़ जाय
मूर—मूली
मियनी—बैल की एक क़िस्म
महातुरी—बहुत आतुर होकर
माहूँ—सरसों का रोग
रामबाँस—एक सिरे पर नोकदार लोहा जड़ा हुआ बाँस, जिसे कुएँ में पानी निकालने के लिये धँसाते हैं।
राड़ी—एक घास
रड़है—एक प्रकार की घास
रेंड—डंठल
रिरिआय—प्रसन्न होता है
रोड़ा—गुड़ का टुकड़ा
रहुआ—किसान
रिच्छ—नक्षत्र, तारे
रेवतड़ी—रेवती नक्षत्र
रात्यो—लाल
रजक—धोबी
रूसा—अड़ूसा
लोमा—लोमड़ी
लीबर—कीचड़
लबार—झूठा
लवै—जोड़ा खाय
लरजै—लज्जित हो
लोधा—गोह
लोक—रोटी

वाकी—उसकी
विडरे—दूर-दूर
विदेसड़ो—परदेश
सखरच—शाहख़र्च, फ़जूलख़र्च
सुथना—पाजामा
सतवंती—सदाचारिणी
सतवार—पतिव्रता
सँघातो—साथी
ससुरवन—ससुरों को
साख—खेती
सेती—से
सावनी—सावन की फ़सल
सैल—जुये को बैल के गले में रोक रखने वाली लकड़ी
सारै—सड़ावे
सरसी—रसवाली
सरौती—एक प्रकार की ईख
सलसी—निकट, पास-पास
स्यारी—जाड़े की फ़सल
सकाली—प्रातःकाल
समथर—समतल ज़मीन
सार—वह स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हैं।
सरवा—स्रुवा, कटोरा, चम्मच
सहना—शाहंशाह
सौंख—बैल के माथे पर बालों का एक चक्र, जो शंख की तरह होता है।
सुलखनी—अच्छे लक्षणों वाली
समेती—सहित
सरसे—नम, गीली ज़मीन
सुरही—गाय
संजूत—संयुक्त, सहित
सगलै—सब
संक्रमै—संक्रान्ति हो
सारथी—गृहस्थी चलाने वाला
हीन—तेज से रहित
हाटे—बाज़ार में
हँसुआ—हँसनेवाला
हारी—हलवाहा
हरनी—एक तारा
हरामी—नीच
हेठी—कम
हड़हवा—दक्षिण-पश्चिम की हवा
हरियाने—हरियाना प्रांत
होसी—होगा
हाली—जल्दी।

—❀—